[महात्मा श्री श्री भवानीशङ्कर जी, (उरई) के पत्र, सत्संग पश्चात् दिए गए प्रवचन तथा प्रकाशित साहित्य से संगृहीत संकलन]

श्री शंकर संदेशम्

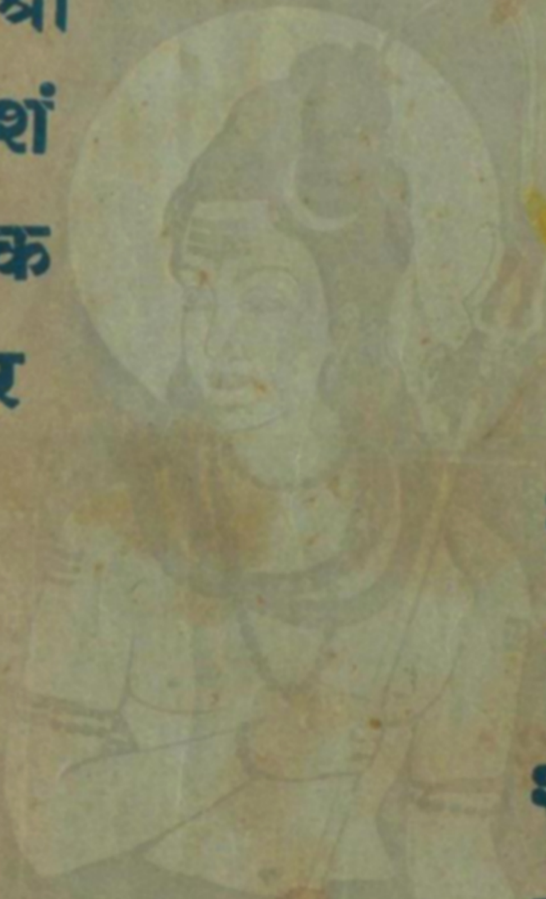

संपादक :
डॉ० बी० बी० लाल

श्री शंकर संदेशम्

परम संत महात्मा श्रीश्री भवानी शङ्कर जी

(श्रीश्री चच्चा जी सा०) के पत्रों,

सत्संग पश्चात् दिये गये

प्रवचनों तथा प्रकाशनों

से

साभार संकलित

प्रकाशन

संकलयिता :

डा० बी. बी. लाल

१०९/अ, रामनगर, उरई

२१ प्रतियाँ निः शुल्क–

श्री श्री चच्चा जी सा० उरई के शताब्दी वर्ष १९९०-९१ के उपलक्ष्य में फतेहगढ़ ईस्टर भण्डारे के अवसर पर तथा उरई में निर्वाण दिवस के अवसर पर श्री श्री लाला जी सा० के लिए २ माला तथा श्रीश्रीचच्चा जी सा० के (उरई) के लिए २ माला "ॐ शान्ति" जाप कर प्राप्त करें।

महाशिवरात्रि | भेंट
२३ फरवरी १९९० | भाव व प्रेम सहित पाठ

आपके सहयोग रूप १०/- मात्र

प्रकाशक :

श्रीश्री महात्मा भवानीशंकर स्मारक ट्रस्ट
सद्गुरुधाम, कोंच नाका, उरई

समाकलित प्रकाशक :

नक्शमुमरा प्रतिष्ठान
१/४५, महात्मा रामचन्द्र मार्ग, फतेहगढ़

(C) श्रीश्री महात्मा भवानीशंकर स्मारक ट्रस्ट उरई

मुद्रक :

श्री शक्ति प्रिण्टर्स
७०, प्रेमनगर, उरई

ॐ नमः शंकराय ॐ नमः शंकराय ॐ नमः शंकराय ॐ नमः शंकराय

ॐ न मः शं क रा य ॐ न मः शं क रा य ॐ न मः शं क रा य

ॐ न मः शं क रा य ॐ न मः शं क रा य ॐ न मः शं क रा य

अथ

श्री शंकर संदेशम्

शर्वः सर्वगतः शिवः
शशिनिभः
श्री शङ्करः
पातु माम्

शङ्कर जगत वंद्य जगदीसा ।
सुर मुनि नर सब नावत सीसा ॥

ईश्वर की विशेष कृपा तथा दया और पूर्वजन्म के महान पुण्य प्रताप से सन्त की शरणागति प्राप्त होती है ।

[श्रीश्री चच्चा जी सा०]

ॐ प्रियं शङ्करम् सर्वनाथं भजामि ।

नमामि नमामि नमामि नमामि ॥

ॐ गुं गुरवे नमः

ॐ ॐ

श्री ॐ श्री

रा श्री

म गु शं

च क

न्द्रा रुः रा

य य

नमः

ॐ गुरुः शरणम्

ॐ शङ्कर शङ्कर पाहि माम् ।

ॐ शङ्कर शङ्कर रक्ष माम् ॥

पाहि माम् पाहि माम् ।

रक्ष माम् रक्ष माम् ॥

ईश्वर का मिलना भी उतना कठिन नहीं, जितना सद्गुरु का मिलना है। सद्गुरु की प्राप्ति हो जाने पर ईश्वर सहज ही में मिल जाता है।

(श्रीश्री चच्चा जी सा०)

अनुक्रमणिका

पूर्वशिष्ट :– पृ० ०१ से ५२

शिष्ट :– पृ० १ से १३२

१. संत	—	पृ० १ से १६
२. साधक	—	पृ० १८ से ५०
३. साधना	—	पृ० ५१ से ९०
४. पूजा विधि	—	पृ० ९१ से १०४
५. पूजा विधान	—	पृ० १०५ से ११९
६. लोक व्यवहार	—	पृ० १२० से १३२

परिशिष्ट : ७. पृ० ०१ से ०४०/०५१

अनुक्रमणिका पूर्वशिष्ट- पृ० ०१ से ५२

०.० पूर्वशिष्ट ०.० पृ० ०३ अथ श्री शंङ्कुर संदेशम्

पृ० ०४.३- भूल चूक ०४.४- एक पत्र समर्पण ०५ त्वदीयं वस्तु, ०६ चित्र श्रीश्री लालाजी सा०, ०७ चित्र श्रीश्री चच्चा जी सा०, ०८ ईश्वर प्राप्ति का निश्चित मार्ग, ०१० श्री गुरु स्तोत्र, ०१२ श्री गुरुअष्टकम्, ०१३ प्रकाशकीय, ०१४ सम्पादकीय, ०१७ आभार एव परिचय, ०२२विशेष आभार,०२३ श्रीश्री चच्चाजी सा०की साधकजीवन की संक्षिप्त आत्मकथा, ०४२ श्रीश्री चच्चा जी की साधनगत विशेषतायें, ०४५ श्रीश्री चच्चा जी सा० की आध्यात्मिक ऊँचाई, ०५० श्रीश्री गुरुमाता, अम्मा जी,

शिष्ट प्रकरण १ से ६,

१ संत- पृ १ से १७, १.१ ईश्वर रूप १.२ सर्वकालीन सजीव सचेतन १.३मानसिक उपस्थिति एव शिष्य रक्षा, १.४परदुःखकातर १.५ प्रेमावतार

२. साधक- पृ० १८ से ५० २.१ विश्वासी २.१.१ गुरुखोज, १.२ गुरु में विश्वास, १.३ ईश्वर में विश्वास, १.४ साधन में विश्वास ।

२.२ सदाचारी २.१साधक का सदाचार २.१.१सदासर्वदा गुरु आज्ञापालन, १.२ हर हाल में अपने स्वरूप मे स्थित, १.३ याद में कमी विश्वासघात १.४ शुभ चिन्तन १.५ मनकी जान लेना १.६ हरहाल में ईश्वर को धन्यवाद १.६.१ जन्म मृत्यु की परिस्थितियां, १.६.२ अन्य परिस्थितियां १.७ राजी व रजा १.७.१. ईश्वर की मर्जी मुताबिक चलना १.७.२ परिणाम ईश्वर भरोसे छोड़ना ।

२.२– साधन सदाचार अभ्यास की शक्ति का सदाचार में प्रकट होना २.३ साधक सस्कारी २.४ साधक आधारी व प्रेमी २.५ साधक निरहंकारी एवं सेवाभावी

३. संत साधना– पृ० ५१ से ९०–संत साधना – ३.३.१ वैज्ञानिक मानसिक शोध प्रकिया १.२ प्रारम्भिक अभ्यास ३.२ सन्त साधना स्वरूप ३.३ साधना-तीन अंग १- अभ्यास २. सेवा ३. बुद्धि प्रयोग ३.४ जाप ३.५ साधन सातत्य एवं नित्यता ३.६ सत्संग, अभ्यास की हालतें ३.७ साधन मार्ग की कठिनाई एवं बाधायें १- कठिनता २- मन की बाधाओं का निराकरण १. बचने का उपाय २. दृढ़ता के साथ अभ्यास साधन, ३-पूजा में मन न लगना, ४-विचारों के आवेग में प्रार्थना ५. नींद आना ३.८ भूतकाल के बाधक विचारों का निराकरण ३.९ जिज्ञासा समाधान ३.१० साधन प्रभाव १- सदाचार की प्राप्ति २- पाप से सुरक्षा ३- शरीर की सफाई ४- बुरी आदतों का छूटना ५- यथोचित् व्यवहार।

४ पूजा विधि- पृ० ९१ से १०४ १- त्रिकाल सध्या २- पूजापूर्व संकल्प, पर धन्यवाद ३- डायरी रखना ४-प्रायश्चित एवं परिताप ५-रोना

५ पूजा विधान- पृ० १०५ से ११९

१- पाठ विधान २- दान विधान ३- शान्ति विधान ४- ॐ शान्ति जाप विधान ५- कल्याण मार्ग में कष्ट विधान

६. लोक व्यवहार : पृ० १२० से १३२

६.० लोकाचार सम्मान १- स्त्री के साथ व्यवहार २- परिवार के साथ व्यवहार ३- अमित्र के व्यवहार ४- तीर्थस्थल का आचार ५- शरीर रक्षा एवं हृदय मन्दिर की रक्षा ६- चिन्ता न करना ७- अन्य परामर्श

७. परिशिष्ट– पृ० °१ से °४०–५१

७.१ श्री श्री चच्चाजी सा०के पत्र क–जिज्ञासु के नाम पत्र ख–सौभाग्यवती के नाम पत्र ग– हस्तलेख में ३ पत्र ७.२ जन्म पत्री ७.३ प्रिय गीत भजन आदि ७.४ अन्य संदर्भ च- एक शिष्यएक गुरु छ- श्री गुरु ध्यान साधना ज– गीता रामायण पाठ का एक आधुनिक संदर्भ ७.५ चित्रावली,

इति शङ्कुर संदेशम्

भूल–चूक : क्षमा याचना

मुद्रण– उरई में पुस्तक मुद्रण का कार्य नहीं होता। इस प्रयास में इसी कारण मुद्रण संबंधी भूल-चूकें है। क्षमा प्रार्थी हैं।

साधारणतया ं नहीं आया है 'संत' का 'सत' रूप मिलेगा किन्तु संदर्भ से बोध गम्य हो जायगा। 'ब' के स्थान में ब भी मिलेगा।

अन्य उल्लेखनीय है –

	पृ०		छपा है	छपना चाहिये था
शिष्ट	३७	अन्तिम वचन वाक्य	भगवान की भत्ति	भगवान की भक्ति
	४०	"	खब	खूब
	४८	अन्तिम पूर्व वाक्य	मुलाकात	मुकामात
	४९	" "	हयप्रभ	हतप्रभ
		टीप में	देती है	देता है

संदर्भ–

परिशिष्टः– पृ० ०२९ – 'माला' के रचियता श्रीमान् चच्चा जी सा० के प्रिय प्रेमीजन श्री डा० प्रकाशचन्द्र जी वर्मा हैं।

–पृ० ०३२ 'एक शिष्य एक गुरु' के संदर्भगत मंत्र पं० श्री हरिश्चन्द्र जी चतुर्वेदी रामाश्रम सुदामंज फतेहगढ़ से साभार प्राप्त हुये हैं।

संकोच– पूर्वशिष्ट के अन्तर्गत 'आभार एवं परिचय' में इस सिलसिले की महान विभूतियाँ परम पुरुष (र. अ.) परम संत महात्मा समर्थ सद्गुरु श्री श्री लाला जी सा०, उनके प्रातः स्मरणीय जगदवंद्य सद्गुरुदेव और उनके समर्थ सद्गुरु गुरु भाई (र. अ. जनाब किब्ला मौलवी सा० भोगांव) का परिचय तथा अन्य आचार्यगण किंवा श्री श्री चच्चा जी सा० का भी परिचय, अति संक्षिप्त एवं अपर्याप्त दिया जा सका है। यह संपादक के लिए अति संकोच, मनसा क्षोभ एवं कष्ट का कारण है। एतदर्थ इन पतित पावन बुजुर्गों तथा श्रद्धास्पद सुधी पाठकों से हार्दिक क्षमा प्रार्थना है। दया व कृपाकर क्षमा करें।

एक पत्र : समर्पण

श्रद्धास्पद प्रेमी पाठकों की सेवा में

श्रीश्री गुरुदेव का एक प्रेमीजन को
प्रेषित पत्र ।

ॐ भवानीशंकर सत्संग आश्रय
४१/२ चन्द्रनगर, उरई

श्री··· ··· ···जी, १-१०-६९

सादर प्रणाम ।

मैंने आपका पत्र सावधानी के साथ पढ़ा ।
आप कुछ दिन तक ईश्वर की कृपा का इन्तजार कीजिये ।
ईश्वर सर्वशक्तिमान है ।
मैं ईश्वर से आपके कल्याण के लिये प्रार्थना करता हूं ।
ईश्वर आपकी सहायता करें ।

"कृपा का इन्तजार" कितना सुखद और स्वीकृत सूचक है । ईश्वर ने बड़ी दया और कृपाकर हमें अपना लिया । हमारे ऊपर उनकी दया होगी, हमारा कल्याण होगा, यह अटूट विश्वास हमें ये इन्तजार करने के सुखद वचन दिला रहे हैं । उस सूची में हमारा भी नाम है, यह क्या कम सौभाग्य की बात है । इसप्रकार की आशापूर्ण, अवश्यम्भावी जीवननियति ही तो हमारा जीवन लक्ष्य है । इन्तजार तो आजन्म तक करने के लिये तैयार हैं यह तो "कुछ दिनों" की ही बात है और साफ है कि इसी जन्म में यह शुभ अवसर मिलने वाला है । कैसा परम सौभाग्य है। ईश्वर कृपा करें और यह सौभाग्य प्रत्येक प्रेमी भाई का हो । हे कृपानिधान ! ऐसा ही हो ! ! ऐसा ही हो...!

ॐ नमः शंकराय

ॐ प्रियं शंकरम् सर्वनाथम् भजामि
नमामि नमामि नमामि नमामि

त्वदीयं वस्तु

हे सद्गुरुदेव !

यह आपकी वस्तु आपको ही सादर एवं साभार समर्पित ।

(त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये)

नतमस्तक,
अकिंचन सेवक
(ब्रजवासी)

सप्रेम भेंट

श्री श्री···
···

के करकमलों में
सादर भेंट ।

·····························
·····························

(भेंटकर्ता)

दादा गुरु परमसन्त महात्मा समर्थ सदगुरु
श्री श्री रामचन्द्रजी (लालाजी)
महारज, फतेहगढ़

परमसन्त महात्मा श्री श्री भवानीशङ्कर जी (चच्चाजी) महाराज, उरई

उपदेशसार : दादा गुरु परमसंत महात्मा समर्थ सद्गुरु
श्री श्री रामचन्द्रजी (लालाजी) महाराज, फतेहगढ़

ईश्वर प्राप्ति का निश्चित मार्ग–

१– जिक्र खफी (दिल का जाप) किया करें ।

२– नाजिन्स, गैर आदमी और गैर- सोहबत के नक्शों से दिल को साफ रखें ।

३– परमात्मा के सिवाय किसी की तरफ तवज्जो न करें ।

४– यकसूई और एकाग्रता के साथ दिल हाजिर करने का पक्का इरादा करलें ।

५– सत् और मालिक की तरफ उनसियत और लगाव हासिल करें ।

६– अपने आपको मेंटकर उसीमें महव और लय होजावें ।

७– इसी काम में अपने को मेंट दें ।
यही सबसे ज्यादा नजदीक रास्ता और असल पद पर पहुंचने का यकीनी ज़रिया है ।

Gist of Teachings of the Spiritual Master

H. H. Shri Lala Jee Maharaj

(SAMARTH SADGURU PARAM SANT MAHATMA RAM CHANDRA JEE)

1- Engage yourself in practice of listening to every heart-beat, super imposing there with the nomenclature of the Lord (AJPA JAP).

2- Keep your heart pure, away from the corrupting influences of undesirable things and undesirable company.

3- Always keep attuned to the lord, your attention should never for a moment deviating there from.

4- Concentrate your attention on the heart and keep your heart centred in the Lord.

5- Endeavour to attain kin-ship and attachment to the Eternal truth, the Lord of universe.

6- Gradually erase the identity of self, try to merge in, and attain oneness with God.

7- Sacrifice life in this grand endeavour.
This alone is the easiest and most certain short-cut to attain eternal bliss.

श्री सद्गुरुदेवस्तोत्र

(मानसिक षोडशोपचार X पश्चात् प्रस्तुत्य।)

ॐ भवानीशंकरौ(सद्गुरुदेवं) वन्दे श्रद्धाविश्वास रूपिणौ(रूपिणम्)
याभ्यां विनानपश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम्।

ॐ वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुम् शंकररूपिणम्
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वंद्यते।

ॐ चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरंजनम्
नादबिन्दुकलातीतं तस्मै श्री गुरवे नमः।

ॐ गुरुर् ब्रह्मा गुरुर् विष्णुः गुरुर् देवो महेश्वरः
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः

ॐ स्थावरं जंगमं व्याप्तंयेन कृत्स्नं चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः

ॐ चिद्रूपेण परिव्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः

ॐ सर्वश्रुति शिरोरत्न समुद्भासितमूर्तये
वेदान्तांबुज सूर्याय तस्मै श्री गुरवे नमः

ॐ ज्ञानशक्ति समारूढस्तत्वमाला विभूषितः
भुक्तिमुक्ति प्रदाता च तस्मै श्री गुरवे नमः

X ॐ आहवामि; ॐ आसनं समर्पयामि, ॐ पादयो पाद्यं सम. ॐ हस्तयो अर्घ्यम् सम० ॐ आचमनीयं जलं सम०, ॐ गंधम् सम० ॐ माल्यां सम०, ॐ धूपंआघ्रापयामि ॐ दीपं दर्शयामि ॐ नैवेद्यं सम० ॐ ऋतुफलं सम०, ॐ पुंगीफल एलालवंग सहितं ताम्बूलं सम० ॐ आचमनीयं जलं सम० ॐ दक्षिणाद्रव्यं (स्वरूपं आत्मानं समर्पयामि)

(समर्पयामि के पश्चात् 'ॐ गं गुरवेनमः' लगाना है)

ॐ अनेक जन्म संप्राप्त कर्मेंधन विदाहिनं
आत्मज्ञानाग्निदानेन तस्मै श्री गुरवे नमः।

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाकया
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।

ॐ अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।

ॐ शोषणं भव सिंधोश्च प्रापण सारसंपदः
यस्य पादोदकं सम्यक् तस्मै श्री गुरवे नमः।

ॐ न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोधिकं तपः
तत्व ज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः।

ॐ मन्नाथः श्री जगन्नाथो मदगुरु श्री जगदगुरुः
मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः।

ॐ गुरुरादिरनादिश्च गुरुश्च पर दैवतम्
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः।

ॐ अखण्डानन्द बोधाय शिष्य संताप हारिणे
सच्चिदानन्दरूपाय रामाय श्री गुरवे नमः।

ॐ ध्यानमूलं गुरुर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोर् पदम्
मंत्रमूलं गुरोः वाक्यं मोक्षमूलं गुरोकृपा।

ॐ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिः
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम्
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरोर्तं नमामि।

गुरुः अष्टकम

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं यशश्चारुचित्रं धनं मेरुतुल्यं
गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किम् ततः किम् ततः किम

कलत्रं धनं पुत्र पौत्रादि सर्वं गृहे बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम्
गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किम्, ततः किम्,

षडंगादि वेदो मुखे शास्त्रविद्या कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति
गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किम्, ततः किम्,

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः सदाचार वृत्तेषु भक्तो च अन्यः
गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किम्, ततः किम्,

क्षमामण्डले भूपभूपाल वृन्दैः सदा सेवितं यस्य पादारविन्दं
गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किम् ततः किम्

यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापात् जगद् वस्तु करे गत् प्रसादात्
गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किम्, ततः किम्,

न भोगे न योगे न वाजि राजौ न कान्ता मुखे नैव वित्तेषु चित्तम्
गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किम्, ततःकिम्,

अरण्येन वा स्वस्य गेहे न कार्यं न देही मने वर्ततेमेऽत्वनर्घ्ये
गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किम्, ततः किम्,

अनर्घ्याणिरत्नानिमुक्तानि सम्यक् समालिंगिताकामिनीयामिनेषु
गुरोरंघ्रि पद्मे मनश्चेन्न लग्नं ततः किम्, ततः किम्,

गुरोरष्टकं या पठेतपुण्यदेही यतिर् भूपतिर् ब्रह्मचारी च गेही
लभेत् वांछितार्थं पदं ब्रह्मसंज्ञं गुरोरुक्त वाक्ये मनो यस्य लग्नं
ततः किम्, ततः किम्, ततः किम्, ततः किम्,

अंघ्रे—चरण [अंघ्रि पद्मे—चरण कमल]

-स्तोत्र तथा अष्टकम् का संकलन संत साधक श्री प्रयागसिंह जी
[दादा जी] पटेल नगर उरई से साभार प्राप्त

प्रकाशकीय

डा० कृष्णजी
एम.ए., पी-एच.डी., डी.लिट्.
अध्यक्ष,

ब्रह्मलीन महात्मा श्री श्री भवानीशंकर स्मारक ट्रस्ट
गुरु धाम, कौंच नाका, उरई.

ट्रस्ट की सत्साहित्य प्रकाशन योजना के अन्तर्गत प्रकाशित 'श्री शंकर संदेशम्' यद्यपि प्रथम पुष्प है किन्तु अपनी उपादेयता एवं महत्ता की दृष्टि से यह एक विशेष उल्लेखनीय कृति है। परम संत महात्मा भवानीशंकरजी ने अपने प्रेमीजनों का जिस चिन्ता लगन और तत्परता से समय-समय पर आध्यात्मिक पथ प्रदर्शन किया है तथा उनकी उन्नति की हार्दिक कामना की है, वही इस प्रकाशन का मूल संवेद्य है। इसी कारण इसकी भाव-भूमि में उन महामना की साक्षात् प्रतीति एवं उपस्थिति अनुभव की जा सकती है। साधना का यही लक्ष्य एवं मार्ग है। हमें विश्वास है कि उनके पत्रों एवं वचनों के बार-बार पाठ से आज भी यथोचित पथ प्रदर्शन सुलभ होगा।

डा० बी०बी० लाल, उन मर्यादा पुरुष के निकट प्रेमीजनों में रहे हैं, उनपर यह कृपा हुई है कि उनके माध्यम से यह प्रकाशन प्रस्तुत एवं प्रकाशित हो रहा है।

पत्रों के सकलन में कठिनाई रही है और उससे भी अधिक कठिनाई उनके वर्गीकृत करने में रही होगी। फिर भी उपलब्ध सामग्री का यह सारग्राही तथा साधना सम्बन्धी सभी पक्षों पर प्रकाश डालने वाला रूप सभी प्रकार प्रशंस्य है। हमें विश्वास है कि उनके प्रेमी-जनों ही नहीं प्रत्युत सभी अन्य साधकों के लिये भी यह प्रकाशन उनकी आध्यात्मिक उन्नति में सहायक होगा। प्रभु ऐसी ही कृपा करें।

—कृष्णजी

संपादकीय

प्रस्तुत प्रकाशन यों तो पत्र, प्रवचन और प्रकाशित सामग्री का संकलन है किन्तु इसमें पत्र प्रमुख रूप से लिये गये हैं। परमसंत महात्मा श्री श्री भवानीशंकरजी के पत्र साधकों तथा सामान्य पाठकों के लिये बड़े उपयोगी हैं। पत्र साहित्य अन्यथा भी बड़ा लोकप्रिय होता है। उसमें लेखक की आत्मीयता का **पुट होने के कारण श्रेय के साथ प्रेय की आकांक्षा भी पूरी होती है।** महात्माजी के पत्र उनके प्रेमीजनों के लिये मार्गदर्शक रहे हैं। समय-समय पर अनुभव की जाने वाली साधनगत कठिनाइयों का निराकरण इन पत्रों के द्वारा किया जाता था। इसप्रकार उनके पत्र साधन के व्यावहारिक पक्ष की प्रस्तुति में अपना महत्त्वपूर्ण योग देते हैं और इसप्रकार सर्वकालीन और सार्वजनीन होकर वर्तमान और भविष्य के लिये भी उतने ही उपयोगी हैं जितने भूतकाल के लिये थे। पत्रों में, संत, साधक, साधना, पूजा-विधि एवं विधान, लोक-व्यवहार आदि विषयों पर विचार व्यक्त किये गये हैं। इसप्रकार ये पत्र दीन और दुनियां **की चिन्ता करते हैं।**

श्री श्री महात्माजी को संतमत का क्रान्तिकारी युगपुरुष कहा जाना चाहिये। वह अपने शिष्यों को (जिन्हें वह अपने प्रेमी-जन कहते थे) अपने समर्थ सद्गुरुदेव के रूप में देखते थे। इसकी परिणति गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु के स्थान पर शिष्यपूजन में होती थी। वह अपने शिष्यों का विधिवत पूजन एवं चरण स्पर्श करते थे। गुरुपूर्णिमा की यह शिष्य पूजा जैसा क्रान्तिकारी कदम भूत एवं वर्तमान में ही नहीं भविष्य में भी कदाचित् ही किसी गुरु परम्परा के धर्म सम्प्रदाय में सम्भव हो सके।

श्री श्री महात्माजी हर समय अपने सद्गुरुदेव के ध्यान एवं स्वरूप में अवस्थित रहते थे। फलस्वरूप उनका भौतिक स्वरूप दिव्य स्वरूप में लीन होकर एक अद्भुत आकर्षण का केन्द्र बन गया था, जिससे हर समय दिव्यता विकीर्ण होती थी तथा जो उनके सम्पर्क में आता था उसका अनायास कल्याण हो जाता था। उनके स्वरूप का ध्यान आज भी उसी

प्रकार मंगलमय एवं कल्याणकारी है। उनके प्रयोग में आने वाली वस्तुयें जिस प्रकार दिव्य अनुभूति कराती हैं, उसी प्रकार उनके पत्र एवं चित्र। इनका नित्य पाठ करने की कदाचित् सभी पाठक आवश्यकता अनुभव करेंगे। इससे निश्चित ही साधन प्रगति में लाभ होगा।

पत्रों की गम्भीर अर्थसत्ता तथा विशेष सन्दर्भ एवं संवेद्य के प्रति संकेत करने की अपेक्षा समझते हुये टीप देने का दुःसाहस किंवा अपराध बन पड़ा है। इसके लिये श्री सद्गुरुदेव एवं पाठकगण क्षमा करेंगे। पत्रों के अन्यान्य विशेष संवेद्य होसकते हैं जिनकी ओर ध्यान आकृष्ट किये जाने की पाठकों से अपेक्षा एवं प्रार्थना है। वस्तुतः संतवचन को हृदयंगम करना आसान काम नहीं है। वह स्वयं जिसको अनुभव करादेवें, वही जान पाता है–"सोइ जानइ जेहि देउ जनाई"। श्री गुरुदेव के एक-एक शब्द का निश्चित एवं गूढ़ अर्थ होता है। मात्र शिष्टाचार के तौर पर कोई शब्द या बात नहीं लिखी जाती है। उनके शब्द मन्त्र रूप हैं जैसा कि उन्होंने एक पत्र में स्वयं कहा है "इन निर्देशों को मन्त्र रूप लें" (देखें ६.७)

उन्होंने, उदाहरणस्वरूप, पत्रों के प्रारम्भ में आशीष एवं अभिनन्दन के विभिन्न शब्द प्रयुक्त किये हैं। इनको बड़ी सावधानी से पढ़ना और मनन करना चाहिये। कतिपय सन्दर्भ अवलोकनीय हैं–"सादर प्रणाम", "ईश्वर कृपा करें" "ईश्वर विशेष कृपा करें", "परमात्मा गुरुदेव सदैव आपकी रक्षा करें", "ईश्वर आप पर दया व कृपा करें", "ईश्वर आपकी सहायता करें" (इस "करें" का भी विशेष अर्थ रहा है) इन आशीष वचनों से स्पष्ट है कि उन महात्मा ने हम जैसे दीन-हीन प्राणियों को कितना सम्मान दिया है। कितनी शुभेच्छायें एवं मंगल कामनायें की है। यह सब देखकर हृदय भर आता है। अपने आपको देखते हैं तो ग्लानि होने लगती है। उनकी सदाशयता तथा हमारे प्रति अपार प्रेम भाव और हमारी ओर से उदासीनता तथा विमुखता, कैसी विडम्बना है? ईश्वर कृपा करें और हमें श्री चरणों में सच्चा प्रेम प्राप्त हो।

प्रस्तुत प्रकाशन को विषय की दृष्टि से पूर्ण बनाने के लिये श्री श्री चच्चाजी सा० के झांसी निवास के सत्संग के पश्चात् दिये गये प्रवचनों तथा उनके अन्य प्रकाशनों के सन्दर्भों से साभार सम्पन्न किया गया है।

झाँसी सत्संग के प्रवचनों के नोट दिवंगत श्री रघुनाथ प्रसाद भार्गव लिया करते थे। वे उनकी कृपा से सुलभ हो गये थे। जिन अन्यान्य सन्त, महात्माओं, आचार्यों एवं महापुरुषों के उद्धरण लिये गये हैं, उनके हम हार्दिक आभारी हैं।

श्रीश्री लालाजी महाराज तथा श्रीमान् चच्चाजी महाराज (कानपुर) के वचन तो सत्कुलों के लिये गीता और उपनिषदों के वचनों के समान है। इसी सम्मान-समादर की दृष्टि से स्थान-स्थान पर उनके वचनों का सन्दर्भ दिया गया है। "सत्संग" के सम्बन्ध में तो श्रीश्री लालाजी सा० के एकलेख को अविकल रूप में देने का लोभ संवरण नहीं किया जा सका है। इस रूप में उनका आशीर्वाद इस प्रकाशन को मिलेगा, यह विनम्र भाव रहा है। मेरा परम सौभाग्य है कि एकबार मुझे श्री श्री गुरुदेव कानपुर ले गये थे और श्रीमान् चच्चाजी सा० (कानपुर) तथा श्री श्री दादाजी सा० (पूज्यपाद महात्मा ब्रजमोहनलाल जी) की सेवा में प्रस्तुत किया था। इस दृष्टि से इन दोनों महान आध्यात्मिक विभूतियों की दया व कृपा के लिये मेरी आकांक्षा तथा याचना मेरा सौभाग्य है। इस संकलन में जो दोष रह गये हैं, वे सम्पादक की अपनी अल्पज्ञता तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में अपनी असमर्थता के कारण हैं तथा एतदर्थ करबद्ध क्षमा प्रार्थना है। सुधी साधक कृपा कर मार्गदर्शन कर आगामी संस्करण को दोष रहित बनाने में सहयोग करेंगे। मेरी स्थिति तो यही है।

राम सौं बड़ो है कौन मो सौं कौन छोटो।
राम सौं खरो है कौन मो सौं कौन खोटो॥

दासानुदास

ब्रजवासी

दृष्टव्य—

परिशिष्ट में श्री श्री चच्चाजी सा० के हस्तलेख में लिखित ३ पत्र दो हिन्दी में, एक अंग्रेजी में दिये गये हैं। उनके अपने हस्तलेख को देखकर एकसुखद अनुभूति होती है, उनकी निकटता और समीपता का आभास होता है। उनकी जन्मकुण्डली भी परिशिष्ट में दी गई है।

हस्तलेख एवं जन्मकुण्डली के जानकार जिज्ञासुओं के अध्ययन के लिये यह रुचिकर सामग्री भी होगी।

आभार एवं परिचय

(इस सिलसिले से इतर पाठकों के लिये यह आवश्यक है कि इस संकलन के सन्दर्भों से उन्हें परिचित कराया जाये जिससे वे विषयवस्तु तथा सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में इस प्रकाशन का पूरा लाभ उठा सकें तथा "कौन है" ऐसी जिज्ञासाओं का स्वतः ही समाधान हो जाये।)

इस संकलन के संदर्भ एवं परिचय

पूज्यपाद श्री श्री लालाजी साहब
[परमसंत महात्मा श्री श्री रामचन्द्र जी (फतेहगढ़)]

परमसंत महात्मा समर्थ सद्गुरुदेव श्री श्री रामचन्द्रजी महाराज (फतेहगढ़) को नक्शबंदिया मुजद्दिदया मजहरिया सूफी सिलसिले के सिद्ध संत तथा आदर्श आचार्य हैं। उनके द्वारा इस सिलसिले का व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। आज पूरे देश में नक्शमुम, रामाश्रम सत्संग, सहजमार्ग नामोंसे उनके योगविद्या केअनेक प्रचार केन्द्रहैं; विदेशोंमें लगभग २० देशों में भी इसप्रकार के केन्द्र स्थापित हैं और सुचारु रूप से चल रहे हैं। इतनी बड़ी शिष्य परम्परा कदाचित् ही किसी और सम्प्रदाय की हो।

इस संकलन में उनके साभार सन्दर्भ—

दिव्य क्रान्ति की कहानी : प्रकाशक, रामाश्रम संस्थान, तलैयालेन, फतेहगढ़
श्री राम संदेश : प्रकाशक : आध्यात्मधारा, तलैयालेन, फतेहगढ़।

श्रीमान् चच्चाजी साहब (कानपुर)
[परमसंत महात्मा श्री श्री रघुवरदयाल जी (कानपुर)]

परमसंत महात्मा समर्थ सद्गुरुदेव श्रीश्री रघुवरदयालजी (कानपुर) श्री श्री लालाजी सा० के लघु सहोदर और गुरु भाई हैं। दोनों भाई रामभरत की भाँति अभिन्न हैं। श्री श्री लालाजी की भाँति आप भी उच्चकोटि के सिद्ध महापुरुष हैं।

इस संकलन में साभार सन्दर्भ—

श्री रघुवर चरितामृत एवं पीयूषवाणी : प्रकाशक : रघुवर आश्रम
५३७, आनन्दबाग पार्क, कानपुर।

श्री श्री चच्चाजी साहब

[परमसंत महात्मा श्री श्री भवानीशंकर जी (उरई)]

परमसंत महात्मा श्री सद्गुरुदेव श्री श्री भवानीशंकर जी (उरई) आपको भी आपके प्रेमी जन 'चच्चाजी' ही कहते हैं। इस संकलन में इन दोनों महापुरुषों के अलग-अलग सन्दर्भ इसप्रकार हैं—

श्रीमान् चच्चाजी सा० : परमसंत महात्मा श्रीश्री रघुवरदयालजी कानपुर
श्री श्री चच्चाजी सा० : परमसंत महात्मा श्रीश्री भवानीशंकरजी(उरई)

श्री श्री चच्चाजी सा० दोनों महापुरुषों, श्री श्री लालाजी सा० तथा श्रीमान् चच्चाजी (कानपुर) के प्रिय एवं प्रमुख शिष्यों में से हैं। दोनों समर्थ सद्गुरुओं ने श्री श्री चच्चाजी सा० को आचार्य एवं गुरुपदवी दी और सिलसिले के प्रचार-प्रसार के लिये आमंत्रित किया।

श्री श्री चच्चाजी सा० ने इस विद्या की वैज्ञानिक खोज की तथा उल्लेखनीय ऊँचाई प्राप्त की। उन्होंने साधना को भावप्रधान रूप देकर गुरुपूर्णिमा के अवसर पर गुरु के स्थान में शिष्य पूजा जैसे क्रान्तिकारी कदम उठाये। अपने सद्गुरुदेव श्रीश्री लालाजी सा० के नाम व रूपमें लीन होकर साधना का बाह्य रूप 'राममय' बना दिया। वह अपने गुरुदेव में इतने लीन रहते थे कि उनके स्वरूप में उनके गुरुदेव श्रीश्री लालाजी सा० के दर्शन होते थे जैसा कि श्रीमान् चच्चाजी सा० (कानपुर) उनके आने पर कहा करते थे... "तुम क्या आ जाते हो, साक्षात् लाला जी आ जाते हैं।" श्री श्री चच्चा जी सा० के अनेक चमत्कारों की कहानियाँ उनके शिष्यगण सुनाते हैं और उनकी सर्व व्यापकता तथा सर्व अकिंचनता के अलौकिक कार्यों से आज भी अभिभूत होते हैं।

इस संकलन में उनके सन्दर्भगत प्रकाशन—

"गृहचर्या में नर-नारी सहयोग" "गृहस्थ जीवन और सदाचार" अथवा "गृहचर्या के उपयोगी नियम" "नरहरि उपदेश"।

प्रकाशक : डा० कृष्णजी कृते श्री राधा मातेश्वरी सेवा समिति
सत्संग आश्रम, ५१/२ चन्द्रनगर, उरई।

—'सदाचार' मासिक पत्रिका जो दिसम्बर १९४८ से नव० १९५० तक प्रकाशित हुई।

श्री श्री पेशकार साहब

[परमसंत महात्मा श्री श्री प्रभुदयाल जी (कानपुर)]

परमसंत महात्मा सद्गुरुदेव श्री श्री प्रभुदयालजी पेशकार श्री श्री चच्चा जी साहब के अग्रज एवं गुरुभाई जिन्होंने श्रीश्री चच्चाजी साहब के समान आध्यात्मिक ऊँचाइयाँ प्राप्त कीं।

साभार संदर्भ : आत्मकथा : प्रकाशक रामरघुबर आश्रम,
५३७, आनन्दबागपार्क कानपुर

श्रीश्री चच्चाजी सा० (श्रीश्री भवानीशंकर जी की वंशावली)

श्रीमतां श्रीश्री रामदयाल जी	१—श्री श्री प्रभुदयाल जी	— कोई पुत्र नहीं
	२—श्रीश्री कालीचरन जी	— २ सुपुत्र २ सुपौत्र
	३—श्रीश्री भवानीशंकर जी	— ४ सुपुत्र ४ सुपौत्र
श्रीश्री कालीचरन जी	१—श्री कामेश्वरदयाल जी	—श्री प्रीसकुमार जी
	२—श्री रामेश्वरदयाल जी	—श्री कमलेशकुमारजी
श्रीश्री भवानीशंकरजी	१—श्री डा० जयदयालजी	—श्री संत जी
	२—श्री कृष्णदयाल जी	—श्री विवेकानन्द जी
	३—श्री स्वामी जी	—श्री केशव जी
	४—श्री डा० कृष्ण जी	—श्री संजीव जी

श्री बाबू जी साहब

[परमसंत महात्मा डा० श्यामलाल जी (गाजियाबाद)

श्री श्री चच्चाजी सा० के गुरु भाई, श्री श्री लालाजी के प्रिय प्रेमी-जन, जो अपनी सच्चाई, चक्रविद्या की विशेषज्ञता के लिए विख्यात महात्मा श्री दिनेशकुमार जी आपके शिष्य एवं प्राधिकृत आचार्य हैं।

आपके तीन सुपुत्र सर्व श्री डा० आर०के० सक्सेना, डा० वी०के० सक्सेना तथा डा० बी०के० सक्सेना भी प्राधिकृत आचार्य हैं। प्रस्तुत प्रकाशन में 'पूजाविधि' से साभार सन्दर्भ लिये गये हैं।

श्री ताऊजी साहब

(परमसंत महात्मा डा० श्रीकृष्ण लाल जी, सिकन्दराबाद)

श्री श्री चच्चा जी सा० के गुरु भाई श्रीश्री लाला जी साहब के प्रिय प्रेमीजन जो अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों और आकर्षक व्यक्तित्व के लिए विख्यात। श्री बाबूजीसा० से छोटे भाई के समान आदर्श स्नेह एवं सद्भाव रखने के कारण 'ताऊजी सा०' कहे जाते हैं। आपकी पुस्तक 'संतवचन' से साभार सन्दर्भ लिये गये हैं।

श्री डा० साहब

परमसंत महात्मा डा.चतुर्भुज सहायजी (रामाश्रम सत्संग मथुरा)

श्री श्री चच्चा जी सा० के गुरु भाई, श्री श्री लालाजी सा० के प्रिय प्रेमीजन। हिन्दी में सत्संग सम्बन्धी प्रचुर सामग्री के प्रणेता तथा संतमत के व्यापक प्रचारक। रामाश्रम सत्संग मथुरा से प्रकाशित 'साधन' पत्रिका से, साभार सन्दर्भ लिये गये हैं।

अन्य केवल शुभनाम संदर्भ

(मौलावी सा० र. अ. जनाब किब्ला हाजी, अब्दुलगनी सा०, भोगांव)

श्री श्री लाला जी सा० के गुरुदेव हुजूर महाराज सा०, र.अ. जनाब किब्ला फ़ज्ल अहमद खां सा० के गुरुभाई तथा अपनी आध्यात्मिक ऊंचाई और उपलब्धियों के लिए सुविख्यात।

बाबू जी सा०

[परमसंत महात्मा रामचन्द जी सा० शाहजहांपुर (श्री लाला जी सा० के नामराशि)]

श्रीश्री लालाजी सा० के प्रिय प्रमीजन जिन्होंने मिशन के प्रचार के लिये विशेष उल्लेखनीय कार्य किया। अंग्रेजी में प्रचुर साहित्य प्रकाशित कराया, विदेशों में कई केन्द्र स्थापित किये, शाहजहांपुर में भव्य साधना भवन का निर्माण कराया।

बड़े दद्दा

[परमसंत महात्मा ब्रजमोहनलाल जी]

परमसंत महात्मा श्रीमान् चच्चा जी सा० के सुपुत्र तथा श्रीश्री लाला जी सा० के परम प्रिय स्वजन। दोनों महापुरुषों की भाँति उच्चकोटि के महात्मा एवं तपस्वी संत।

श्रीश्री दिनेशकुमार जी

परमसंत समर्थ सद्गुरुदेव श्रीश्री लाला जी महाराज के पौत्र तथा

अधुना फतेहगढ़ केन्द्रीय नक्शबन्दिया संस्थान पीठ के पीठासीन अधिकारी हैं। आपने श्रीश्री लालाजी सा० के परम प्रिय शिष्य परमसंत महात्मा सद्गुरुदेव श्रीश्री डा० श्यामलाल जी (गाजियाबाद) से दीक्षा तथा गुरुपदवी के समस्त अधिकार प्राप्त किये हैं। संस्था के विकास तथा प्रेमीजनों की सेवा के प्रति समर्पित महापुरुष हैं।

अन्य प्रकाशन जिनसे साभार संदर्भ लिए गए हैं–

पुस्तक–

मेरा धर्म : महात्मा गांधी : नवजीवन प्रकाशन

बापू के पत्र : महात्मा गांधी : स० सा० म० प्रकाशन १९५७

मन की शक्तियां : स्वामी विवेकानन्द : श्रीरामकृष्ण आश्रम नागपुर।

मन : स्वामी बुधानन्द, अद्वैत आश्रम मायावती, पिथौरागढ़

चितशक्ति विलास : गुरुदेव सिद्धपीठ, गणेशपुरी (महाराष्ट्र)

पत्रिकायें–

अग्निशिखा : श्री अरविन्द सोसायटी पाण्डुचेरी

श्रीकृष्ण संदेश: रामाश्रम सत्संग सिकन्द्राराबाद

अनन्त बीथी : कानपुर

सत्यकथा : इलाहाबाद

हस्तलिखित पाण्डुलिपियां–

श्रीश्री चच्चा जी सा० के सुपुत्र प्रो० डा० कृष्णजी डी. लिट्. के निजी संग्रह से साभार उपलब्ध

: 'श्रीश्री चच्चा जी सा० के साधक जीवन की संक्षिप्त आत्मकथा'

: आध्यात्म चर्चा : साधक के प्रश्न और संत के उत्तर

: झांसी सत्संग के प्रवचन नोट्स जो झांसी में सत्संग के पश्चात् श्रीरघुनाथ प्रसाद भार्गव द्वारा प्रस्तुत किए गये थे।

विशेष आभार–

बि
शे
ष
आ
भा
र

श्री रामचन्द्राय नमः

श्री रामरघुबर रामरघुबर पाहिमाम्

श्री रामरघुबर रामरघुबर रक्षमाम्

प्रणति एवं श्रद्धासहित,

१– नक्शबंदिया मुज्जददिया मजहरिया रामचन्द्रइया प्रतिष्ठान १/४५ महात्मारामचन्द्रमार्ग फतेहगढ़ एवं उनके शोध व अध्ययन विभाग के प्रति जहाँ से श्रीश्री लालाजीसा०का साहित्य सुलभ हुआ है तथा जहां ईस्टर के वार्षिक भण्डारे के प्रवचन व टोलीचर्चाओं में विशेषकर उल्लेखनीय हैं पूज्यपाद महात्मा श्रीश्री ओंकारनाथ जी (भैयाजी) कानपुर के प्रवचन तथा पूज्यपाद महात्मा श्रीश्री सेवतीप्रसाद जी (मुख्तार सा०)कासगंज व पूज्यपाद महात्मा श्रीश्री डा० हरनारायण जी सक्सेना, महात्मा नरेन्द्रमोहनजी सक्सेना, महात्मा श्रीश्री दिनेश-कुमार जी सक्सेना की टोली चर्चाओं में विभिन्न शकाओं का समाधान हुआ है तथा इस प्रकाशन के टीप के विचार प्रभावित हुए हैं।

२– उन मौन एवं अप्रकट रहने के इच्छुक प्रेमीजनों के प्रति, जिन्होंने आग्रह पूर्वक प्रकाशन व्यय वहन किया है एवं इसके सकलन एव सपादन के लिये प्रोत्साहित किया है।

३– उन प्रेमीजनों के प्रति जिन्होंने कृपाकर अपने निजी पत्र सुलभ करायेहैं।

आशीर्वाद–

श्री महेशकुमार जोशी (दयानन्द वैदिक कालेज उरई) को, जो श्रीश्री चच्चा जी सा० के प्रिय प्रेमीजन हैं तथा जिन्होंने मुद्रण कार्य की सपूर्ण व्यवस्था बड़ी लगन और तत्परता से की है और प्रकाशन कार्य सपन्न कराया है। उन पर श्रीश्री चच्चा जी सा० की विशेष दया व कृपा हो।

श्री नासिरउद्दीन संचालक शक्ति प्रेस उरई को जिन्होंने अपने प्रेस में मुद्रण कार्य कराया है। बुजुर्गान दीन की उन पर दया व कृपा हो।

श्रीश्री चच्चा जी सा० (परमसंत महात्मा श्रीश्री भवानीशंकर जी) की साधक जीवन की संक्षिप्त आत्मकथा *

तीरथ गये सो एक फल, संत मिले फल चार।
सद्गुरु मिले अनेक फल, कहत कबीर विचारि॥

तीर्थों की महिमा सभी शास्त्रों ने कही है। ये शास्त्र भी अनुभवी महापुरुषों के द्वारा लिखे गये हैं, इसलिए शास्त्रों की बात माननीय है। तीरथ में जाने का एक ही फल लिखा गया है। वह फल है कि तीर्थों में जाने से सत्संग मिलता है। निरंतर सत्संग करते रहने से संतों की प्राप्ति होती है। सतों के सत्सग से चार फल प्राप्त होते हैं- वह फल हैं– धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। इन चार फलों में से प्रायः मनुष्य अर्थ यानी स्वार्थ की पूर्ति चाहता है और आगे संतों के मिलने पर भी वह अपना जीवन स्वार्थ में ही व्यतीत कर जाता है। यदि इससे आगे बढ़े तो वह धर्म की प्राप्ति करता है। धर्म एक ऐसी वस्तु है कि उसका ठीक-ठीक हृदय में अंकित होना आसान नहीं हैं। हृदय में धर्म के ठीक-तौर पर अंकित न हो सकने के कारण सब गड़बड़ हो जाता है और मनुष्य काम यानी वासनाओं के जाल में फंसकर रह जाता है और उससे निकलना भी आसान नहीं होता। इसके पश्चात् चौथा फल मोक्ष है जो बिना वासना-रहित हुये कदापि सम्भव नही है। इसलिये सत के मिलने पर भी मनुष्य के लिये जीवन का ध्येय प्राप्त करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य होता है। इसलिये परमसंत सद्गुरु कबीर साहब ने सद्गुरु की प्राप्ति से अनेक फल मिलना कहा है। अनेक माने वे फल जो गिनती से परे हैं। सद्गुरु को प्राप्त कर मनुष्य भवसागर से ही पार नहीं होता, बल्कि जितने भी ब्रह्माण्ड हैं, उन सब के आगे ऐसे अभीष्ट माग पर पहुँचता है जहाँ कि यथार्थ में उसको पहुंचना चाहिये।

सद्गुरु की प्राप्ति बिना तीव्र उत्कण्ठा तथा हृदय की तड़प

* श्रीश्री चच्चा जी सा० के सुपुत्र डा० कृष्ण जी डी. लिट् से साभार प्राप्त।

के कदापि संभव नहीं है। संसार में अब भी सद्गुरुओं की कमी नहीं है, परन्तु उनके चाहने वाले सौ में नहीं, हजारों में नहीं, लाखों में से कोई एक होते हैं। यदि किसी प्रकार सद्गुरु मिल भी जावें, तो मनुष्य बिना अधिकार के उनको पहचान भी नहीं सकता। यदि किसी के कहने सुनने से वह सद्गुरु की शरणागत प्राप्त भी कर लेता है तो पात्र न होने के कारण वह हृदय का सम्बन्ध नहीं बना पाता। अब भी भारत भर में जहां-जहाँ सत्सग आश्रम हैं वहां पर शिष्यगण बड़ी तादाद में कारण व अकारण-वश पहुचते हैं। परन्तु अपनी मनमानी इच्छाओं की पूर्ति न होने पर उनको न विश्वास होता है न उनकी श्रद्धा होती है। सद्गुरु एक ऐसा तत्व है कि यदि वह आसानी से मिल भी जावे तो भी मन नहीं ठहरता है, जैसा कि कहा है—

मोल नहीं अनमोल है बिन मोलहिं मिल जाय।
तुलसी ऐसी वस्तु पर ग्राहक नहि ठहराय॥

यहाँ मैं स्वयं अपनी बीती बात बतलाता हूं जो मैं अपने अधिकारी होने के लिये नहीं, बल्कि प्रेमी भाइयों के समझने और मनन करने के लिये कहना आवश्कीय समझता हूँ। यों मैं अपने आप को अब भी सद्गुरु का शिष्य होने का अधिकारी नहीं समझता हूं, न मुझमें ऐसी कोई बात है जिससे मैं या अन्य लोग मुझे साधू समझें। मैं एक निकृष्ट ससारी प्राणी हूं, जो गलतियों और भूलचूकों से भरा हुआ हूँ। मुझे केवल यही कहना है कि मेरी जैसी उतकण्ठा है, वैसी और लोगों में भी पाई जावे। मेरी कहानी यह है। मेरे पिता जी की उम्र २९ साल की थी, तब उनका स्वर्गवास हो गया। उस समय मेरी अवस्था केवल ११ माह की थी। उसके पश्चात् मेरी माता की मृत्यु हुई। उस समय मेरी अवस्था दो-ढ़ाई साल की थी। मेरे घर में मेरी दादी थीं। उन्होंने ही मेरा पालन–पोषण किया। जब वह पूजा करती थीं, तो मैं उन्हीं के पास बैठा करता था। जैसा कि बच्चों को खेल में आनन्द आता है, वैसा ही आनन्द मुझे वहां प्राप्त होता था। उन्होंने मुझे हनुमानचालीसा तथा रामायण की चौपाइयां याद कराईं। मैं बड़े चाव से उनको कण्ठस्थ कर लेता था।

मेरे मकान के पास शीतलादेवी जी का मन्दिर था। उसमें मैं प्रतिदिन प्रात:काल स्नान करके कर्मकाण्ड के अनुसार पूजा करने जाता था। शाम को रोजाना दनू तालाब के करीब महावीर जी के मन्दिर में जाया करता था। हर मंगलवार को ब्रत रखता और महावीर जी को सिन्दूर घी में लपेटकर चढ़ाया करता था। आर्थिक दशा अच्छी न होने के कारण एक पैसे के गुड़ का भोग लगाया करता था। जहां कहीं रामायण और राम–लीला होती थी, वहां बड़े चाव से जाया करता था। जब मेरी आयु ११ साल की हुई तबसे मैं रामायण का नित्य पाठ करने लगा।

कोंच * के पास एक गांव झलेसुर है। इस गांव में महादेवी जी का एक मन्दिर बना हुआ है जो करीब-करीब बीहड़ में है। यों अब इसके आस-पास भी अबादी होगई है। वहां मैं रामायण का अखण्ड पाठ किया करता था और एक दिनरात में समाप्त कर लेता था। पाठ के लिये मैं अपने साथ किसी को नहीं ले जाता था। अकेला एकान्त में पाठ करता था। घर से चुपके से बिना किसी के जाने हुये कुछ तेल, बत्ती, दीपक व दियासिलाई लेकर जाया करता था। जब घर में मालूम होगया तो वहां का जाना बन्द कर देना पड़ा। साधुसन्तों की वाणी सुनने का भी मुझको बड़ा चाव रहता था।

बड़े भाई की शादी होने पर उनको परमसंत महन्त जानकीदास जी से दीक्षा दिलाई गई। घर में यह नियम था कि शादी के बाद लड़के को दीक्षा दिलाई जाती थी। उसी के अनुसार जब बड़े भाई को दीक्षा दिलाई गई तो मैंने दादी से आग्रह किया कि मुझे भी दीक्षा दिलाई जाय। उस समय मेरी उम्र १५ साल के करीब होगी। मैंने बहुत आग्रह किया किन्तु घर में कोई भी इसके लिये राजी नहीं हुआ। सब ने यही कहा कि जब

* जालौन जिले के जालौन नगर में श्रीश्री चच्चाजी सा० का जन्म हुआ था। जब उनके पूज्य पिताजी का निधन हो गया, जालौन से वह अपने पैत्रिक निवास कोंच चले गये थे। जालौन तहसील में उनके पूज्य पिता जी गिरदावर कानूनगो थे।

तुम्हारी शादी हो जायेगी तब तुम्हें दीक्षा दिलाई जायेगी। मैंने स्वयं श्री महन्तजी से भी, बहुत प्रार्थना करते हुये दीक्षा देने के लिये कहा। उन्होंने कहा, बेटा तुम्हारी अभी बहुत कम उम्र है, तुम्हें दीक्षा नहीं दी जासकती। साथ ही ऐसा कहकर श्री महन्तजी अपने मन्दिर वापिस भी चले गये। मुझे बहुत दुःख हुआ और मैं जोर-जोर से रोता रहा। जैसे जैसे लोग मुझे समझाते मैं और भी गला फाड़-फाड़कर रोता। मुझे न जाने कैसे हठ पड़ गई। मैंने लोगों के कहने पर भी, उस दिन खाना न खाया, न दूसरे दिन खाना खाया, न स्कूल पढ़ने गया, बस, रोता ही रहा। मेरी ऐसी दशा देखकर आस-पास पड़ोसियो ने मेरे घरवालों से कहा कि इसको दीक्षा दिला ही देना ही चाहिये। मैं महन्त जी के मन्दिर ले जाया गया। उस समय उनके सामने पहुंचकर भी मैं रोता रहा।

महन्तजी ने मेरे सिर पर हाथ फेरा और बहुत प्रेम के साथ समझाने लगे, कि अभी दीक्षा नहीं दी जा सकती, समझ आने पर दी जायेगी। ऐसा कहकर वह अन्दर चले गये और एक पेड़ा लाकर मुझे देने लगे। मैंने पेड़ा नही लिया और फूट-फूटकर रोने लगा। तब उनके कुछ शिष्यों ने जो वहां पर थे, महाराज जी से कहा कि महाराज बाल हठ तो आपको रखनी ही पड़ेगी। महाराज जी ने तब मुझसे कहा कि अच्छा पेड़ा खालो, दीक्षा दे देंगे। मैंने कहा कि आप दीक्षा न देंगे मुझसे बहाना बनाते हैं। महन्त जी ने कहा कि पेड़ा तो खाओ, मैं दीक्षा दे दूंगा। मैंने कहा कि यदि आप सौगंध खाकर कहें कि आप दीक्षा दे देंगे तो मैं पेड़ा खालूंगा। महान्तजी ने कहा कि मैं कह चुका हूं तो तुम्हें अवश्य दीक्षा दूंगा, और देवठान एकादशी को दूंगा, जिसके चारपांच दिन बाकी हैं। उनके शिष्यों ने कहा कि महाराज जी झूठ नहीं बोलते। उन्होंने कह दिया है तो देवठान एकादशी को दीक्षा मिल जावेगी। मैं कह नहीं सकता कि मुझे कितनी प्रसन्नता हुई, मुझे आज भी उसकी याद है। मैंने महन्तजी का पेड़ा खाया और देवठान एकादशी की प्रतीक्षा करने लगा।

देवठान एकादशी के दिन श्री महन्तजी ने मुझे मंत्र दीक्षा दी और कहा कि प्रातःकाल मन्दिर आना, तुमको मंत्र याद करा देगें। लोगों से

पूछ-पूछकर मैंने बहुत से मंत्र याद कर रखे थे। उन्हीं में से एक मंत्र यह भी था जो महाराज जी ने कान में फूंक कर सुनाया था। मैंने इसलिये उनसे कहा कि महाराज जी यह मंत्र तो मुझको याद है। यह सुनकर महाराज जी खिलखिलाकर हंस पड़े और कहा कि कल प्रातःकाल मन्दिर आना और बातें भी तुमको बतलाऊंगा।

दूसरे दिन प्रातः जब मन्दिर गया तो महाराज जी ने एक कागज पर सूर्यदेव का मन्त्र, गायत्री मन्त्र तथा सध्या की विधि लिखकर दी *। मैं बड़े चाव से नित्य प्रति उसको करने लगा। उनका मन्दिर मेरे स्कूल और मेरे मकान के रास्ते में पड़ता था। इसलिये स्कूल से घर बापिस आते हुये नित्य उनके दर्शन के लिये उनके मन्दिर जाया करता था।

कुछ दिन पश्चात् मैंने महाराज जी से कहा कि महाराज जी कुछ और बताइये। वह कहने लगे कि इतना ही काफी है। मैंने कहा कि इतने से मेरा जी नहीं भरता, तब उन्होंने कहा कि यदि तुम्हें और बातें बतलाई जावेगी तो तुम्हारा पढ़ना-लिखना छूट जायेगा। मैं मजबूर रहा। फिर भी जो कुछ उन्होंने बतलाया था, उसको नित्यप्रति करता रहा।

चार साल बाद मेरी शादी हुई। महन्त जी मेरी शादी में गये। शादी होने के पश्चात् उन्होंने कुछ बातें और भी बतलाई।

मैं उरई हाई स्कूल में पढ़ने के लिये आया। इस समय भी जब मैं घर जाता तो सबसे पहले महन्त जी के पास जाता और बड़ी देर तक उनके पास बैठा रहता। मेरे विद्याध्ययन काल में ही वह शरीर छोड़ गये। मुझे बहुत दुःख हुआ। मैं उनकी बताई हुई बातों को और भी समय देकर करने लगा।

---

* संध्यावदन, गायत्री जाप अथवा महामन्त्र के जाप व तर्पण नित्य करने से बुद्धि सबल और सात्विक होती है। सब पाप जो काम, क्रोध, मोह लोभ, दम्भ, अहंकार, कपट, लम्पट, छल छिद्र से उत्पन्न होते हैं वे नाश हो जाते हैं और श्री भगवान् की सच्ची भक्ति प्राप्त होती है।
[श्री श्री चच्चाजी सा० : कर्त्तव्यपालन और सदाचार]

उरई में एक भगवद्भक्त पोस्टमास्टर साहब थे। उनका नाम बाबू गजाधर था। मैं उनके पास जाने लगा। उन्होंने मुझे २१ हजार रामनाम का जाप करने को कहा। अतएव मैं प्रतिदिन २१हजार रामनाम की माला करता रहा। कुछ समय पश्चात् झाँसी जजी में नकलनवीस की जगह मेरी नियुक्ति हुई और मेरा तबादला उरई से झाँसी कर दिया गया।

मेरे बड़े भाई की धर्मपत्नी का देहान्त हो गया था। उनका एक लड़का था जिसकी आयु १० साल की थी। उसको भाई सा० ने मेरे पास भेज दिया। मैं उसको बड़े चाव से रखने लगा। घर पर उसको पढ़ाने के लिये एक मास्टर भी लगा दिया। यों स्कूल में भर्ती तो करा ही दिया था। उस लड़के से मुझे बहुत प्रेम हो गया।

कुछ साल बाद झाँसी में बड़े जोर का प्लेग फैला। मैं उसको और पत्नी को लेकर बस्ती के बाहर तहसील के करीब पं० बल्देवप्रसाद रईस की हवेली में एक कमरा लेकर रहने लगा। दो-तीन दिन के पश्चात् उसको प्लेग हो गया और तमाम प्रयत्न करने के बावजूद उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु से मुझे और मेरी स्त्री को बहुत दुःख हुआ। उस समय तक मेरे कोई सन्तान नहीं हुई थी। इसलिये मेरी प्रबल इच्छा सन्यास लेने की हुई। कचहरी के साथियों ने मुझे बहुत समझाया किन्तु इतना अधिक भावावेश था कि किसी के कहने का मेरे ऊपर कोई असर नहीं हुआ।

मैंने अपनी स्त्री से कहा कि मैं सन्यास लूँगा, तुम मेरे भाई के साथ रहो चाहे अपने भाई के पास या अपने मायके चली जाओ। उसने कहा कि मैं भी आपके साथ संन्यास ले लूँगी, आपका कोई हर्ज नहीं होगा, तथा जो आप कहेंगे,वह मैं करूँगी। मैंने कहा कि तुम्हारा संन्यास लेना उचित नहीं है। परन्तु उसकी तीव्र उत्कण्ठा ने मुझे उसको अपने साथ ले चलने के लिये मजबूर किया। मैंने कहा कि यदि तुमको संन्यास लेना है तो बाई

बनकर रहना पड़ेगा। तुमको गहने, चूड़ी, बिछिया उतारने होंगे। बिना परदा साधु-मण्डली में रहना पड़ेगा ताकि बाद में मेरा और तुम्हारा धर्म नष्ट न हो। उसने कहा कि यह तो मैंने पहले ही सोच लिया है। इतना कहने पर उसने अपनी चूड़ी और बिछिया उतार दिये। गहने तो उसके पास नाम मात्र के ही थे, वह भी उतार दिये। मैंने इस्तीफा लिखकर कचहरी भिजवा दिया। शाम को मेरे कई साथी मेरे मकान पर आये और मुन्सरिम जजी भी आये। उन्होंने कहा कि इस्तीफा न दीजिये। अभी चार-पाँच महीने की छुट्टी ले लीजिये। उसके बाद भी जितनी छुट्टी मिल सकती है, ले लीजिये तथा बाद में इस्तीफा दे दीजिये। मैंने उनकी बात मानकर अर्जी भिजवा दी, जो मंजूर हो गई।

हम दोनों ने निश्चय किया कि पैदल ही चलेंगे। स्त्री ने कहा कि कुछ रुपया और जेवर है। जेवर को बेचकर भी रुपया कर लें। इसप्रकार इस धन से रेल की यात्रा करें और उसके पश्चात् पैदल यात्रा करें। मैंने उसकी बात मान ली। इधर घर का सब सामान कोंच भिजवा कर मकान भी खाली कर दिया।

झाँसी से चित्रकूट गया। वहाँ मालूम हुआ कि पं० रामनारायण ब्रह्मचारी बहुत बड़े सन्त हैं। हम दोनों उनके आश्रम की ओर चल पड़े। वह एक बहुत ऊँचे टीले पर कुटी बनाकर रहते थे। जब मैं टीले के पास पहुंचा तो रास्ता तलाश करने लगा कि किधर होकर जावें। मैं रास्ता तलाश कर ही रहा था कि इतने में वह स्वयं उछलते हुये हम लोगों के पास आ गये और हम दोनों को साष्टांग प्रणाम करके गद्‌गद् होकर कहने लगे—"मेरा बड़ा भाग्य है कि आज शक्ति सहित भगवान् के दर्शन हुये।" उनके आँसू टपकने लगे। उनकी दशा देखकर हम लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। मैं कुछ कह भी न पाया। वह हमलोगों को अपनी कुटी ले गये। वहाँ आसन डालकर बैठाला। कुटी के अन्दर से एक कठौता पानी भरकर लाये और गदगद् होकर हमलोगों के चरण धोने लगे। हमलोग कुछ ऐसे हतप्रभ होकर रह गये कि कुछ कह न सके। मैं इतना ही कह सका कि महाराज, आप यह क्या कर रहे हैं। जो कुछ हमें करना चाहिये, वह

आप कर रहे हैं। वह कहने लगे कि **मेरे भाग्य कि रामसीता के दर्शन हुये। रामायण की चौपाइयाँ पढ़कर हमलोगों की स्तुति की* ।** हमलोग सन्नाटे में सब कुछ देखते और सुनते रहे। तत्पश्चात् कुटी से एक पत्तल पर सत्तू के दो लड्डू लाये और हम लोगों के सामने रख दीजिये, मैंने विनय की कि महाराज पहले आप भोग लगा दीजिये, फिर हमें प्रसादरूप दीजिये किन्तु वह न माने। हमलोगों को ही भोग लगाना और खाना पड़ा। जब थोड़ा शेष रह गया तो प्रसादरूप माँगने लगे। मैंने जूठन देने से मना किया किन्तु वह उस जूठन में से ही खाने लगे। तत्पश्चात् कहने लगे कि यहाँ जंगल है। आप प्रमोदवन जाइये और वहाँ विश्राम कीजिये। मैंने उनसे उपदेश देने के लिये आग्रह किया तो कहने लगे कि आप स्वयं भगवान् हैं, मैं आपको क्या उपदेश दूँ। फिर भी यह निश्चित है कि **संसार के कल्याण के लिये जो होगा, वही आप करेंगे।** ऐसा कहते हुए वह मुझे प्रमोदवन तक छोड़ने आये। मैं वहाँ करीब १ माह रहा और इस तलाश में रहा कि कोई अच्छा सन्त मिल जाये तो सन्यास ले लिया जाये किन्तु मेरी तबियत कहीं नहीं भरी, तो मैं चित्रकूट से इलाहाबाद आया। त्रिवेणीजी के संगम पर गया, तो मालूम हुआ कि झूसी में कई अच्छे सन्त रहते हैं। मैं करीब एक हफ्ते झूसी में रहा तथा कई सन्तों के पास आता-जाता रहा। एक कबीर पंथी सन्त ने अपनी इच्छा से मुझसे सन्यास लेने के लिये कहा। मैंने उनसे कहा कि पहले मुझको कुछ ऐसी बात बतलाई जावे कि जिससे मुझको विश्वास हो कि आपको सन्यासगुरु बनाने में लाभ होगा। उन्होंने कहा कि लाभ तो सन्यास लेने केबाद प्रतीति में आवेगा, पहले कैसे आ सकता है। मैंने कहा कि यह कहा जाता है कि—

गुरु कीजिये जानि और पानी पीजिये छानि।

---

* तब मुनि हृदयं धीर धरि गहि पद बारहिं बार।
निज आश्रम प्रभु आनि करि पूजा बिबिध प्रकार॥
[मानस २.१०]

वह कहने लगे कि जब तुमको मुझसे भी अधिक विद्या आजाये तो जान सकोगे, अभी बच्चे हो, क्या जान सकते हो? मैं वहाँ से चल दिया और बनारस पहुंचा। बनारस में कई जगह साधू-सन्तों से मिला किन्तु कहीं कोई बात प्रतीति में नहीं आई। बनारस में यह निश्चय किया कि हरद्वार चलना चाहिये। वहाँ पर बहुत साधू-सन्यासी रहते हैं। हरद्वार गया और वहाँ करीब १५ दिन रहा। जितने भी स्थान साधु-सन्तों के बताये गये, वहाँ जाता रहा। वहाँ यह मालूम हुआ कि अच्छे संत ऋषिकेश में रहते हैं।

ऋषिकेश पहुंचा। वहाँ मालूम हुआ कि यहाँ कोई मौनी बाबा बड़े सन्त रहते हैं परन्तु किसी से बात नहीं करते हैं। मैंने कहा कि दर्शन तो हो सकते हैं कि नहीं? साधुओं ने बताया कि वह ८ बजे प्रातः कुटी के कपाट खोलकर कुछ देर के लिये बाहर बैठते हैं। अतः हम दोनों प्रातः ६ बजे गंगा स्नान के बाद उनकी कुटी पर पहुंच गये। **उन दिनों हम दोनों का १ लाख रामनाम जाप करने का अभ्यास था।** हम लोग अपनी मालायें लेकर उनकी कुटी के बाहर जाप करने लगे। ८ बजे उन्होंने अपनी कुटी के कपाट खोले और देहरी पर बैठे गये। हम दोनों ने मालायें बन्द करके उनको साष्टांग प्रणाम किया और चुपचाप बैठे रहे। वह टकटकी लगाकर हम लोगों को देखते रहे। कुछ समय पश्चात् अपनी कुटी में अन्दर गये और पेन्सिल से कागज पर कुछ लिखा हुआ लाकर हमारे सामने रख दिया। साथ में पेन्सिल रख दी और वह स्वयं अपनी कुटी के अन्दर चले गये।

उसमें तीन बातें लिखी थीं—

१—आप दोनों का क्या सम्बन्ध है?
२—आप कहाँ से आये हैं?
३—इस आश्रम में आने का क्या कारण?

मैंने तीनों प्रश्नों का उत्तर लिख दिया। तीसरे प्रश्न का यह उत्तर

लिखा कि मुझे संसार से पूर्ण वैराग्य हो चुका है और मैं सन्यास लेना चाहता हूं। आपका बहुत नाम सुना है। इसलिये आपकी शरणागत होने के लिये आया हूं। यदि आप उचित समझें तो मुझे संन्यास देवें।

कुछ देर बाद उन्होंने कुटी के द्वार खोले। मैंने कागज पेन्सिल रख दी और वह कागज पेन्सिल लेकर कुटी में चले गये। थोड़ी देर बाद एक कागज पर यह लिखकर मेरे सामने रख दिया किन्तु पेन्सिल साथ नहीं रखी।

"आप दोनों धन्य हैं। आपके दर्शन पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। मैं आपको अपनी सम्मति देता हूं कि **आजकल कलिकाल है। अब जंगलों में विषयी साधु, महात्मा रहते हैं। आप जंगली साधु–महात्माओं के चक्कर में पड़कर अपना भविष्य नष्ट न कीजिये। आप गृहस्थ आश्रम में वापिस जाइये। गृहस्थ आश्रम में ही आपको ऐसा सन्त मिलेगा जिससे आपका ही नहीं वरन् आपके द्वारा बहुतों का कल्याण होगा।** उनके यह शब्द पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि उन्होंने ठीक ही लिखा है। मैंने वह पर्चा अपनी पत्नी को सुनाया और कहा कि मुझको इस संत की वाणी सही मालूम होती है। इतने बड़े संत की वाणी मिथ्या नहीं हो सकती। इसलिये यदि तुम्हारी राय हो तो गृहस्थ में लौट चलें। उसने कहा कि आप अच्छा समझते हैं। आप जैसा करें, ठीक है। मैंने फिर सोचा तो हृदय से आवाज आई कि संत की वाणी के अनुसार काम करना उचित है। हम दोनों मस्तक नवाकर चल दिये। चार माह की छुट्टी समाप्त हो रही थी। इसलिये हम ऋषिकेश से झांसी लौट आये। सब हाल अपने साथियों को सुनाया। तो उन्होंने कहा कि हमारी राय तो पहले ही नहीं थी। यह अच्छा ही है कि संत की वाणी से लौट आये। मैंने अपना चार्ज लिया और अपना दफ्तर का काम सम्हाला और **उसी तरह अपना दफ्तर का काम करता रहा जिस तरह एक संन्यासी करता है। एक लाख का**

नाम जप जारी रहा। उसी के साथ ९ दिन में रामायण पाठ तथा नित्य प्रातः चार बजे से गीता का पूरा पाठ का कार्यक्रम जारी रखे रहा। उठते बैठते गीता के श्लोकों का मनन करता रहता था। एक दिन प्रातःकाल जब गीता के चौथे अध्याय का पाठ कर रहा था तो ३४ वे श्लोक के "तत्वदर्शिन" शब्द पर मेरा मन अटक गया—

तद् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥

मैं समझाता था कि भक्त के सब लक्षण मुझ में हैं। अब तत्व की कौन-सी बात है जो मुझे तत्वदर्शिनः बतलावेंगे। मेरी शंका का समाधान नहीं हुआ। दूसरे दिन भी उसको पढ़ा किन्तु समाधान नहीं हुआ।

प्रातःकाल गीता पाठ के पश्चात् मैं घूमने जाया करता था। एक डाक्टर से रास्ते में मेरी प्रायः मुलाकात होती और बात होती थी। वह भी एक अच्छे भक्त माने जाते थे। एक दिन मैंने उनसे कहा कि मैं एक चक्कर में पड़ा हूं। उन्होंने पूछा ऐसी कौन-सी बात है कि जिसके कारण आप चक्कर में पड़े हैं। मैंने उनसे पूछा कि तत्व की बात कौन-सी होती है। उन्होने कहा कि तत्व तो सब चीजों के होते हैं। आप किस तत्व की बात कह रहे हैं। मैंने उनको गीता के चौथे अध्याय के ३४ वें श्लोक का हवाला देते हुये अपनी चक्कर में आने की बात बताई। इस पर उन्होंने कहा कि इसका उत्तर तो स्वयं आपके पास है। मैंने कहा, कैसे ? तो बताने लगे कि आप ही तो कह रहे हैं कि जब तू संत महात्मा के पास जावेगा और जब वे तेरी सेवा से प्रसन्न हो जावेंगे तो तुमको तत्व की बात बतलावेंगे। बताइये, क्या आप संतों की सेवा कर चुके हैं और संत आपकी

—तत्वदर्शी सत्पुरुषों को विनम्रतापूर्वक दण्डवत्-प्रणाम करके, तथा प्रश्न-परिप्रश्न करके उनसे उस तत्वज्ञान को जान। वे तत्वदर्शी ज्ञानीजन तुझको उस तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

सेवा से प्रसन्न हुये हैं। मैंने कहा कि मैंने तो किसी संत की सेवा नहीं की। कहने लगे कि यदि आपको यथार्थ में तत्व की बात जाननी है तो किसी संत के पास जाकर उसकी ऐसी सेवा कीजिये कि वह प्रसन्न हो जाये। तब वह आपको तत्व की बात बतलायेंगे। मैंने कहा कि अब मेरी इच्छा तो किसी सत के पास जाने की नहीं होती। घरपर ही जितना सम्भव होता है, चिन्तन-मनन करता रहता हूं। मैं तो कई तीर्थ स्थानों में सतों केपास हो, आया हूं। मैं सन्यास लेने का दृढ़ निश्चय कर चुका था, पर मुझे कोई ऐसा सत नहीं मिला, जिससे सन्यास लेता। ऋषिकेश में अवश्य एक बड़े संत के दर्शन हुये थे और उनके शरणागत होने की मेरी इच्छा भी हुई थी किन्तु उन्होंने मुझे बताया कि मुझे गृहस्थ आश्रम में ही ऐसा संत मिलेगा जिससे मेरा ही नहीं, बल्कि मेरे द्वारा बहुतों का कल्याण होगा। मैं मजबूर होकर घर लौट आया। घर में रहते हुए ही सरकारी नौकरी और ईश्वर का भजन करता हूं। डाक्टर साहब ने कहा कि यथार्थ में यदि आपको तत्व की बात जानना है तो अब भी गृहस्थ आश्रम में एक बड़े सन्त मौजूद हैं। यदि आपकी इच्छा हो तो उनसे अवश्य मिलिये। मैंने उनसे पूछा कि वह सन्त कौन हैं, क्या काम करते हैं, किस जाति के हैं और कहां रहते हैं? डाक्टर सा० ने बताया कि उनका नाम श्री रामचन्द्र है। वह कलक्टरी फतेहगढ़ में मुहाफिज दफ्तर में हैं और जाति के कायस्थ हैं। उनका यह विवरण सुनकर मैंने उनसे कहा कि डाक्टर सा० करेला और नीम चढ़ा। मैं बचपन से ही ब्राह्मणों के मुहल्ले में रहता रहा हूं और उन्हीं के रहन-सहन और अन्य बातों का अनुसरण करता आया हूं। मेरा ख्याल है कि गृहस्थ आश्रम में यदि कोई सन्त होगा, तो वह जाति का ब्राह्मण अवश्य होगा। सरकारी नौकरी नहीं करेगा। खेती या अन्य किसी पेशे से अपना निर्वाह करता होगा। यों मैं जाति का कायस्थ हूं लेकिन मुझे स्वयं कायस्थों से बड़ी नफरत है। यहां तक कि मैं अपने बिरादरी के और रिश्तेदारों के यहां खाना नहीं खाता। कायस्थ लोग मांस-मदिरा का भक्षण करते हैं और यह जाति बहुत चालाक होती है। इसलिये मुझे विश्वास नहीं होता कि कायस्थ होते हुये और सरकारी नौकरी करते हुये

कोई उच्च कोटि का संत होगा। डाक्टर सा० कहने लगे कि आप एकबार उनके पास हो तो आइये। उसके बाद जिस नतीजे पर पहुंचे, मुझे बताइये। सन्तों की कोई जाति नहीं हुआ करती। मैंने कहा कि मैं उनको एक पत्र लिखता हूं। उनका जवाब आने पर मिलने के लिये सोचा जावेगा।

मैंने नीचे लिखे मजमून का पत्र लिखा—

जनाब मुन्शीजी जै रामजीकी।

मैंने सुना है कि आप ईश्वर भक्त है। इसलिये आपसे मिलने की इच्छा है। यदि आप किसी काम से झांसी आवें तो मुझे सूचित करें कि आप कब तक आवेंगे ताकि मैं आपसे मिल सकूं।

न्याज़मन्द :
भवानीशंकर
जजी दफ्तर, झांसी

एक हफ्ते के अन्दर मेरे पत्र का जवाब नीचेलिखे मजमून का मेरे पास आया।

महरबानमन, जै रामजी की।

खत मिला, खुशी हुई। मेरा झांसी की तरफ आना नहीं होता है। अगर किसी वक्त हुआ तो आपको इत्तिला दूंगा। यदि आपको मौका हो तो आप मिलिये। आपसे मिलकर तबियत खुश होगी।

बंदा :
रामचन्द्र
तलैया लेन, फतेहगढ़

इसके बाद न मैंने कोई खत उनके पास भेजा और न उनका ही कोई खत मेरे पास आया। इतना जरूर हुआ कि जिस रोज उनका खत आया, रात में उनको स्वप्न में देखा और जिस सूरत-शक्ल में देखा उसकी याद मुझको आती रही।

दीवानी में जून में एक माह की छुट्टी हुआ करती है। मैंने सोचा

चलूं, इस छुट्टी में मुन्शीजी से भी मिल लूं और देखूं कैसे ईश्वरभक्त हैं ! लिहाजा हम दोनों फतेहगढ़ चल दिये। शाम को उनके मकान पर पहुंचे। मकान के बाहर वह चारपाई पर बैठे हुये थे। मैंने उन्हीं से पूछा क्या कोई श्री रामचन्द्र नाम के मुलाजिम मुहाफिज दफ्तर इस मकान में रहते हैं। वह पूछने लगे कि आप कहाँ से आये हैं ? मैंने कहा कि मैं झाँसी से आया हूं। आगे पूछा कि साथ में स्त्री कौन है ? मैंने जवाब दिया कि वह मेरी स्त्री है। कहनेलगे कि क्या आपका ही नाम श्री भवानीशंकर हैं। मैंने कहा, 'जी हाँ'। उन्होंने मुझे अपनी चारपाई पर बिठाया और स्त्री जमीन पर बैठ गई। झाँसी का हाल पूछने लगे और सरकारी काम की बावत पूछने लगे। इसप्रकार आध घन्टे तक दुनियावी बातें होती रहीं। मैंने कहा कि मुझे ठहरने के लिये स्थान बताइये। उन्होंने कहा कि बरामदे में आप अपने कपड़े रख लीजिये और अपने घर के लोगों को अन्दर भेज दीजिये। मैंने कहा कि वह मेरे पास ही रहती हैं और मेरे साथ ही ठहरेगीं। कहनेलगे तो आप दोनों ही बरामदे में ठहरें। हम दोनों ने कपड़े बरामदे में रख दिये और पास ही जो कुआँ था, उसपर जाकर हाथ-पैर धोये। उसके पश्चात् अपना पूजापाठ का नित्यकर्म रात को १० बजे तक करते रहे। जब फारिग हुये तो बरामदे में सोने के लिये बिस्तर लगाये। इतने में वह स्वयं मेरे पास आये और कहने लगे कि खाना खा लीजिये। मैंने कहा कि खाना तो मैं न खाऊँगा। कहने लगे, थोड़ा-सा खा लीजिये। मैंने कहाकि अब्बल तो मुझको भूख नहीं है, दूसरे आप कायस्थ हैं। आपके खाने में लहसुन प्याज इत्यादि होगा, जिनका मैं इस्तेमाल नहीं करता हूं। कहने लगे कि पराठा बने हैं और सब्जी की तरकारी है जिसमें लहसुन प्याज नहीं है। मैंने कहा कि मैं न खा सकूंगा। इसपर वह चुप रहे और मकान के अन्दर चले गये।

हमदोनों बरामदे में सोते रहे। ४ बजे प्रातः उठे और ९ बजे तक अपने नित्य के पूजापाठ में लगे रहे। ९ बजे वह फिर बरामदे में आये और कहने लगे कि रात में आपने कुछ नहीं खाया, अब खाना खा लीजिये। मैंने कहा कि मैं आपके यहाँ कच्चा खाना नहीं खा सकता और पूड़ी के

लिये कष्ट नहीं देना चाहता। पूछने लगे कि आप कौन जाति के हैं ? मैंने कहा कि मैं हूं तो कायस्थ। इसपर वह बोले कि आप कायस्थ होकर भी कायस्थ के यहाँ खाना नहीं खाना चाहते। मैंने कहा कि मैं आमतौर पर नहीं खाता हूं। केवल उनके यहाँ ही खाता हूं जिनसे मेरी प्रकृति मिलती है। फिर आप तो सक्सेना हैं। सक्सेनाओं के यहाँ श्रीवास्तव कच्चा खाना नहीं खाते हैं। उन्होंने कहा कि आप के लिये पूड़ी बन जायेगीं। उन्होंने कुछ इसप्रकार कहा कि मैं इन्कार न कर सका। जब वह अन्दर चले गये तो मैं विचार करने लगा कि यदि मैं किसी हलवाई के यहाँ दुकान पर पूड़ी खाऊँगा तो मालूम नहीं कि वह किस जाति का हो, और कैसा खाना हो। यहाँ इनके यहाँ का वायुमण्डल शुद्ध मालूम पड़ता है। यहाँ का भोजन हलवाई के यहाँ के खाने से हर हालत में अच्छा है। मैं यह विचार कर ही रहा था कि वह बाहर आये और कहने लगे कि आपके लिये पूड़ियाँ बन रही हैं। मन ही मन मैं कुछ ऐसा लज्जित-सा हुआ और कहने लगा कि आप परेशान न हों। आपके यहाँ भोजन करना ही है तो मैं कच्चा खाना ही लूंगा। यह सुनकर वह अन्दर चले गये। थोड़ी देर बाद आये और कहने लगे कि चलिये खाना तैयार है। मैंने और मेरी पत्नी ने हाथ पैर धोये और उनसे निवेदन किया कि हमलोग चौके में ही खाना खाते हैं। वह बोले कि चौका तैयार है। चौके में दो पटे रखे हुये थे। हम दोनों के सामने अपने हाथों से परोसी एक-एक थाली रखदी। मैंने कहा थोड़ी-सी अग्नि दे दीजिये। कहने लगे कि अग्नि का क्या कीजियेगा। मैंने कहा हवन करूंगा। थोड़ा घी गुड़ दे दीजिये। उन्होंने हम दोनों के सामने थोड़ा घी, गुड़ रख दिया और अग्नि लादी। हम दोनोंने हवन किया और एक-एक रोटी अग्रासन की निकाली, भगवान का भोग लगाया। उन्होंने पूछा कि इन रोटियों का क्या होगा ? मैंने कहा कि कोई कन्या हो या गाय हो उसको खिला दीजिये। उन्होंने कहा कि गाय तो घर में ही है। मैंने अपनी और अपनी स्त्री की रोटी लेकर कहा कि मैं खिलाआऊँ। बोले कि मुझे दे

दीजिये। गाय बाहर बंधी है। मैं खिला आऊँगा। आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। आप लोग भोजन कीजिये। वह रोटियों लेकर गाय को खिला आये। हम दोनों भोजन करके बाहर आ गये।

उनके यहां शाम को रोजाना सत्संग होता था। परन्तु अपने पूजा-के कर्मकाण्ड के कारण हम लोगों को समय ही नहीं मिलता था कि सत्संग में जावें। यों मैं यह भी नहीं समझता था कि सत्संग होता क्या है। इन्हीं दिनों बीच में एक इतवार पड़ा। उनके आफिस की छुट्टी थी। हम लोगों के फारिग होने पर वह बाहर बरामदे में आये और कहने लगे कि चार-पाँच दिन होने को आये लेकिन आपसे कोई बात करने का मौका नहीं मिल पाया। आइये, बैठ जाइये। मैं बैठ गया। पास में मेरी पत्नी भी बैठी रही। एक घटे बाद उन्होंने आँखें खोलीं और मुझसे बोले, कहिये कैसी तबियत रही। मैंने कहा ठीक रही। फिर वह कुछ न बोले। उन्होंने मुझसे सत्सग में आने के लिये फिर कहा कि यदि समय निकाल सकें तो आवें। मैंने कहा कि समय निकालूंगा और आपके सत्सग में आऊँगा। उस दिन मैं शाम के सत्संग में बैठा और नाम-जाप करता रहा।

इसतरह करीब १५ दिन मैं वहाँ, उनके यहाँ रहा और शाम के सत्संग में समय निकाल कर जाता रहा। एक दिन सत्संग के बाद मैंने उनसे कहा कि मैं ध्यान लगाता हूं, पर ध्यान लगता नहीं। बोले आप कैसा ध्यान लगाते हैं? मैंने कहा कि **शंकर जी को अपना इष्टदेव मानता हूं।** तस्वीरों में जो शंकर जी की मूर्ति बनी हुई है उसी का ध्यान लगाता हूं। लेकिन कभी सिर, कभी पैर, कभी हाथ नदारद होते हैं, पूरी तस्वीर पर चित नहीं जमता, कहने लगे कि आप चलने लगेंगे, तब बतलाऊँगा।

जब मैं वहाँ से वापिस चलने लगा तो मुझे ख्याल आया कि इन्होंने कहा था कि चलने लगूँगा तब ध्यान लगने की बात बतलायेंगे और इच्छा हुई कि उनसे बतलाने के लिये कहूं। फिर ख्याल आया कि इन्होंने स्वयं

ही कहा था कि चलते वक्त बतलावेंगे, तो चाहेंगे तो बतलावेंगे। मैं क्यों पूछूँ?

जब हमलोग चलने लगे तब भी उन्होंने कुछ नहीं बताया। तांगा मंगाया। हम दोनों तांगे पर बैठ गये। मैंने जैरामजी की और मेरी स्त्री ने हाथ जोड़े। तांगा चल दिया तो वह जब तक तांगा दूसरी सड़क पर न मुड़ा बराबर तांगे की तरफ देखते रहे। तांगा मुड़ने पर जैसे **ही वह आँख से ओझल* हुये, तो इकबारगी मुझे ऐसा लगा कि बजाय मेरे वही तांगे में बैठे हैं** और ऐसा भान होने लगा कि तांगा प्रकाश की आँधी में चल रहा है। मुझे चक्कर आने लगे। मैंने अपनी पत्नी से कहा कि मुझे चक्कर आ रहे हैं, मुझे साथे रहना। उसने कहा कि आपकी तबियत खराब हो गई है। आप फिर लौटकर वहीं चलिये। किसी डाक्टर को दिखाकर दवा ले लीजिये। मैंने कहा, नहीं, छुट्टी खत्म हो रही हैं, वापिस चलना ही चाहिये। खैर, तांगा चलता रहा। मेरी हालत अजीब-सी होती रही। तांगा स्टेशन पहुंचा। मैं स्त्री का सहारा लेकर तांगे से उतरा। मैंने उससे कहा कि किसी के जरिये झांसी का टिकट लेले। मैं सामान रखाये रहूंगा। वह टिकट ले आई। हम दोनों फतेहगढ़ से कानपुर जाने वाली ट्रेन में बैठे। ट्रेन में बैठते ही **मेरा सारा शरीर प्रकाशमय हो गया। तन-बदन की खबर न रही।** मैंने कहा कि मैं बैठ नहीं सकता हूं। मेरी स्त्री ने साथी मुसाफिरों के हाथ जोड़े और कहा कि इनकी तबियत खराब है, लेट जाने दें। गाड़ी अधिक भरी न थी। मुसाफिर दूसरी जगह चले गये और मैं लेट गया। मुझे यह मालूम ही न पड़ा कि गाड़ी कानपुर कब पहुंची। मेरी स्त्री ने घबड़ाते हुये कहा कि आपकी तबियत ज्यादा खराब है। यहाँ कानपुर उतरकर किसी धर्म-शाला में रुककर किसी डाक्टर को दिखा लीजिये। मैंने कहा नहीं, झांसी जाने वाली गाड़ी का पता लगाओ कब जावेगी। पता चला कि गाड़ी

*अंतरधान भए अस भाषी। संकर सोइ मूरति उर राखी।
[१.७६.७]

तैयार है। अतः सहारा लेता हुआ, मैं झांसी की गाड़ी तक आगया और गाड़ी में लेट गया। झांसी पहुंचने पर कुछ होश आया। घर पहुंचा। कचहरी जाने लायक मेरी हालत न थी। लेकिन छुट्टी खत्म होरही थी, इसलिये तांगा करके कचहरी गया, हाजरी दी और मुन्सरिम जजी से पूछकर घर वापिस चला आया।

मेरी कुछ ऐसी हालत थी कि **मुझे यह लगता था कि मैं उनका ही स्वरूप हो गया हूं।** हर चीज को आश्चर्य से देखता था। मैंने उनको एक चिट्ठी लिखी और जो कुछ हालत थी, सब लिख दी।

उनका जवाब आया। उसमें जैरामजी के बाद लिखा था कि आप तो चेला बनने आये थे, गुरु बनकर गये हो। ईश्वर को धन्यवाद है कि आपका काम हो गया। आप १० रोज तक केवल दूध पर रहें, खाना न खावें। आप राम नाम का जो जाप करते है, उसको छोड़ दीजिये। दस रोज के बाद की हालत की सूचना दीजिये। उनकी तहरीर के मुताबिक मैंने किया और मेरी हालत सुधर गई, और इस काबिल होगया कि काम कर सकूं। इसके बाद जब-जब मौका मिला, मैं फतेहगढ़ जाता रहा। बड़े दिन की छुट्टी और एक माह की छुट्टी में बराबर रहता रहा।

अभ्यास साधन के बारे में न मैंने ही पूछा न उन्होंने ही कुछ बताया। इसके बाद तमाम ऐसी हालतें गुजरीं कि उन सबको लिखा जाये तो एक किताब ही बन जायेगी। अतः इसको यहां खत्म करके मैं इतना कहना मुनासिब समझता हूं कि **बिना तीव्र उत्कण्ठा या तड़प के कुछ काम नहीं बनता।** यदि पूर्वजन्म के संस्कार वश सद्गुरु मिल भी जावें तो उन पर श्रद्धा विश्वास होना आसान नहीं है। जिसप्रकार बिना भूख के भोजन और बिना प्यास के पानी अच्छा नहीं लगता, उसीप्रकार बिना तीव्र उत्कण्ठा व तड़प के गुरु की दी हुई चीज हृदय में स्थान नहीं लेती। उसकी वही हालत होती है जैसे पथरीली, कंकरीली जमीन में बीज बो देने से नहीं जमता, बीज और परिश्रम बेकार जाता है।

मैं यहां फिर से यह बता देना चाहता हूं कि मैं कोई साधु या सन्त

नहीं हूं। अधम से अधम और निकृष्ट प्राणी हूं। सद्गुरु महाराज मुझ पर ऐसी ही दया करते रहें, जैसी अबतक करते रहे हैं। जैसा कि महात्मा तुलसीदास ने कहा है—

करहुं सदा तिनकी रखवारी,
जिमि बालकहि राखि महतारी।

श्रीभगवान् गुरुदेव से प्रार्थना है कि वह आप सब लोगों को अपनावें। उन्होंने कईबार मुझसे कहा कि मैं तुमको इजाजत देता हूं कि तुम मेरी तरफ से मुमुक्षुओं और जिज्ञासुओं को यह विद्या बतलाओ। मगर मैं बराबर इनकार करता रहा कि मैं खुद ही तमाम गलतियों से भरा हुआ हूं। मैं क्या बतलाऊंगा।

एक दिन सारी मण्डली बैठी हुई थी। मुझको बुलाकर उन्होंने अपने पास बिठाया और कहा कि मैंने तुम्हारे लिये आध्यात्मिक शक्तियां खर्च की हैं और तुमसे आशा करता हूं कि इस आध्यात्मिक कार्य में तुम मेरी खिदमत करोगे। मैंने कहा कि यह काम इतना भारी हैं कि मेरे बलबूते का नहीं। इसपर वह बड़ी जोर से जमीन पर हाथ पटक कर उत्तेजित होकर बोले कि तुम क्या समझते हो कि तुम खुद यह काम करोगे। काम तो मैं करूंगा। तुमसे जो प्रेम करेगा रातदिन मैं उसके घर की चौकीदारी करूंगा † मैंने कहा कि यदि ऐसा है तो मुझे आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।

अतः अपने आदेशों के अन्तर्गत अपना काम स्वयं वह ही अपने स्वरूप में कर रहे हैं। मैं इसका कर्त्ता-धर्त्ता नहीं हूं। जैसा जिसके लिये वह चाहते हैं, करते-धरते हैं। मैं तो उनका बहुत अदना और छोटा टहलुवा हूं। हे गुरु महाराज ! रक्षा कीजिये।

ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ शान्ति

---

† 'संकर भजन बिना नर भगति न पावइ मोरि'

श्री श्री चच्चाजी सा० के वैष्णवजन व्यक्तित्व की साधनागत विशेषतायें और उनका योग

वैष्णवजन तो तेने कहीए जे पीड पराई जाणे रे;
पर दुःखे उपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे।

[संत साधना का विकास होता रहा है जिसमें युगप्रवर्तक संतों ने अपनी साधनागत विशेषताओं से योग दिया है। श्रीश्री चच्चाजी सा० का विशेष उल्लेखनीय योग रहा है। उन्होंने साधना के क्षेत्र में कितनी ऊँचाई प्राप्त की और किन नये आयामों की प्रतिष्ठा की, इसको तो उन्हीं की ऊँचाई का कोई संत समझ सकता है। अन्यथा कुछ स्थूल बाह्य योग प्रयोग ही उल्लेख्य हो सकते हैं। उन्हीं में से कुछ की ओर संकेत किया जा रहा है]

१. दूसरे के रोगों व भोगों को खींचकर फेंक देने की बुजुर्गों से चली आ रही पद्धति के स्थान पर स्वयं उन रोगों-भोगों को अपने ऊपर लेने और पूरी तरह भोगकर साफ करने का बलिदानी सकल्प एवं साहस उन्होंने किया। जीवन के अन्तिम क्षण तक दूसरों के रोगभोग भोगने का उपकार करते उनको देखा गया। [सन्दर्भ १.४]

२. उन्होंने अपने प्रेमीजनों में अपने गुरुदेव के दर्शन किये और उनको गुरु ही समझा। श्री गुरुपूर्णिमा के पावनपर्व पर इसी भाव से अपने शिष्यों का पूजन तथा चरण वन्दन उनका क्रान्तिकारी कदम था जो न कभी किसी धर्म सम्प्रदाय में हुआ और न कभी होगा। उनके उत्तराधिकारी भी उसी तरह इसका पालन कर रहे हैं। [सन्दर्भ १.५.२]

अपने शिष्यों को अपने गुरुदेव का रूप मानते हुये ही उन्होंने कभी किसी शिष्य से कोई भेंट ग्रहण करना स्वीकार नहीं किया। इसके विपरीत जब कभी आवश्यकता हुई तो अपने शिष्यों की सभी प्रकार से सेवा और सहायता की। [सन्दर्भ १.५.२]

३. श्री श्री चच्चाजी सा० की अपने गुरुदेव श्री 'राम' के नाम एवं रूप में तालो लगी रहती एवं अनन्यतन्मयता बनी रहती है। उनके दर्शन मात्र से उद्धार एव कल्याण होता है। उनकी किसी छबि को अपने ऊपर उतार कर देखें तो ! [सन्दर्भ ७.५ चित्रावली]

४. श्रीश्रीचच्चाजी सा० कदाचित् ऐसे प्रथम सिद्धपुरुष थे जिन्होंने तीर्थस्थलों को आध्यात्मिक दिव्यशक्ति भेंट किये जाने की आवश्यकता अनुभव की तथा अपने ४००-५०० प्रेमीजनों के साथ मथुरा वृन्दावन, चित्रकूट,काशी,अयोध्या आदि तीर्थस्थलों कीयात्रा इसी अभिप्राय से की। [सन्दर्भ ६.४]

५. श्री श्री चच्चाजी सा० ने संतसाधना पद्धति को मानसिक शक्तियों के शोध परिक्षेत्र में रखा तथा इसके वैज्ञानिक एवं परामनोवैज्ञानिक स्वरूप के प्रति जिज्ञासा प्रकट की। उन्होंने अपने शिष्यों को भी इस क्षेत्र में शोध के लिये प्रोत्साहित किया। वह स्वय इस दिशा में सतत संलग्न रहे। खेद है कि उनकी खोजों का विवरण लिखितरूप में सुलभ नहीं है। [सन्दर्भ ३.१]

६. उन्होंने साधना को प्रमुखतः सदाचार× आधारित बनाया तथा मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सामाजिक सभी क्षेत्रों के लिये सदाचार की व्यवस्था और प्रतिष्ठा की ओर दृढ़ता से पालन करने का आग्रह किया। [सन्दर्भ २.२]

७. माता-पिता के पश्चात् गुरु का स्थान आता है•। पुत्र का पिता से रक्त और संग का घनिष्ठ सम्बन्ध और संस्कार होता है। पुत्र लगभग १८-१९ वर्ष तक पिता की संगत में रहता है और पिता के आचार-विचार से मनसावाचाकर्मणा प्रभावित होता है। साधारणतया १८-१९ वर्ष की आयु के पश्चात् ही गुरुशरणागत होने का अवसर आता

× सदाचार सामाजिक जीवन की कुंजी है। [श्री श्री चच्चाजी सा०]

• 'गुरु किसी भी श्रेणी के हों, सभी शंकररूप हैं', सबसे प्रथम गुरुमाता है। इसके पश्चात् पिता-गुरु हैं। जिन्होंने बालकपन से इन दोनों की आज्ञापालन करते हुए, इनका सत्कार किया, वह निरन्तर उन्नति करते जाते हैं। [श्रीश्री चच्चाजी सा० : कर्त्तव्यपालन और सदाचार]

है या सुलभ होता है। इस परिप्रेक्ष्य में पुत्र का पिता—तद्रूप होना सहज और स्वाभाविक है।

श्री श्री चच्चाजी सा० ने इस मूलभूत वैज्ञानिक तथ्य को भलीभाँति समझा तथा अपनी शरण में आने वाले जिज्ञासुओं के लिये माता-पिता की आज्ञा और सहर्ष सहमति लेना, भाव और प्रेम से उनकी सेवा करना और उन्हें प्राथमिकता देना, अनिवार्य रखा। यदि माता-पिता शरीर त्याग चुके हैं तो अपनी पूजा के प्रारम्भ में उनकी परम-पवित्र आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करने का विधान आवश्यक बताया।

८. इसीप्रकार स्त्री के सहयोग पर भी बहुत बल दिया। उसको अपने विचारों का बना लेने का आग्रह किया। "पर का दिया जलाकर मन्दिर का दिया जलाना" उनकी साधना का दृष्टिकोण था। इस सम्बन्ध में उन्होंने एक पुस्तक "गृहचर्या में नरनारी सहयोग" भी लिखी तथा उसका नियमित पाठ आवश्यक बताया।

९. श्री श्री चच्चाजी सा० अपनी आध्यात्मिक संतति के लिये अपनी सन्तान की भाँति प्रेमीपिता का आदर्श निभाते हैं। उन्होंने कभीनहीं चाहा कि उनकी सन्तान से भी अधिक प्रिय आध्यात्मिक संतति तनिक भी कष्ट उठावें। **सांसारिक कष्टों की ही नहीं, साधनागत कष्टों की भी चिन्ता उन्हें रही। स्वयं कठोर साधन करके उसका सुफल अपनी आध्यात्मिक संतति को मुक्तहस्त लुटाते रहे हैं। रोगभोग के कष्ट स्वयं लेते और भोगते रहे हैं। अपनी आध्यात्मिक संतति की सभी प्रकार की सुख-सुविधा की वह महती चिन्ता करते रहे हैं।** इसकी चरम स्थिति अन्तिम क्षणों में हुई, जब उन्होंने अपने सभी प्रेमीजनों के रोग भोग एवं कष्टों को स्वयं लेने और भोगने का आश्वासन अपने उत्तराधिकारी से प्राप्त किया और सन्तुष्ट एवं प्रसन्नहुए।

[देखें ३.२ टीप-३]

रामनामशुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तनमां रे।
भणे नरसैंयो तेनुं दरसन करतां, कुल एकोतेर तार्या रे।।

२.१—श्री श्री चच्चाजी सा० महात्मा भवानीशंकर जी की आध्यात्मिक ऊँचाई

श्री श्री चच्चाजी सा० कितनी दिव्य शक्ति प्राप्त सिद्ध पुरुष थे, इसका भी अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। दो प्रसंग ही इस सन्दर्भ में संकेत रूप प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

श्रद्धेय श्री मुन्नीलाल जी पाण्डेय नगर के अपने समय के प्रमुख वकील एवं संतसेवी प्रतिष्ठित महानुभाव हुए हैं। उनके यहाँ भक्त एवं सन्त पुरुष प्रायः आते रहते थे। किसी छात्र के महाविद्यालय में प्रवेश आदि के सम्बन्ध में कहने के लिये वह मुझे बुला लिया करते थे। मैं भी यथावसर उनके दर्शन के लिये उनके यहाँ जाया करता था।

जीवन के अन्तिम दिनों में उनको लकवा मार गया था और उनका चलना-फिरना बन्द हो गया था। नवम्बर ७१ के दूसरे या तीसरे सप्ताह की बात है। उन्होंने मुझे बुलाया और बड़े आग्रहपूर्वक कहा "प्रिंसपल सा० आप देख ही रहे हैं कि मैं चल-फिर नहीं सकता। आप किसी प्रकार श्री श्री चच्चाजी सा० को यहाँ लिवा लाओ तो हमें दर्शन होजाय और हमारा काम बन जावे।"

मैंने सायं को श्री श्री चच्चाजी सा० से श्री पाण्डेयजी के निवेदन की बात कही, और आग्रह किया कि वह कृपाकर उनके यहाँ चले चलें। श्री श्री चच्चाजी सा० ने सब सुना और चुप रहे। कुछ कहा नहीं। दो चार दिन बाद श्री पाण्डेयजी ने मुझे फिर बुलाया और कहा कि "ऐसा लगता है कि आप श्री श्री चच्चाजी सा० से निवेदन करना भूल गये।" मैं चुप रहा उन्होंने आगे कहा देखिये, प्रिंसिपल सा० आप जानते नहीं हैं कि श्री श्री चच्चाजी सा० की कितनी आध्यात्मिक ऊँचाई है और वह कितने पहुँचे हुये सिद्ध पुरुष हैं। जब वह ३०–३५ वर्ष के ही रहे होंगे, उस छोटी-सी आयु में उनकी कितनी आध्यात्मिक ऊँचाई थी, उससे अन्दाज लगा लीजिये कि आज ७०–८० की आयु में उनकी कितनी ऊँची आध्यात्मिक पहुँच होगी। उस समय श्री श्री चच्चाजी सा० यहाँ जजी में अमीन थे।

हमारे यहाँ एक सूफी पहुंचे हुये सन्त × आया करते थे। उन्होंने एक दिन हमसे कहा कि "पाण्डेयजी, हम हज करने जाना चाहते हैं लेकिन अभीतक हुक्म नहीं हुआ कि हम अपना चार्ज किसको दे जावें। **हमलोग हज करने के लिये खाली होकर सारी आध्यात्मिक कमाई किसी को देकर, दीन बनकर जाते हैं।'** हमने हँसते हुये कहा "अरे मियाँ तुम्हारे पास काहे का चार्ज है? वह बोले पाण्डेय जी, आप जानते

× इस विवरण का उल्लेख करते समय यह जिज्ञासा हुई कि पता लगाया जाये कि यह सूफी सन्त कौन थे। उस समय श्री पाण्डेय जी से यह नहीं पूछा था और न अवान्तर प्रसंग होने के कारण इसको पूछने की आवश्यकता ही थी।

नगर के लब्धप्रतिष्ठ उन महानुभावों से सम्पर्क किया जो श्री पाण्डेय जी के निकट सम्पर्क में थे—श्री रामगोपालजी शर्मा, समादृत प्रमुख वकील, श्री ब्रह्मचारीजी, प्रसिद्ध तंत्रमंत्र साधक, मिर्जा अहमद बेग अवकाश प्राप्त प्रवक्ता; मुहम्मद यूसुफ, नगर के प्रतिष्ठित रईस एवं तालाब के पास बाजार की दुकानो के मालिक; श्री विजय पाण्डेय एडवोकेट [श्री श्री पाण्डेय जी के सुपुत्र]।

पता चला कि बड़े ख्वाजा सा० के नाम से प्रसिद्ध एक सूफी संत थे, जनाब ख्वाजा अजीजुलहसन गौरी सा० जो हन्फी इमाम के मानने वाले होने के कारण हन्फी कहलाते थे। मज़ज़ूब शायरी का नाम था, जनाब मौलाना असरफ अली सा० थानवी के मुरीद थे। वह अच्छे शायर और आलिम थे। स्कूलों के इन्सपेक्टर थे। इनकी मजार पर यह शेर लिखा है—

थका मुसाफिर, है शाम सर पर, न कोई साथी न कोई रहबर।
फिर ऐसी मंजिल, कि जिससे बढ़कर, कोई सफर पुरखतर नहीं॥

यही जनाब बड़े ख्वाजा सा० आज से लगभग ५०-६० साल पहले हज करने गये थे और अपना चार्ज श्री श्री बच्चाजी सा० को दे गये थे।

नहीं हैं। वह सारा संसार मण्डलों में बँटा हुआ है और एक-एक मण्डल का एक-एक फकीर इंचार्ज होता है। दुनियाँ में जो कुछ होता है, उसका फैसला वे लोग पहले कर देते हैं, उसी के अनुसार आपकी कचहरी और अन्य जगह काम होते हैं। हमने कहा कि होगा, हम तो सचमुच नहीं जानते हैं। ६-७ दिन बाद वह फकीर फिर आये और कहा कि हमें चार्ज देने का हुक्म मिल गया है, हम जल्दी ही चार्ज देकर हज करने जा रहे हैं। हमने पूछा किसको चार्ज देने का हुक्म हुआ है? वह कहने लगे पाण्डेयजी गजब हो गया। आप मुझे देख रहे हैं। सफेदी आ गई है और इस जईफी की उम्र में सारी उम्र की कमाई के बाद मुझको यह ओहदा मिला है कि मैं एक मण्डल का अधिकारी हूं। अब आप देखिये मुझे चार्ज देने का हुक्म किसके लिये हुआ है? आप जानते हैं?

आपके यहां जजी में श्री भवानीशंकर नाम के अमीन अभी आये हैं। उम्र मुश्किल से लगभग ४० के होगी, उनके लिये! गजब है पाण्डेयजी, इनकी इस समय इतनी आध्यात्मिक ऊँचाई है, इंशाअल्ला जब हमारी उम्र के होंगे तो यह कहाँ होंगे। परवरदिगार इनकी मदद करे, और ये ऊँचे से ऊँचा ओहदा हासिल करें। श्री पाण्डेयजी यह सब सुनाते हुये गद्-गद् होगये और बड़े आग्रह से अनुरोध किया कि मैं श्रीश्री बच्चाजी सा० को लिवा ही लाऊँ।

मैंने बड़े संकोच से और बड़े अनुरोध के साथ श्रीश्री बच्चाजी सा० से श्री पाण्डेयजी के यहाँ पधारने की प्रार्थना की। श्री श्री बच्चाजी सा० चलने को तैयार हो गये। मैं रिक्शा ले आया। श्री पाण्डेयजी के यहाँ पहुंचे। श्री पाण्डेयजी के सिर पर दोनों हाथ रखे, लगभग ५ मिनट तक वह मौन खड़े रहे। इसके बाद कुर्सी पर बैठ गये और इधर-उधर की साधारण बातें करने के बाद वापिस चले आये।

२-३ दिन बाद जब मैं श्री पाण्डेय जी के दर्शन करने गया तो वह बड़े भाव-विह्वल होकर बोले "प्रिंसपल सा० हम आपसे उऋण नहीं हो सकते। हमारा काम हो गया। बड़ी कृपा की उन्होंने। हम आपको क्या

बतावें ? ऐसा सिद्ध सन्त इस समय कोई और होगा, हमें नहीं लगता। आपके अहोभाग्य कि आपको उनकी शरण मिली।" [४-१२-७१ को श्री पाण्डेय जी ने इहलीला समाप्त की] मैं सचमुच कुछ नहीं समझा। आज भी कुछ समझ में नहीं आता है। यह अवश्य है कि वह दृश्य आँखों में समय-समय पर कौंध जाता है और मुझे यह पद स्मरण हो आता है–

कबहुं सो करसरोज रघुनायक,
धरिहौ नाथ सीस मेरे।

टीप : श्री पाण्डेयजी के सम्पर्क के एक और सूफी फकीर का भी सन्दर्भ नगर के पूर्वलिखित महानुभावों से मिला। यह फकीर औरंगावाद के थे। इनको हजरत चच्चा कहते थे। इनका इस्मशरीफ था जनाब किब्ला अब्दुल हमीद सा०। इनके पास श्री पाण्डेयजी तथा स्थानीय एक और सूफी फकीर जनाब किब्ला शाह सा० जाते थे। एक श्रीवास्तव जज सा० भी इनके मुरीद हो गये थे। (जो बाद में गाजीपुर में जज रहे थे)।

एक श्री नारायण स्वामी भी उनके भक्त थे। श्री नारायण स्वामी आजकल बनारस में (दैत्याबीर का मैदान, जगमवाड़ी बनारस में) बताये जाते हैं।

श्री शाह सा० के सुपुत्र श्री मिर्जा अहमद बेग ने बताया कि उनके पिताश्री भी हज करने जाना चाहते थे और जुलाई १९५८ में हज करने गये थे। वह भी अपनी सारी आध्यात्मिक कमाई श्री श्री चच्चाजी सा० को सुपुर्द करके खाली होकर गये थे और कोई इतना समर्थ ही नहीं था कि यह काम कर सकता।

> "जहाँ कष्ट और दुःख अधिक होते हैं और जहाँ उनसे बचने के साधन नहीं जुटते वहीं मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है और वहीं मनुष्य को ईश्वर में दृढ़ विश्वास होता है।" [कर्त्तव्यपालन और सदाचार]

२.२ दूसरा प्रसंग–

२.२ श्री श्री चच्चा जी सा० की प्रेमीजनों पर हुई कृपा तथा अलौकिक क्षमता के अनेक उदाहरण हैं। यहाँ केवल एक संदर्भ दिया जा रहा है। श्री ठा० रामपालसिंह शिकोहाबाद मु० खेड़ा में म० न० ८३ के निवासी हैं। वह श्रीश्री चच्चा जी सा० के अनन्य प्रेमीजन हैं। उनकी धर्म पत्नी श्रीमती रामदुलारी हैं। उनकी बड़ी लड़की श्रीमती माधुरी हैं। घटना दशहरा समारोह १९६५ की है। दशहरा समारोह पर सभी स्थानों से प्रेमीजन उरई आते हैं। श्री रामपालसिहजी का परिवार भी आनेवाला था। उसी अवसर पर एक दो दिन पूर्व एक साधू उनके मकान पर आया और भिक्षा मांगने लगा। उसने कु० माधुरी से कहा कि बेटी बुरा न मानो तो एक बात कहूं, देखो, तुम्हारी मां इसी दशहरा की एकादशी को मर जायगी। कु० माधुरी बहुत नाराज हुई, तो वह बोला बिटिया नाराज न हो। मैंने तो सच्ची बात कह दी। बुरा मानने की कोई बात नहीं है। ला भिक्षा। मैं चलू। उससे पूछा भिक्षा में क्या लेगा। उसने कहा केवल किसी अन्न के पाँच दाने। भिक्षा लेकर वह चला गया। यहां घर पर परेशानी हुई तो श्रीमती रामदुलारी ने समझा दिया कि बाबा लोग तो ऐसे ही कह जाते हैं, फिर मौत हुई भी तो होगी उरई में श्रीश्री चच्चाजी सा० के यहां। दशहरा के बाद की एकादशी को तो वहीं होंगे। बात आईगई होगई। दशहरा पर पूरा परिवार समारोह में सम्मिलित होने उरई आगया। दशहरा सकुशल व्यतीत हो गया। एकादशी की शाम को पूजा के पश्चात् श्रीमती रामदुलारी पुराने सत्संगआश्रम के ऊपर के कमरे में बैठी हुई थीं। भाई राजपालसिंह पान लेकर आये और बोले कि यह प्रसाद का पान है। खालो। उन्होंने पान खा लिया। थोड़ी देर के बाद उनको चक्कर-सा आने लगा और बेहोश हो गई। मुंह पर पानी डाला और काफी हवा की, किन्तु कोई लाभ नहीं मिला। श्री श्री चच्चा जी साहब के पास सूचना देने गये तो पाया कि श्रीश्री चच्चा जी दरवाजा अन्दर से बन्द किये है। काफी देर तक उपचार होता रहा।

(शेष पृष्ठ ०५२ पर)

जनक सुता जगजननि जानकी अतिसय प्रिय करुना निधान की।
ताके जुगपद कमल मनावऊं, जासु कृपा निर्मल मति पावऊं ॥

श्रीश्री गुरु माता : अम्मा जी

राधे तू बड़ भागिनी कौन तपस्या कीन।
तीन लोक तारन तरन सो तेरे आधीन॥

स्याम स्याम रटत राधे आपुहि स्याम भई।
पूछत फिरति आपुन सखिइनि सो, राधे कहां गई॥

परमसंत जगज्जननी भगवती श्रीमती राधा मातेश्वरी जी, श्रीश्री चच्चा जी सा० की परम साध्वी सहधर्मिणी हैं, जिनको, श्रीश्री चच्चा जी सा० अपनी द्वितीय पुत्री सुश्री पुष्पादेवी जी के सम्बन्ध से 'पुष्पादेवी की मां' कहकर सदर्भित एव संबोधित करते हैं। श्रीश्री अम्मा जी की प्रत्येक प्रेमीजन पर विशेष दया व कृपा थी। वह अपनी संतान के समान उनसे प्रेम करतीं और उनके योगक्षेम के लिए विकल रहतीं। प्रेमीजन उन्हीं के द्वारा श्रीश्री चच्चा जी सा० की कृपा प्राप्त करते रहे हैं।

मेरा अब तक का दृढ़ निश्चय है कि पुष्पादेवी की मां का मुझसे कहीं अधिक, श्री गुरुदेव के कमलस्वरूपी चरणों में श्रद्धा के साथ प्रेम था जैसा कि उसने इस असार संसार से यात्रा करते समय अपने सत्य और पवित्र प्रेम का परिचय दिया था

[श्रीश्री चच्चा जी सा० : सदाचार पत्रिका से उद्धृत]

श्री अम्माजी का पावन स्मरण-

'मेरी बाल्यावस्था में ही मेरे भौतिक शरीर के जन्मदाता मातापिता का समस्त परिजनों सहित परलोक वास हो गया था। जगज्जननी भगवती श्री सीता जी मेरी वास्तविक माता तथा भगवान श्रीराम मेरे वास्तविक पिता हैं', ऐसी मेरी सुदृढ़ भावना हो चुकी थी।

परमपूज्य चच्चा जी सा० के रूप में मैंने भगवान राम को प्राप्त किया। प्रथम दर्शन में ही ऐसा प्रतीत हुआ, हृदय ग्रन्थि खुल गई है, सारे संदेह नष्ट हो गए हैं तथा कर्मों द्वारा प्रादुर्भूत संस्कार भस्म हो गए हैं। ·· ··· मेरे मन में श्री अम्माजी महारानी के दर्शनों की लालसा जाग्रत हुई, बढ़ी और आन्तरिक व्याकुलता के रूप में परिणत हो गई।

श्रीश्री चच्चा जी सा० का ट्रान्सफर ललितपुर से उरई हो गया। उनको पहुँचाने मैं भी स्टेशन गया। श्रीश्री अम्माजी परिजनों सहित प्रतीक्षालय में थीं। मैंने प्रणाम कहलाया। उन्होंने मुझे बुलवा लिया। प्रतीक्षालय के कक्ष में पहुंचते ही मैं अपने आप को भूल गया श्रीश्री अम्माजी के चरणों में कब दण्डवत गिर पड़ा, ज्ञात नहीं। कुछ क्षण मन बुद्धि चित्त तथा अहंकार सब शून्य में विलीन थे। मैं कह नहीं सकता, वह समाधि की अवस्था थी, अथवा उससे ऊपर की। थोड़ी देर में चेतना लौटी तो देखा कि सारा कक्ष प्रकाशपूर्ण था। अद्‌भुत मादक सुगन्धि व्याप्त थी। आंखे खोलकर श्रीश्री अम्माजी की ओर देखा तो मुझे साक्षात् जगज्जननी सीताजी महारानी का वही रूप दिखा जिसकी कल्पना मेरे मन में बसी थी।

देवि पूजि पद कमल तुम्हारे।
सुर नर मुनि सब होंहि सुखारे।।

परम पूजनीया अम्माजी के माध्यम से ही परम पूज्य चच्चा जी महाराज के गुणों का दिग्दर्शन होता है; जैसे प्रकृति का आधार लेकर ब्रह्म साकार होता तथा लीलायें करता है। श्रीश्री चच्चाजी सा० कृपा, दया तथा क्षमा की मूर्ति थे। ये सब पूजनीया अम्मा जी महारानी के गुण थे जो उनमें बिम्बित होते थे। अम्मा जी महारानी करुणा तथा दया की साक्षात् मूर्ति थीं। भक्तों के कुसंस्कारों को

अपने ऊपर लेकर भोगा करतीं, इसलिये बहुधा अस्वस्थ रहती थीं

अम्मा जी महारानी की भक्ति ही सार है। लोग शिशु से भी अधिक असहाय हैं, सविकार हैं। मां ही ममतावश रक्षा करती और उद्धार योजना बनाती हैं। जो लोक-परलोक में कल्याण चाहते हैं, परमपूज्या अम्मा जी की शरण ग्रहण करें, उन्हीं से प्रार्थना करें, उनके सामने रोयें। वह सब कार्य सिद्ध करेंगी तथा श्रीश्री चच्चा जी सा० से आग्रह अनुरोध कर पावन श्री चरणों में सच्चा प्रेम जाग्रत करावेंगी–

कबहुँक अंब अवसरु पाइ ।
मेरियौ सुधि द्याइबी कछु करुन कथा चलाइ ॥

आध्यात्म रामायण में भगवती सीताजी का हनुमानजी को ऐसाही उपदेश है- 'वत्स ! सुनो, प्रभु राम निष्कल निर्विकार मायातीत हैं न इन्होंने कभी कुछ किया है न करते हैं। इनकी प्रेरक शक्ति लेकर इनके सान्निध्य में मैं ही सब कुछ करती हूं।'

[श्रीश्री अम्मा जी के परम भक्त एवं उनपर महाकाव्य के रचयिता श्री भगवतीशरणदास (झांसी) के लेख से साभार उद्धृत]

श्रीश्री अम्माजी, आपके पावन श्री चरणों में मेरे मनमस्तक एवं मेरे कर हर समय विनत रहें और स्पर्श करते रहें, आपके वरदा सुखद करकमल मेरे सिर पर आशीर्वाद के लिये नत रहें, ऐसी दया कीजिये।

ब्रजवासी

पृष्ठ ४९ का शेष

सबको बड़ी परेशान मालूम होने लगी। कुछ लोगों ने चुपके से नब्ज देखी और परेशान हो गये। डा० ऊषा ग्रोवर को बुलाया। डा० ने ब्लडप्रेशर लिया तो पारा चढ़ता ही नहीं था। वह कुछ कहने ही वाली थी कि श्रीश्री चच्चा जी सा० आ गये और कहा कि ठीक है। डाक्टरनी को फीस दे दो और जाने दो। सब लोगों को बैठने को कहा और उच्च स्वर से 'हरी ॐ तत्सत' कहने को कहा। थोड़ी देर में श्रीमती रामदुलारी ने आँख खोली। बाद में पता चला कि श्रीश्री चच्चा जी सा० अपने कमरे का दरवाजा बंद करके श्रीमतीरामदुलारी की दिवगत आत्मा का पीछा करतेहुये गये थे और उसको वापिस लेकर आये थे। इसप्रकार श्रीमती रामदुलारी को प्राणदान मिला। श्री श्री चच्चा जी सा० साक्षात् शंकररूप होकर "भाविहु मेंटि सकहिं त्रिपुरारी" को चरितार्थ करते रहे हैं।

भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर नाम बपु एक ।
इनके पद बंदन किएँ नासत विघ्न अनेक ॥

१. –संत

- १–ईश्वर रूप
- २–सर्वकालीन सजीव एवं सचेतन
- ३–मानसिक उपस्थिति एवं शिष्य की रक्षा
- ४–परदुःखकातर; दयालु
- ५–प्रेमावतार

–संत–

"...............पहुंचा हुआ फकीर सर्वदा अनन्त के साथ अपने स्वधर्म का अनुभव करता है। उसका वैश्वानर शरीर विराट का विश्व है। जाग्रत अवस्था में उसे मालूम पड़ता है कि संसार की हलचल उसके भीतर हो रही है, कुछ भी उसके बाहर नहीं और वह सम्पूर्ण सत्ताओं की समष्टि है। संत का तैजस्य प्राणमय शरीर हिरण्यगर्भ विश्व का आधार है। स्वप्न अवस्था में संत समझता है कि सारा विश्व उसके ऊपर विश्राम कर रहा है। उसका प्राज्ञ मानसिक स्वयं प्रज्ञ ईश्वर है जो सम्पूर्ण सृष्टि को उत्पन्न करके उसका नियमन करता है। संत की सुषुप्ति प्रलयावस्था है जो भूत और भावी सबकी शृंखला को अपनी अटूट प्रज्ञा से जोड़ रही है। संत अपनी तुरीय अवस्था के सहज अनुभव में आनन्दमय ब्रह्म है........."

–एक प्रेमी भाई के नाम लिखे
श्री श्री चच्चा जी साहब के पत्र से

संत कभी प्रकट नहीं होता, केवल जिज्ञासु ही उसकी शक्ति का अनुभव कर सकता है। साधारण व्यक्ति के लिए वह सदैव साधारण रहेगा।"

(श्री श्री चच्चा जी सा० : नरहरि उपदेश से)

१.१- संत : ईश्वर रूप

झांसी २२-८-४६
सायं सत्संग प्रवचन

" संत और अवतार में फर्क है। संत और ईश्वर में कोई भेद नहीं होता है। जो ईश्वर का विधान है उसी के अनुसार संत स्कीम बना देता है और अवतार को इस स्कीम के अनुसार काम करना पड़ता है। संत और ईश्वर की मर्जी में कोई भेद नहीं होता..............."

टीप- पूज्यपाद महात्मा श्री श्री रघुवर दयाल जी। (श्रीमान् चच्चा जी साहब (कानपुर) के भी गुरु के संबंध में ऐसे ही विचार थे..........

"ईश्वर को, ईश्वर से, ईश्वर के लिए पाओ। ईश्वर साक्षात् गुरुदेवजी के सगुण रूप में विराजमान है। उन्हीं की कृपा से उनका रहस्य खुलता और प्राप्त होता है।"

-स्वामी विवेकानन्द ने भी ईश्वर साक्षात्कार के संदर्भ में ऐसे ही विचार व्यक्त किये हैं..........

"ईश्वर सर्वव्यापी है। प्रत्येक प्राणी में ईश्वर अपने को व्यक्त करता है। पर मनुष्य के लिए तो वह मनुष्य ही दिख सकता है और पहचाना जा सकता है। जब उसका प्रकाश, उसकी व्यापकता उसकी आत्मा मनुष्य के दिव्य चेहरे में दमकती है, तभी मनुष्य उसे समझ पाता है। इस प्रकार मनुष्य सदैव मनुष्य के द्वारा ही ईश्वर की पूजा करता आया है और जब तक वह स्वयं मनुष्य बना रहेगा, तब तक इसी तरह ईश्वर की पूजा करता रहेगा। वह चाहे इसके विरुद्ध कितना भी क्यों न चिल्लाये, पर ज्यों ही ईश्वर से साक्षात्कार का प्रयत्न करेगा त्यों ही उसे दीखेगा कि ईश्वर का मनुष्य के रूप में चिन्तन करना उसकी प्रकृति के लिए नितान्त आवश्यक है"

१.२- संत : सर्वकालीन सजीव एवं सचेतन

महात्मा लोग भवसागर से स्वयं पार होकर बिना कारण ही सहज स्वभाव से संसार समुद्र में डूबते प्राणियों का उद्धार करने के लिए संसार में निवास करते हैं। * (मैं निवास कर रहा हूं)

---

* गृहचर्या के उपयोगी नियम" के ९ वें पाठ से उद्धृत।

महात्मा जी नक्श बंदिया मुजद्दिया मजहरिया सूफी सिलसिले के संत श्री श्री लालाजी सा० के प्रमुख शिष्य हैं।

इस सिलसिले को शोध विषय बनाकर श्री मुहम्मद हनीफ ने १९६४ में आगरा विश्वविद्यालय में पी-एच. डी. के लिए शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया है। इस शोध प्रबन्ध में डा. हनीफ ने खोज करके लिखा है कि इस सिलसिले को अवेसी (Awesi) भी कहते है। अवेसी का अर्थ है वह सिलसिला जिसमें परदा कर गये बुजुर्गों से सम्पर्क रहता है और उनसे इस योग विद्या को सीखते हैं। उन्होंने इस सिलसिले के संस्थापक बुजुर्गों (र. अ.) जनाब नक्श बंद साहब (र. अ.) जनाब मुजद्द साहब तथा (र अ.) जनाब मज़हर साहब के संबंध में लिखा है कि इन महानुभावों ने जितनी यह विद्या अपने शरीरधारी गुरुओं से सीखी, उससे कहीं अधिक अपने परदा कर गये बुजुर्गों से सीखी।

महर्षि श्री अरविन्द ने ५ दिसम्बर १९५० को शरीर त्याग किया था। इस अवसर पर श्रीमां ने उनके प्रेमियों को इस प्रकार उद्बोधित किया था। "श्री अरविन्द के लिए दुःखी होना, श्री अरविन्द का अपमान करना है। श्री अरविन्द हम लोगों के साथ हैं, **पहले की तरह सजीव और सचेतन**। वह हम लोगों को छोड़कर नहीं जा सकेंगे। हम उनकी उपस्थिति को पहले की तरह,पहले से भी अधिक जाग्रत और जाज्वल्यमान अनुभव करते है,। वे सदा हमारे साथ हैं, जो कुछ हम कह रहे हैं, सोच रहे हैं, अनुभव कर रहे हैं, सबके रूप में।......... वस्तुतः किसी भी योगी की मृत्यु जिसे हम सामान्यतया "मृत्यु" कहते हैं, होती ही नहीं उसकी चेतना भौतिक शरीर की मर्यादा से अधिक होती है और जब वह सशरीर

होता है तब भी वह इस दैहिक आवरण से बहुत ऊपर और महान होता है। वह मनुष्य जाति के लिए जो कार्य करता है वह भी मूलतः उसकी ...तम और विशाल आत्मा का कार्य होता है–उस आत्मा का जो ...तन भगवान की असीम एकता में पूर्णतया सजग रूप में अमरत्व का ...ग करती है और जिसके लिए वास्तव में जीवन और मृत्यु, दोनों स्वांग ...त्र है।

(अग्निशिखा : दिसम्बर ८८ पृष्ठ १६.१७ से साभार उद्धृत)

श्री श्री चच्चा जी महाराज तथा उनके समर्थ सद् गुरुदेव श्री श्री लालाजी महाराज और सिल-सिले के उनसे पूर्व के बुजुर्ग और वर्तमान में परदा कर गये अन्यान्य आचार्यगण भूत में थे, वर्तमान में हैं तथा भविष्य में रहेंगे। हमें उनकी उपस्थिति यथापूर्व अनुभव करनी चाहिये। उनसे अब भी पूर्ववत् साधन तथा अन्यान्य समस्याओं सम्बन्धी निर्देश एवं जानकारियां मिलती रहेंगीं तथा उनकी दया व कृपा का अनुभव होता रहेगा। जब वह सशरीर थे, उस समय भी तो हमारे प्रत्यक्ष में वह कुछ समय या अवधि के लिए ही हो पाते थे,। शेष समय में तो यह विश्वास बना रहता था कि 'वह हैं'। इस विश्वास को ही बनायेरखना है। यह विश्वास ही साधक का संबल और सहारा है। ईश्वरकृपा करें।

ऐसे अनेक प्रेमीजनों के उदाहरण आज मिल रहे हैं जिन्होंने सशरीर कभी इन बुजुर्गों को नहीं देखा, अब चित्र देख कर अपनी अनुभूतियां बताते हैं कि यह बुजुर्ग उन्हें दिखे थे या इन्हीं बुजुर्ग ने उनकी रक्षा की थी। प्रेमीजनों पर इसी प्रकार कृपा व दया होती रहेगी, इस विश्वास से बल मिलेगा तथा साधना-पथ प्रशस्त होगा।

–पूज्यवाद श्री श्री महात्मा प्रभूदयाल जी, पेशकार साहब (श्री श्री चच्चा जी साहब के बड़े भाई) ने अपनी आत्मकथा में पूज्य

पाद श्रीमान् चच्चा जी साहब (कानपुर) के इसी प्रकार के भाव का उल्लेख किया है।

बाबू सूरजप्रसाद जी के यहाँ उरई में मुण्डन था। श्रीमान् चच्चा जी भी तशरीफ ले गये थे। चौक पर मुण्डन की रस्म करने के लिये आपसे आग्रह किया गया। श्री श्री पेशकार साहब ने श्रीमान् चच्चा जी साहब से कहा कि आप बुजुर्ग हैं। यह रस्म आपको ही अदा करनी चाहिये। आपके चेहरे पर तमतमाहट आ गई और आवेश में बोले कि मैं कैसे बुजुर्ग हो गया? जनाब श्रीमान् लाला जी साहब मौजूद नहीं हैं?... ... ... आप हमेशा लाला जी साहब को मौजूद समझते थे। कभी यह ख्याल ही नहीं किया कि वह परदा कर गये हैं।

[आत्मकथा पृ० १०६]

श्रीमान् चच्चा जी साहब (कानपुर) के उपदेश में भी ऐसी ही व्यवस्था है" ... ... पूज्य लाला जी हुए, ऐसा नहीं, किन्तु वे हैं। केवल रूप बदलता है। पहले एक रूप थे अब अनेक। सारे सतजन हो गये थे, यों नहीं बल्कि वे हैं। जो है सो वर्तमान है, संदेह की जगह नहीं रहे।

(पीयूष वाणी तृतीय सं० पृ० १४४)

—श्री भगवान के भक्तों में दया और पवित्रता उसी भाँति रहती है, जैसे फूल में गंध वास करती है।

(श्री श्री चच्चा जी साहब

१.३—संत : मानसिक उपस्थिति एवं शिष्य की रक्षा

१.३.१—मानसिक उपस्थिति

११२, खत्रियाना, झांसी
१९-४-४९

प्रिय... ... ...

ईश्वर कृपा करें। प्रेम पत्र मिला। बच्चा पैदा होने का समाचार मालूम होकर ईश्वर को धन्यवाद दिया। ईश्वर अपनी विशेष कृपा व दया से उसे सुरक्षित रखें। २१ तारीख को आप मानसिक रूप से मुझे वहीं समझिये।

शुभ चिन्तक
—भवानीशंकर

१.३.२—रक्षा

झांसी
८-८-४९

गुरु महाराज की विशेष कृपा हुई कि यहां तक ही कष्ट पहुंचा। हालात मौजूदा को गनीमत समझकर ईश्वर को धन्यवाद दें कि अपनी कृपा व दया द्वारा आपको बचाया...... गुरु महाराज आपकी रक्षा करें।

शुभ चिन्तक
—भवानीशंकर

टीप—श्री गुरुदेव मानसिक रूप से हमारे विशेष अवसरों पर उपस्थित रहते हैं तथा अन्यथा हर समय हमारे साथ रहते हैं तथा हमारे योगक्षेम को वहन करते हैं, हमारी रक्षा करते हैं। प्रायः प्रेमीजनों को ऐसे अनुभव होते हैं कि आपातकाल में गुरुदेव ने प्रकट होकर रक्षा की अथवा कोई अन्य व्यक्ति उस समय हमारे सहायक एवं रक्षक के रूप में प्रकट हुआ और अनायास ही हमारी रक्षा और सहायता करके गायब हो गया।

१.४– संतः परदुःखकातरः दयालु

झांसी सत्संग २१–२–४६
सायं पूजा के बाद समाधान

संत महापुरुष दो प्रकार के होते हैं। एक ऐसे कि दूसरों के अवगुण या भोग को निकालकर बाहर फेंक दिया। फिर उनको इससे मतलब नहीं कि वह कहां गया और उसका क्या हुआ। † दूसरे संत या महापुरुष ऐसा नहीं करते। वह दूसरों के अवगुण या परेशानी या बीमारी को अपने ऊपर ले लेते हैं और जब तक उसका समय है, उसी तरह भोगते हैं और समय आने पर उसको इतना साफ करके निकाल देते हैं कि फिर उसका कोई अंश बाकी नहीं रहता।"

---

† ... ... सबसे बढ़िया बात मैं तुमको बताता हूं जो मेरे गुरु महाराज ने खास ऐसे ही मौके के लिए मुझको बतलाई थी ... ... जिस शख्स से तुमको खौफ है ... ... जब कभी उसके पास जाने का मौका मिले तो ... ... जब सांस बाहर की तरफ से अन्दर को लेते हो तो यह ख्याल करो कि तुम्हारी तरफ से बुराई के ख्याल उसके दिल से तुमने घसीट लिए हैं और एक तरफ उनको फेंक दिया है।

[श्री श्री लाला जी सा० का पत्र एक प्रेमी
भाई के नाम दि० १३।४।१९२४ : श्री राम सदेश
सं० १९७४ से साभार संकलित]

टीप—श्री श्री चच्चा जी सहाब का जीवन परदुःखकातरता का उच्च आदर्श था। अन्तिम समय तक वह दूसरों के भोग भोगते हुए विदा हुए थे। बलरामपुर अस्पताल लखनऊ के प्राइवेट वार्ड में जुलाई १९७३ में अन्तिम समय में उपचार हेतु आप दाखिल हुए थे। लखनऊ के एक प्रसिद्ध शाक्त तांत्रिक श्री भारतीय जी को अपने ध्यान में आभासित हुआ कि कोई बहुत बड़े संत लखनऊ आये हैं। उन्होंने अपने शिष्यों को दर्शन के लिये भेजा और दूसरे दिन फूल लेकर बड़े भाव व प्रेम सहित स्वयं आये। भाव विह्वल होकर दर्शन किये और प्रार्थना की कि 'महाराज'! यह क्या कर रहे हैं? दूसरों के भोग भोगते हुए इतने कष्ट उठा रहे हैं। हमें दे दीजिये। श्री श्री चच्चा जी साहब ने हाथों से संकेत किया कि सब ठीक है, चिन्ता न करें। इस प्रकार अन्तिम क्षण तक दूसरों के भोग भोगते हुए शरीर त्याग किया। उनके जीवन की अनेक ऐसी घटनायें हैं जिनसे प्रकट होता है कि दूसरों के भोग भोगने की तो मानो उनकी प्रकृति बन गई थी। अन्तिम दिनों में तो ऐसा लगता था कि वह अपने समस्त प्रेमी सत्संगी भाइयों के रोग भोग स्वयं लिये जा रहे हैं और अपने प्रेमीजनों को सभी प्रकार से सुखी और प्रसन्न छोड़ना चाह रहे हैं।

—संसार में सबसे अमूल्य यदि कोई वस्तु है, तो यह नरदेह है।

[श्री श्री चच्चा जी साहब]

१.५–संत : प्रेमावतार :

१.५.१–अपने प्रेमी-जनों के प्रति उनका प्रेम

चिन्ता दीन दयाल को, मो मन सदा अनंद।
जायो सो प्रतिपालसी, रामदास गोविन्द ॥

१.५.१.१–प्रेमी जनों के स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता

झांसी
७–७–४१

प्रिय··· ··· ··· ···परमात्मा गुरुदेव सदैव आपकी रक्षा करें।

जब मैं तुम्हारे प्रफुल्लित शरीर को देखता हूं, मुझे शांतिमय प्रसन्नता प्राप्त होती है। लेकिन जब कभी उसमें उदासपन या मलिनता के आवरण दिखलाई पड़ते हैं तो चित्त को खेद होता है। अतः अपने चित्त को प्रसन्न रखने तथा स्वास्थ्य को ठीक-ठाक रखने का साधन करते रहिये। ··· ··· ··· ··· ···

—भवानीशंकर

टीप– १- श्री श्री चच्चा जी साहब अपने प्रत्येक प्रेमी भाई को अतिअधिक प्रेम करते थे। यही कारण था कि प्रत्येक प्रेमी भाई यह समझता था कि वह उसको सबसे अधिक प्रेम करते हैं। इस प्रेम सम्बन्ध में उनको प्रेमी भाई के स्वास्थ्य, सुख, सुविधा सभी बातों की चिन्ता रहती थी। उनका प्रेम परम पिता परमात्मा के प्रेम की भांति अहेतुक था एवं सभी प्रकार प्रेमीजन का कल्याणकामी था। इस प्रेम के विह्वल भाव में ही वह दुःखकातर होकर प्रेमीजनों के रोग-भोगों को स्वयं ले लिया

करते थे तथा स्वयं भोगते थे। प्रेमीजनों को सदा प्रसन्न ही देखना चाहते थे। प्रेमी-जनों की अनेक घटनायें हैं जिनमें श्री श्री चच्चा जी साहब ने उनको कष्टों से मुक्त किया है या तेग तलवार, के वार के भोग को सुई के चुभने जैसे नाममात्र के भोग से कटवा दिया है।

२- "पूज्य चच्चा जी" कहते थे कि अपने सभी सत्संगियों को उन्होंने अपनी आत्मा से सींचा है, वे सब उनकी आत्मा ही हैं। उनको वह अपना ही रूप समझते थे। ··· ··· पूज्य चच्चा जी कहते थे कि प्रेम में न जाति-पांति का भाव, न नीच-ऊँच का भाव, न छोटे-बड़े का भाव अथवा किसी भी प्रकार की कोई अन्य वासना या भाव नहीं रहता। सर्वत्र प्रेम ही प्रेम दिखाई देता है। ··· ··· ··· (संत और साधक के) प्रेम मिलन की स्थिति वैसी ही होती है जैसे कोई उमड़ती हुई नदी समुद्र में मिलती है, कोई सती नारी अपने प्रियतम को पाकर आनन्द विभोर होती है, चन्द्रमा और चकोर का मिलन होता है, अंधे को दृष्टि मिलती है अथवा जीव को ब्रह्म की प्राप्ति होती है।' (सदाचार संदेश, पृष्ठ ४० भाई श्री काशीप्रसाद जी के "मेरे गुरुदेव" लेख से साभार)

—परिवार वालों से प्रेम करना ईश्वरीय प्रेम करने का सरल व सुगम साधन है।
(श्री श्री चच्चा जी सा०)

१.५.१.२ अपने प्रेमीजनों के स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता : एक अन्य प्रसंग

ॐ सत्संग आश्रम
५१/२ चन्द्रनगर, उरई
८–७–७०

प्रिय··· ··· ···जी,

ईश्वर आपका भला करें ।

आपकी तरफ से श्री··· ··· के स्वास्थ्य की सूचना पाने का इंतजार कर रहा था । आज आपके पत्र से उनके कष्ट का विवरण के साथ हाल मालूम हुआ ।

ईश्वर को धन्यवाद है कि उनकी मुसीबत की घड़ियाँ टल गई । ईश्वर कृपा से उनकी हालत में दिन प्रतिदिन सुधार हो रहा है । ईश्वर कृपा से शीघ्र पूर्ण स्वास्थ्य लाभ हो जायेगा······को मेरा हार्दिक आशीर्वाद । उनकी हालत से सूचित करते रहिये ।

शुभचिन्तक
भवानीशंकर

ॐ भवानी शंकर सत्संग आश्रम
५१/२ चन्द्रनगर, उरई
१३-७-७०

प्रिय··· ··· ···ईश्वर कृपा करें ।

··· ···श्री··· ···के स्वास्थ्य में निरन्तर लाभ होने का हाल जान कर बहुत संतोष हुआ । ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनको शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो, कष्टों से जल्दी छुटकारा मिले । उनके हाल से बराबर सूचित करते रहिये··· ··· ।

शुभचिन्तक,
भवानीशंकर

१.५.१.३ अपने प्रेमीजनों के दायित्वनिर्वाह के प्रति चिन्ता

ॐ

भवानीशंकर सत्संग आश्रम
५१/२ चन्द्रनगर,उरई
२५–७-७०

प्रिय......... ईश्वर कृपा करें

कल मैंने आपके पास एक पत्र भेजा है जिसमें लिखा था कि कालेज ३१ जुलाई को खुलेगा । आज ज्ञात हुआ कि कालेज ३० जुलाई को खुलेगा। अतः आप २९ जुलाई तक उरई आजाइए...

शुभचिन्तक
भवानी शंकर

—वस्तुतः जब माता,पिता, अध्यापक तीनों धार्मिक, विद्वान और सदाचारी हों, तभी मनुष्य ज्ञानवान तथा सदाचारी बनकर अपने कर्तव्य का यथार्थ पालन कर सकता है।

(श्री श्री चच्चा जी साहब)

१.५ संतः प्रेमावतार—

१.५.२. अपने गुरुदेव के प्रति उनका आदर्श प्रेम

गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर श्रीश्री चच्चा जी साहब अपने शिष्यों की पूजा व चरण वन्दना किया करते थे। अपने शिष्यों को वह अपने गुरु द्वारा भेजा हुआ उनका प्रतिनिधि ही नहीं प्रत्युत प्रतिरूप मानते थे। इसी भाव व प्रेम से वह अपने शिष्यों की पूजा करते थे। इसलिए उनसे कभी कोई भेंट स्वीकार नहीं करते थे उनका शिष्य पूजन का यह आदर्श विश्व के किसी भी धर्म—सम्प्रदाय में सुलभ नहीं है। भाव व प्रेम की उनकी यह साधना संतमत के लिए एक अनुपम देन है तथा अपने आप में साधन विधि अथवा प्रक्रिया की एक सरल भाव प्रधान पद्धति है। कदाचित संतमत साधना की यह उच्चतम स्थिति है जो अपनी सरलता में अन्यथा सर्वश्रेष्ठ है। श्री श्री चच्चा जी साहब अपने समर्थ सद्गुरुदेव श्री श्री लालाजी साहब के अनन्य भक्त तथा सर्वभावेन समर्पित साधक थे। चौबीसों घण्टे वह अपने श्री श्री गुरूदेव के ध्यान में डूबे रहते थे। उनका नाम, उनका ध्यान ही उनकी दिनचर्या थी।

श्री श्री चच्चा जी साहब अपने प्रेमीजनों को रामनाम मंत्र देते थे, रामनाम का जाप करने के लिए कहते थे। हमारे पूज्य पिता जी भी जो वृद्ध थे उनकी आज्ञानुसार ५०० माला प्रतिदिन राम नाम जाप कर लेते थे। राम रक्षा स्तोत्र, रामचरितमानस का पाठ कराते थे। "श्री राम जय राम जय जय राम" की धुनि कराते थे। "श्री रामचन्द्रायनमः" उनका प्रिय मन्त्र था।

राम रक्षा स्तोत्र का यह श्लोक उनका धर्म और दर्शन था—

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुः
नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥

[मेरे गुरुदेव श्रीराम मेरी माता हैं, मेरे गुरुदेव श्रीराम मेरे पिता हैं- मेरे गुरुदेव श्रीराम मेरे स्वामी हैं और मेरे गुरुदेव श्रीराम ही मेरे सखा हैं, मेरे दयालु गुरुदेव श्रीराम चन्द्र ही मेरे सर्वस्व हैं। उनके सिवाय और किसी को मैं नहीं जानता, बिल्कुल नहीं जानता।]

टीप : १–उनके इस वैष्णवी कार्यकलाप को सिलसिले के इस्लामी कर्मकाण्ड के प्रति आस्थावान प्रेमीजन, उचित नहीं समझते थे किन्तु श्री श्री चच्चा जी के गुरुप्रेम एवं गुरु के प्रति अनन्य समर्पण भाव की दृष्टि से उनकी यह साधना सर्वश्रेष्ठ थी। यह राम दशरथ के राम नहीं प्रत्युत उनके अपने राम, सद्गुरु देव श्री श्री रामचन्द्र जी (फतेहगढ़ी) थे। उन्हें रामचरित मानस, रामस्त्रोत आदि इसीलिये परम प्रिय थे क्योंकि इन सब में उनके पूज्यपाद गुरुदेव का नाम आता था। उनकी अपनी लीलाओं की कथा ही उन्हें इन ग्रंथों में दिखलाई और सुनाई देती थी। ऐसी भाव साधना इस सिलसिले के लिये एक अनुपम देन हैं। महात्मा गांधी ने भी अपने राम का रहस्य बताते हुये कुछ ऐसी ही बात कही थी—"मेरा राम, हमारी प्रार्थना का राम, ऐतिहासिक राम नहीं है जो दशरथ का पुत्र और अयोध्या का राजा था। वह नित्य अजन्मा और अद्वितीय परमेश्वर है। मैं उसी की पूजा करता हूं।"

२-श्री श्री चच्चा जी साहब तथा श्री श्री लाला जी साहब के प्रेम मिलन का एक उल्लेखनीय प्रसंग है। इसका विवरण रामाश्रम संस्थान फतेहगढ़ से प्रकाशित "दिव्य क्रांति की कहानी" १९८२ में १३० पृष्ठ पर दिया गया है। "बुन्देलखण्ड के आये हुए व्यक्तियों में से एक हैं। श्री भवानी शंकर जी, प्रेम की साकार मूर्ति। भक्ति व आराधना की श्रुतियां उनकी साधना से प्रवाहित होती हैं। बार-बार आना होता हैं उनका और एकबार तो ऐसे आये कि मैं मोहित हो गया उनकी उस छटा पर, भावनाओं का स्वयं एक ज्वार बने हुए थे वह उस घड़ी। उस सायं फतेहगढ़ में तलैया लेन स्थित अपने निवास पर कुछ प्रेमी भक्तों के मध्य बैठा मैं भगवत चर्चा में तल्लीन था। प्रभु प्रेम सामीप्य का लाभ उठा रहा था। बड़ी ही विशेष सुखानुभूतियां थी उस क्षण की। प्रेम मद का नशा अत्यंत चढ़ा हुआ था। सौन्दर्य की तेज ज्वाला भड़की हुई थी। आनन्द का पारावार उमड़ रहा था। उसी दिव्य वेला में मुझे सूचना दी गई कि श्री भवानी शंकर जी मुझ अकिंचन दास को कृतार्थ करने के लिये अपने कुछ प्रेमी भाइयों सहित झांसी से उरई, कानपुर होते हुए फतेहगढ़ पदयात्रा करते आ रहे हैं। मेरे मन प्राण जो अभी तक अन्तर की गहराइयों में डुबकियां लगा रहे थे, प्रेम विभोर हो उठे, उनमें एक उफानसा आने लगा। मुझे यों लगा मानो भक्तरूप में स्वयं भगवान आ रहे हैं। उनके रूप में जब स्वयं प्रभु आ रहे हैं तो रुका जायेगा मुझ से क्या ?...... नहीं ! कभी नहीं !! मैं भी उनके स्वागत के लिये जाऊंगा, जहां भी मिल जायें वह मुझे। कुछ और दीवाने भी मेरे पीछे-पीछे हो लिये। जो जैसे थे वैसे ही उठ चले। पल झपकते हुए चल दिये। पता न चला कि कब फतेहगढ़ की बस्ती पीछे छूट गई और मैं दीवाना बना नवादिया में आ गया। यहीं दो प्रेमी

प्रेममग्न हो मिले। एक से अनेक मिले। नहीं अनेक से अनेक मिले। यही मिलन स्थल था। प्रेमाश्रुओं की वृष्टि भी यहीं हुई। मिलन तो सर्वत्र हो रहा है—सब घट हीं बिहरों। **'सब घट मेरा साइयां, सूनी सेज न कोय'** आत्मा की कोई भी सेज सूनी नहीं है। "वह" सब में बिहार कर रहा है, रमण कर रहा है। सर्वत्र रास छिड़ा हुआ है।

ऐसे पियं जान न दीजं हो।
चलो री सखी ! मिलि राखिये, नंनन रस पीजं हो।
श्याम सलोनो सांवरो मुख देखत जीजं हो॥

यह छटा तो कुछ घड़ी की थी। आई गई हुई किन्तु न जाने क्यों वह घड़ी, वह स्थान, वह स्थिति, कुछ ऐसी भा गई कि चित्त में बार-बार उसके दर्शन करता हूं। मेरी हार्दिक कामना है कि दिव्य मिलन प्रेमाश्रुओं से सिंचित, यह मेरी साधना स्थली मेरा तीर्थ स्थल बन जाये, ब्रह्मज्ञान की उर्वरा भूमि बनकर काकभुशुण्डि का आश्रम सिद्ध हो, मेरा मन मानस यहीं सदा-सदा के लिये रम जावे।

नित्य प्रातः व सायं इसी मिलन स्थान [नवदिया] तक टहलने आता हूं, घंटों एकांत में बैठा रहता हूं... ... ...इन पंक्तियों को गुनगुनाया करता हूं, बड़ी प्यारी लगती है।

दमे वापिसी बर सरे राह है।
अजीजो अब अल्लाह ही अल्लाह है॥

संयोग की ही बात है कि श्री लालाजी महाराज की महा समाधि महा मिलन के इस स्थल पर ही बनी है।

२– साधक

(१) विश्वासी

(२) सदाचारी

(३) संस्कारी

(४) आचारी एवं प्रेमी

(५) निरहंकारी एवं सेवा भावी

......जैसे कि पिता और पुत्र में कोई अन्तर नहीं, ठीक इसी प्रकार गुरुदेव और शिष्य में रत्ती भर अन्तर नहीं। शिष्य गुरुदेव का साकार रूप है।

[श्री श्री चच्चा जी साहब — नरहरि उपदेश पृ० ६१]

"अफसीस है कि ... ... मालिक का रास्ता दरियाफ्त करने वाला कोई नहीं मिलता।"

(श्री श्री लाला जी साहब)

"तालिबान मौला (परमात्मा को चाहने वाला) मसरीअन्द (प्रेमी) है, तालिबान उकबा (परलोक चाहने वाला) मजदूरअन्द (मजदूर) है। तालिबान दुनियाँ (संसार चाहने वाला) मकरअन्द (कपटी)† है।

[श्री श्री लाला जी साहब]

सूफी लोगों का यह कौल है कि ... ... जिस आदमी का कोई शेख या गुरु नहीं है, उसका गुरु शैतान है। इसलिये हर दिल रखने वाले को चाहिए कि शेख कामिल ढूंढ़ें।

[श्री श्री लालाजी साहब, कमाले इंसानी]

---

†ऐ 'अमीर' ऐसी जिल्लत गवारा नहीं।
मांगने पर हुआ है गुजारा कहीं॥
उनके घर जाऊं और हाथ फैलाऊं मैं,
वह भी किसके लिये, जिन्दगी के लिए॥

[२] साधक : विश्वासी

बंदा वो क्या जो तालिब-ए-मौला न हो सका ।
कतरा वो क्या जो माइल-ए-दरिया न हो सका ॥

२:१:१ गुरुखोज

बिनु गुरु भवनिधि तरय न कोई ।
जौ बिरंचि संकर सम होई ॥

... ... अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार जो कुछ भी मुमकिन हो देखभाल करलें और जब किसी पर विश्वास आ जावे और उसके संग से आनन्द प्राप्त हो और भटकते हुए मन को शान्ति और ठहराव मिलने लगे तब फिर बिला पशोपेश के अपने को उनके अर्पण कर दें''''

[संदर्भ परि०-क]

२.१.२ गुरु में बिश्वास

तुलसी सीताराम कहु दृढ़ राखहु बिसवास ।
कबहुं बिगरे ना सुने रामचन्द्र के दास ॥

झांसी सत्संग
१३.८.४६

"दरअसल गुरु-आज्ञा पालन करना बहुत बड़ा काम है और उनकी आज्ञा का पालन उसी वक्त होसकता है जब हमारा उनमें दृढ़ विश्वास हो । दृढ़ विश्वास का होना कोई मामूली बात नहीं है ।" इसी के होने के वास्ते यह अभ्यास किया जाता है । चिंताओं में या तबियत के खिलाफ कोई बात होने पर दृढ़ विश्वास में कमी मालूम होती है और उस वक्त विश्वास का कायम रहना बहुत मुश्किल काम है ।"

जब जानकी नाथ सहाय करें ।
तब कौन बिगार करै नर तेरो ॥

टीप : १-गुरुवाक्य में विश्वास करना चाहिये । गुरु ही सच्चिदानन्द, सच्चिदानन्द ही गुरु हैं । उनकी बात पर विश्वास करने से,

बालक की तरह विश्वास करने से, ईश्वर की प्राप्ति होती है—बालक का क्या ही विश्वास है ? मां ने कहा "वह तेरा भाई लगता है" उसी समय जान लिया कि वह मेरा भाई है। मां ने कहा उस कमरे में जू जू है, बस पक्का जान लिया कि 'उस कमरे में जू जू है।' यही बालक का विश्वास है, एक दम पूरा पक्का विश्वास। गुरुवाक्य में इसीप्रकार का विश्वास होना चाहिये। सयानी बुद्धि, हिसाबी बुद्धि, विचार बुद्धि करने से ईश्वर को प्राप्त नहीं किया जा सकता। विश्वास और सरलता होनी चाहिये, कपटी होने से न होगा। **सरल के लिये वे बहुत सरल हैं, कपटी से बहुत दूर हैं।**

[स्वामी रामकृष्ण परमहंस]

२–गुरुनाम ही हमारा मंत्र है। उससे सम्पूर्ण रोग और कष्टों का निवारण होता है। देखें (३.४.२.५ व ६)।

एक प्रेमी भाई ने इस प्रकार गुरुनाम मंत्र बनाया—

राम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर पाहिमाम् ।
राम रघुवर राम रघुवर राम रघुवर रक्षमाम् ॥

समर्थ सद्गुरु परमसंत महात्मा श्री रामचन्द्र जी [श्री श्री लालाजी साहब फतेहगढ़] तथा महात्मा श्री रघुवर दयालजी [श्रीमान् चच्चा जी साहब कानपुर] के नाम आधृत, यह मंत्र अनेक विश्वासी प्रेमी भाइयों के लिये कल्पतरु है।

३–गुरु में विश्वास का अर्थ है सर्वभावेन समर्पण। हमारा भगवान्, देवता, दाता, मालिक, मौला सब कुछ, गुरु ही दिखलाई देता है।

हमारी सम्पूर्ण पूजा-पाठ का इष्ट एवं आराध्य हमारा गुरु ही होता है। एक प्रेमी भाई के लिये गायत्री मंत्र का 'भर्गोदेवस्य धीमहि' का अर्थ 'उन परम तेज स्वरूप श्री सद्गुरुदेव को हम धारण करें' होता है। 'राम' में अपने 'राम' 'कृष्ण' में अपने 'कृष्ण' 'श्याम' में अपने 'श्याम', 'शंकर' में अपने 'शंकर' 'दयाल' में अपने 'दयाल' दिखलाई देते हैं। उनमें रम जाना, लय हो जाना, खो जाना ही समर्पण है।

—बे खुदी छा जाये ऐसी दिल से मिट जाये खुदी,
उनके मिलने का तरीका अपने खोजाने में है।
—मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे,
कि दाना खाक में मिलकर गुले-गुलज़ार होता है।

४–**विश्वास—इस बात का कि हमें सच्चे सद्गुरु मिले हैं और हमारा अवश्य उद्धार कर देंगे।** विश्वास इस बात का कि हमारे लिये जो शुभ है, कल्याणकारी है, वही होगा, चाहे यों देखने में वह हमारे लिये कितना ही प्रतिकूल एवं निराशा जनक क्यों न हो। विश्वास इस बात का कि वह परम समर्थ मेरे साथ हैं, मेरे रक्षक हैं, मेरा बाल बांका नहीं हो सकता। मुझे हर हाल में उनका संरक्षण प्राप्त है। अतएव मैं प्रसन्न हूं, और उनकी गोद में, किलकारियां भरते शिशु की भांति, परम आनन्दित हूं।

साधक के विश्वास के सम्बन्ध में श्रीमान् चच्चाजी सा० [कानपुर] ने एक साधक को पत्र लिखा था। उसके अंश श्री रघुवर चरितामृत [पृ० २१] से साभार उद्धृत किये जा रहे हैं।

"...... ...जब प्राचीन महापुरुषों, सन्तों, ऋषियों, मुनियों ने देखा कि सारा संसार इस रचना में फँस गया है, तो पहले बाहर में खोज किया। परन्तु जब सफलता प्राप्त न हुई और अशान्ति रही तब अन्तर में घुसे और उन्होंने बहुत समय पीछे बड़े ही परिश्रम और लगन से प्रेम और ज्ञान का मार्ग प्राप्त किया।

.........उन्होंने ७ लोक बतलाये—प्रथम-मृत्यु लोक, द्वितीय-काम लोक, तृतीय-स्वर्ग लोक, चतुर्थ-सूर्य लोक, पंचम-ज्ञान लोक, छठे-तप लोक, सातवें-सत लोक। ....**अतः जो मनुष्य इस मृत्यु लोक में कम से कम गुरु धारण कर लेता है, उपर्युक्त तीनों बन्धनों से छूट जाता है,** परन्तु शर्त यह रहती है कि जब वह गुरु स्वीकार कर लेता है तो उससे यदि कुछ न बन सके और जो हालतें या आदतें या विचार जैसे बन गये हैं- उनमें कमी न कर सके और अपनी मानसिक स्थिति का सुधार वह अपनी इच्छा या अनिच्छा के कारण न कर सके परन्तु यदि इतनी श्रद्धा और विश्वास उसमें टिका रहे कि कुछ हर्ज नहीं, भले ही मुझसे यदि कुछ नहीं बन पड़ा तो भी मेरे गुरु महाराज वास्तविक रूप से परिपूर्ण, सिद्ध और समर्थ सद्गुरु हैं, वह मुझे अवश्य ही पार करेंगे, तो मेरे विचार से अटल प्राकृतिक नियमों के अनुसार जो प्राचीन महर्षियों के द्वारा प्रकट होते रहे हैं, कम से कम इन ऊपर लिखे तीन लोकों से छुड़ा कर श्री गुरुदेव महाराज जी के अनुग्रह से चौथे लोक में परमात्मा पहुँचा देगा और वहां भी उसका वही गुरु होगा जो मृत्यु लोक में था। वही गुरु शेष चारो लोकों से पार कराता हुआ अनन्त-काल के लिये उसमें मिला देगा जहां से आवागमन नहीं होगा।"

२.१.४—साधन में विश्वास

[साधक को जो साधन गुरुदेव ने बताया है, उसमें उसका पूर्ण विश्वास होना चाहिये तथा उसको बड़ी लगन और तत्परता के साथ करना चाहिये। साधन करते हुये अपनी आत्मोन्नति तथा साधन सफलता पर दृष्टि रखनी चाहिये। श्री श्री बच्चाजी साहब ने इसके सम्बन्ध में विशेष रूप से सावधान किया है।]

"प्रत्येक साधक को आत्मोन्नति तथा ईश्वर भक्ति के साधन का रोजाना का हिसाब उसी तरह रखना चाहिये, जिस तरह नित्य प्रति सरकारी खजाने की आमदनी तथा खर्च का हिसाब खजांची रखता है।"

[गृहचर्या के उपयोगी नियम : पाठ ५ : २३]

टीप : १–साधक को साधन-उपलब्धि के लिये बिकलता होनी चाहिये। परमहंस स्वामी रामकृष्ण के साधक जीवन का यह दृश्य कितना प्रेरक है—

संध्या समय मंदिर की घंटा ध्वनि जब दिवस के अवसान का संकेत देती तो वह अधीर हो, हृदय की अथाह पीड़ा में क्रंदन कर उठते **'माँ' एक दिन और व्यर्थ चला गया, पर तेरे दर्शन नहीं हुए। इस क्षणभंगुर जीवन का एक दिन और बीत गया और मैं सत्य को न जान पाया।"**

इस विकलता का रूप जीवन मरण की हठ पकड़ लेता है तभी वस्तुतः साधन में सफलता होती है। स्वामी जी की इस दशा का भी वर्णन यहां उल्लेखनीय है—

"मैं मां के दर्शन न कर पासकने के कारण असह्य यंत्रणा का अनुभव करता ···एक भीषण बेचैनी मुझ में घर किये रहती। मुझे आशंका होती कि इस जीवन में मेरे भाग्य में मां के दर्शन बदे हैं या नहीं? किसी प्रकार भी मां का वियोग अब मेरे सहन के बाहर था। जीवन निरर्थक प्रतीत हो रहा था। मेरी दृष्टि सहसा मां के मंदिर में टंगे खड्ग पर पड़ी। जीवन का अन्त कर देने के उद्देश्य से उसकी ओर पागल की भांति झपटा और लपक कर उठाया ही था कि अचानक कृपामयी मां मेरे सामने प्रकट हो गई।

२–गुरु साधना का विशेष लाभ यह है कि गुरु की ओर से कहीं अधिक लगाव और प्रेम होता है तथा साधक के निरन्तर ध्यान से ही काम बनने लगता है। फिर भी विकलता और उत्कण्ठा तो ऐसा होनी ही चाहिये कि दुनियां का कुछ न सुहावे तथा वियोग में रोना आवे।

(देखें श्री श्री चच्चाजी साहब की आत्मकथा)

—निष्काम भाव से बिना किसी भेदभाव व पक्षपात के प्रत्येक प्राणी की सेवा करना साक्षात् ईश्वर की सेवा करना है।

[श्री श्री चच्चाजी साहब]

२.१.३ ईश्वर में विश्वास

झांसी सत्संग
१८-८-४६

हम लोग अभ्यास वगैरः इस वास्ते करते हैं कि दीन और दुनियां बन जावें। दीन माने परलोक के हैं। परलोक बन जावे, मगर बनने का सवाल तो बाद को आता है क्योंकि पहले तो हम लोगों का विश्वास ईश्वर के होने में ही नहीं जमता क्योंकि किसी ने इसको देखा तो है नहीं। लिहाजा यही विश्वास नहीं होता कि ईश्वर कोई चीज है भी या नहीं। अगर यह मान लिया जावे **कि ईश्वर कोई चीज है और सब में और सब स्थानों में व्यापक है तो बहुत से बुरे काम तो हमसे उसके डर की वजह से ही छूट जायेंगे और बहुत से पाप करने से हम बरी हो जावेंगे।** मगर मन इस बात को पक्की तरह से कबूल नहीं करता है। ··· ··· ···

हमारा अभ्यास ही इसलिये है कि ईश्वर में विश्वास हो।

टीप— "अगर हमारा अस्तित्व है, अगर हमारे माता-पिता और उनके माता-पिता का अस्तित्व रहा है, तो सारी सृष्टि के पिता में विश्वास रखना उचित ही है। ··· ··· इस विषय में श्रद्धा आवश्यक है। ··· ··· मेरी श्रद्धा मेरी बुद्धि की अपेक्षा इतनी तेज दौड़ती है कि मैं सारी दुनियां को चुनौती देकर 'कह सकता' हूं कि **'ईश्वर है, था और सदा रहेगा।'**··· एक ऐसी अनिर्वचनीय रहस्यमयी शक्ति है जो सर्वत्र व्याप्त है। मैं उसे अनुभव करता हूं, यद्यपि देखता नहीं हूं। यह अदृश्य शक्ति अपना अनुभव तो कराती है, परन्तु उसका कोई प्रमाण नहीं दिया जा सकता ··· ··· वह इन्द्रियों की पहुंच के बाहर है। ··· ··· **मैं जितना शुद्ध बनने की कोशिश करता हूं उतनी ही ईश्वर के साथ निकटता अनुभव करता हूं।**

……मेरी दृष्टि में ईश्वर सत्य और प्रेम है, ईश्वर नीति और सदाचार है, ……ईश्वर प्रकाश और जीवन का स्रोत है, फिर भी इन सबसे ऊपर और परे है। ईश्वर अन्तरात्मा है।

हिन्दू तत्वज्ञान ……कहता है—एक ईश्वर ही है, उसके सिवाय किसी और चीज की सत्ता नहीं है। यही सत्य आप इस्लाम के कलमे में जोर के साथ कहा हुआ पाते हैं ……अंग्रेजी शब्द 'TRUTH' के लिये संस्कृत में जो शब्द है, यानी 'सत्य' उसका शब्दार्थ ही 'जो है' है। …अगर आप सत्य के महासागर के तल पर तैरना चाहते हैं तो आपको शून्य बन जाना होगा ……

मुझे जितना विश्वास इस बात का है कि **आप और मैं इस कमरे में बैठे हैं, उससे कहीं ज्यादा विश्वास ईश्वर के अस्तित्व का है।** मैं यह भी कह सकता हूं कि मैं हवा और पानी के बिना रह सकता हूं, लेकिन ईश्वर के बिना नहीं रह सकता। आप मेरी आंखें निकाल लें परन्तु उससे मैं मरूँगा नहीं, …… लेकिन आप ईश्वर में मेरा विश्वास मिटा दीजिये, तो मैं मर जाऊँगा ……

…ईश्वर हमारे साथ है और वह हमारी संभाल इस तरह करता है मानो उसे और किसी की चिन्ता करनी ही नहीं है। यह कैसे होता है, सो मैं नहीं जानता यह जरूर जानता हूं कि ऐसा निश्चित रूप से होता ही है। जिनमें यह श्रद्धा है उनके कन्धों से सारी चिन्ताओं का भार उठ जाता है।

… … जैसे-जैसे समय बीतता है वैसे-वैसे मैं रोम-रोम में उसका सजीव अस्तित्व अनुभव करता हूं।

[महात्मा गांधी : मेरा धर्म : नवजीवन प्रकाशन : प्रथम आवृत्ति साभार सकलित]

इसीप्रकार की श्रद्धा हमारी अपने गुरुदेव के प्रति होनी चाहिये :

सम्पादक

२.२.१–साधक का सदाचार

२.२.१.१–सदा सर्वदा गुरु आज्ञा पालन

भवानीशंकर, सत्संग आश्रम
चन्द्रनगर, उरई
११-१०-६२

… … … मैंने जीवन के आरम्भ काल से आज तक गुरुदेव की आज्ञानुसार कार्य किया है और जब तक मैं जीवित हूं मैं चाहता हूं कि उनकी आज्ञा अन्त तक पालन करता हूं।

शुभ चिन्तक
भ० शं०

२.२.१.२–हर हालत में अपने स्वरूप में स्थिति

सत्संग आश्रम, पोलीपुरा उरई
२२-४-१९५१

प्रिय बाब … …

… … … अतः किसी भी हालत में अपने स्वरूप की स्थिति से विचलित न होना चाहिये।

शुभ चिन्तक
भवानीशंकर

२.२.१.३–याद में कमी होना विश्वासघात

झांसी
२३-७-४७

ॐ

प्रिय बाबू··· ··· ···

ईश्वर कृपा करें ।

··· ··· ··· ईश्वर की दया व कृपा पर निरन्तर विचार करते हुए उसकी याद में कमी होना विश्वासघात का कारण कहा जाता है। आप स्वयं बुद्धिमान हैं। बुद्धि को प्रयोग में लाते रहिये ।

शुभ चिन्तक
भवानीशंकर

२.२.१.४–शुभ चिन्तन

जो मनुष्य किसी भी प्राणी का अनिष्ट चिन्तन नहीं करता और अपने शत्रुओं की उन्नति पर भी प्रसन्न होता है, वही सदाचारी तथा श्री भगवान् का सच्चा भक्त है ।

श्री श्री चच्चाजी साहब :
[गृहचर्या के उपयोगी नियम : ८०]

२.२.१.५–गुरु के मन की जान लेना

गुरु आज्ञा पालन व "अपने स्वरूप की स्थिति" एक दूसरे के पूरक हैं। अपने स्वरूप में स्थिति बनाये रखने से, जो प्रभु कृपा से सम्भव है एवं साधन की श्रेष्ठ स्थिति है, गुरु आज्ञा का आभास होता रहता है तथा उसका पालन किया जा सकता है। "गुरु आज्ञा क्या है ?" इसकी अनुभूति आंतरिक होनी चाहिये। श्री श्री गुरुदेव को मौखिक रूप से कुछ कहने की जरूरत ही न पड़े। **हमें उनकी इच्छा का अनुभव हो और हम उसका पालन करें, यह साधक का परम लक्ष्य है, यही सदाचार है ।**

टीप–१-श्री श्री लालाजी साहब का ऐसा ही आदर्श सदाचार था। श्रीमान् चच्चा जी साहब [कानपुर] ने इसकी चर्चा की है। पूज्यपाद जनाब किब्ला हुजूर महाराज साहब ने लाला जी साहब से उनके व्यवहार से सन्तुष्ट होकर कहा था भाईजान, आपने कोई ऐसी बात कभी नहीं की जिससे मेरा दिल तिकनी हो। उस दिन जब आप आये, मेरी यही इच्छा थी कि आप चले जांय सो आप वैसे ही लौटे। **बस यही गुरु भक्ति है कि अपने मन में वही बात आवे जो गुरुदेव के मन में है ।**

[पीयूष वाणी–तृतीय संस्करण पृ० ४९ से साभार]

२–स्वामी विवेकानन्द ने विचार संक्रमण के बारे में मन की विशेषता का उल्लेख किया है–

··· ··· मन एक अखण्ड वस्तु है, जैसा कि योगी कहते हैं। मन विश्वव्यापी है। तुम्हारा मन, मेरा मन, ये सब विभिन्न मन उस समष्टि मन के अंश मात्र हैं, मानों समुद्र पर उठने वाली छोटी-छोटी लहरें हैं, और इस अखण्डता के कारण ही हम अपने विचारों को एकदम सीधे बिना किसी माध्यम के आपस में संक्रमित कर सकते हैं।

[मन की शक्तियां १७ पृष्ठ ६]

३–श्री श्री लालाजी साहब के परिवार की यह विशेषता थी कि उनका आंतरिक एवं मानसिक सम्बन्ध प्रेमी भाइयों से हो जाता था तथा प्रेमी भाइयों की आवश्यकताएँ उनके बिना कहे जानली जाती थीं और पूरी करदी जाती थीं। श्री श्री पेशकार साहब ने अपनी "आत्मकथा" में इस विशेषता का विवरण दिया है।

... ... आपके सुपुत्र बाबू जगमोहन नारायणजी से भी मेरा परिचय हुआ। आप अपने पिता के इकलौते पुत्र हैं। इस पर भी आप प्रत्येक आने जाने वालों से भाई की तरह प्रेम करते हैं और नौकर होने पर भी हर प्रकार की सेवा का भार अपने ऊपर लिये हुये हैं। यह नहीं जो कुछ किसी ने कह दिया कर दिया, बल्कि इस बात का पूरा ख्याल रखते हैं कि किसको किस समय किस बात की आवश्यकता है और **उसकी वह आवश्यकता बिना उसके कहे पूरी करने की कुशलता आप में देखी तथा आपका यह सेवा धर्म निष्काम पाया गया।**

आपकी पुत्री बहन शीला उस समय ७ या ८ साल की थी ... ... उसके शील और स्वभाव से मेरे चित्त में बड़ा असर पड़ा। देवी का रूप और देवी के लक्षण देखकर मैं मुग्ध हो गया। **कम बोलना, अदब और कायदे से बैठना, आये हुये भाइयों को जिस बात की आवश्यकता हो, उसको बिना कहे ही समझ जाना तथा चुपके से उसे कर देना परन्तु चेहरे पर अहंकार के भाव न होना** ... ... यह जरूर देखने में आया कि आपको (गुरुमाता जी को) आने वालों के आदर सत्कार का पूरा ध्यान रहता है। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी रुचि के अनुसार जलपान और भोजन पहुंचा देने में आप बहुत ही दत्तचित्त रहती हैं।

४—यही विशेषता चच्चाजी सा० के यहां परमसंत ममतामयी अवतारी गुरुमाता श्रीश्री राधामातेश्वरी की थी। झांसी सत्संग का जिन पुराने प्रेमी भाइयों को सौभाग्य मिला है। वह अपने भोजन में अपनी रुचि के अनुकूल वस्तु प्राप्त करना कभी नहीं भूल सकेंगे। उस भोजन का रस ही निराला होता था। [आत्मकथा पृ० २१ व २२]

हर हाल में खुश रहना
ये है खुदा परस्ती।

२.२.१.६ हर हाल में ईश्वर को धन्यवाद :

२.२.१.६.१ जन्म-मृत्यु की परिस्थितियाँ

११२, खत्रियाना झांसी
१९-९-४१

ॐ

प्रिय ... ...

बच्चा होने का समाचार मालूम होकर ईश्वर को धन्यवाद दिया।

शुभ चिन्तक
भवानी शंकर

—❁—

भवानीशंकर, सत्संग आश्रम
घोसीपुरा उरई
२८-८-५४

प्रिय ... ... **ईश्वर कृपा करें।**

... ... **परसों प्रातः काल जयदयाल के छोटे बच्चे की [जिसकी उम्र १४ माह थी] मृत्यु हो गयी। प्रत्येक दशा में ईश्वर को धन्यवाद है।**

शुभ चिन्तक
भवानीशंकर

२.२.१.६.२ अन्यान्य परिस्थितियाँ

सत्संग आश्रम, घोसीपुरा उरई
२७–८–५७

प्रिय ... ... **ईश्वर कृपा करें।**

... ... **ईश्वर का भरोसा रखते हुये कर्त्तव्य पालन करते रहिये। ईश्वर कृपा से जो हो उसी में अपना कल्याण समझते हुए प्रत्येक दशा में ईश्वर को धन्यवाद देते रहना चाहिये।**

शुभ चिन्तक
भवानी शंकर

झांसी सत्संग
३१-१२-३९

संसार में जितने भी आदमी हैं सबको चिन्ता लगी हुई है। ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं है जिसको चिन्ता न हो। ... ...मनुष्य को ऐसा ख्याल करना चाहिये कि न मालूम इस चिन्ता में मेरे वास्ते क्या भलाई है और ईश्वर से प्रार्थना करना चाहिये कि वह हमको शक्ति उसके बरदास्त करने की देवे ... ...**हमेशा चिन्ताओं में ईश्वर का सहारा लेना चाहिये। अगर उसका सहारा रहेगा तो हम लोगों की चिन्ताओं में भी एक किस्म की शान्ति-सी बनी रहेगी। ......यह ख्याल आ जावे कि क्या अजब है कि इन चिन्ताओं से ही हमारा कुछ फायदा होने वाला हो;** क्योंकि ईश्वर जो कुछ भी करता है, वह सब ठीक ही ठीक करता है और हमारी भलाई के वास्ते ही करता है। ऐसा ख्याल मन में आते ही कितनी शान्ति-सी उस समय मिलती है और सब घबराहट और परेशानी दूर हो जाती है।

टीप : श्रीमान् चच्चा जी सा० [कानपुर] ने पूजा में तबियत न लगने के लिये भी धन्यवाद देने को कहा है—**"चाहिये यह कि ईश्वर को इस हाल में [जब तबियत न लगे] धन्यवाद दें कि उसने इस समय यह उत्तम समझा।** यह हालत आई नहीं कि अन्धकार भी मित्रता करके रोशनी पैदा कर देता है।

—वे मातायें धन्य हैं और जगत पूज्य हैं जो स्वयं नित्य प्रति प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल ईश्वर की उपासना करती हैं और अपनी मातृ दृष्टि तथा सदाचार द्वारा अपने पुत्र, पुत्रियों, पुत्र-बधुओं एवं घर के अन्य सम्बन्धियों से ऐसी ही साधना कराती हैं।

—अपनी संतान को सदाचारी बनाने के लिये माताओं को उच्च स्वर से कभी न बोलना चाहिये और अपनी कन्याओं तथा पुत्र बधुओं को मंद स्वर से शान्त पूर्वक बोलने का अभ्यास कराते रहना चाहिये।

—श्री भगवान की भक्ति ही सबसे श्रेष्ठ धर्म है और वही परमानन्द तथा पूर्ण शान्ति का स्थान है।

[श्री श्री चच्चाजी साहब]

मेरी चाही मत करो मैं मूरख अज्ञान ।
तेरी चाही में प्रभो है मेरा कल्यान ॥

२.२.१.७ राजी ब रजा :

२.२.१.७.१—ईश्वर की मर्जी मुताबिक चलना

"साधक का महान कर्त्तव्य है कि वह अपनी मनचाही बातों के चक्कर में न पड़े ।"
[श्री श्री चच्चाजी सा०]

झाँसी, ३०.३.४१

प्रिय भाई जी । परमात्मा गुरुदेव सदैव आपकी रक्षा करें । ... ... जरा-जरा सी बातों से घबड़ा न जाना चाहिए । ईश्वर का भरोसा रखते हुए निर्भयता के साथ अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहिए । समयानुसार क्षमा व दया का व्यवहार रखिए ।

ईश्वर की मर्जी के मुताबिक कर्त्तव्य पालन होने से ईश्वर प्रसन्न* रहते हैं, और ईश्वर के प्रसन्न रहने से सभी प्रसन्न रहते हैं । अतः ईश्वर से यही प्रार्थना हार्दिक हो कि अपनी मर्जी के मुताबिक चलने की शक्ति दे ।

शुभ चिन्तक
भवानीशंकर

* "मालिक को खुश करने की कोशिश करनी चाहिये और सारी बातें उसकी मर्जी के मातहत समझना चाहिये । 'तेरी इच्छा पूर्ण हो' यह कलमा (सूत्र) हर भक्त और प्रेमी की जबान पर रहना चाहिये ।
[श्री श्री लालाजी सा०]

टीप : १—श्री श्री पेशकार साहब का, एक प्रेमी भाई के पत्र का (१.४.४४ का उत्तर)—

प्रियवर ... ... जै श्री गुरुदेव । ईश्वर तुमको दीन व दुनियां में खुश रखे और अपना प्रेम दे । भाई साहब, दुनियां के यही मजे हैं, वह भी देखा यह भी देखा । **भगवान की मर्जी में राजी रहना ही सबसे बड़ी पूजा मालिक की है ।** जिसको सचमुच यह आ गया, वह मुक्त हो गया ... ... अपने **मालिक पर ऐसा भरोसा रखो जैसे छोटा बच्चा अपनी मां पर ... ... ।**

[आत्मकथा पृ० ११८]

हर जुल्म इनायत है, हर जोर शफक्कत है,
राजी ब रजा रहना, ईमाने मोहब्बत है ।

२—"हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" यह महामंत्र है । आत्मिक जीवन का दिव्य तारा है । जो इसके प्रकाश में चलता है, इस पद को प्राप्त होता है । दिन और रात में जब खाली हो, जब मौका मिले, यही जाप मन ही मन में बराबर करते रहना चाहिये । कुछ दिनों में इसका लाभ अनुभव होगा ।

[श्रीमान् चच्चाजी सा० (कानपुर) पीयूषवाणी]

—श्री भगवान की भक्ति ही सबसे श्रेष्ठ धर्म है तथा वही परमानन्द और पूर्ण शान्ति का स्थान है ।
[श्री श्री चच्चाजी साहब]

२.२.१.७२ परिणाम ईश्वर के भरोसे छोड़ना :

उरई
२१.१२.५३

प्रिय बा० ··· ··· जी ! ईश्वर कृपा करें !

··· ··· आपने अपनी पी-एच०डी०, डिग्री प्राप्त करने के लिए जितना हो सका काम किया। परिणाम ईश्वर के भरोसे छोड़िये। उसकी दया व कृपा से उचित परिणाम होगा। बच्चों को प्रेम।

शुभ चिन्तक
भवानी शंकर

ॐ

भवानीशंकर, सत्संग आश्रम
घोसीपुरा उरई
३०.७.५६

प्रिय ··· ··· जी। ईश्वर कृपा करें। पत्र मिले। आपका जो कर्तव्य है, उसको आप करते रहिये तथा परिणाम ईश्वर के भरोसे छोड़ने की भावना रखिये। जिसमें आपका भला होगा, वही आपके लिये होगा। आप विशेष चिन्तित और निराशा-वादी न बनें। ईश्वर आपकी सहायता करेगा। बच्चों को प्रेम।

शुभ चिन्तक
भवानीशंकर

२.२.२ : साधन सदाचार

अभ्यास की शक्ति का सदाचार में प्रकट होना

भवानीशंकर, सत्संग आश्रम
घोसीपुरा, उरई
ॐ
८.९.५७

प्रिय ··· ··· ईश्वर रक्षा करें।

··· ··· अभ्यास की शक्ति का परिणाम सदाचार में बाह्य तथा आंतरिक रूप से प्रकट होता रहे। ··· ···

शुभ चिन्तक
भवानीशंकर

सदाचार भेदभाव और पक्षपात छोड़कर सेवा करने की शिक्षा देता है।

[कर्त्तव्य पालन और सदाचार : १०वां पाठ]

> पूजा का असर यह होना चाहिये कि **जिसके साथ जैसा व्यवहार करने की जरूरत है, वैसा आप से आप अदा होता जावे** ··· ···

झांसी, सत्संग २.७.४०

समय को अमूल्य समझकर प्रत्येक श्वांस को भाव सहित श्री भगवान के स्मरण तथा ध्यान में लगाये रहने का अभ्यास तथा साधन करते रहने से **मनुष्य को सदाचार की प्राप्ति होकर यथार्थ कर्त्तव्य पालन तथा सेवा करने की शक्ति प्राप्त होती है।'**

[गृहचर्या के उपयोगी नियम ६४]

टीप : १-साधक की सदाचारी स्थिति का एक आदर्श यह है कि साधक के दर्शन से ही भगवान का प्रेम जाग्रत हो। किसी वैष्णव संत से प्रति वर्ष "वैष्णव" किसे कहते हैं, यह पूछा गया।

प्रथम वर्ष उन्होंने कहा जिसके मुख से एक बार भी राम का नाम निकले, द्वितीय वर्ष उन्होंने कहा जिसके मुख से निरन्तर राम का नाम निकले, तृतीय वर्ष उन्होंने कहा जिसको देखकर देखने वालों के मुख से राम नाम निकलने लगे।

२-[श्री श्री चच्चाजी सा० **सदाचार को केन्द्र बनाकर साधन करना कराना चाहते थे।** इसीलिये उन्होंने बच्चों में, घर-परिवार में सदाचार के संस्कार डालने पर बल दिया]

"विद्यार्थियों का धर्म है कि वे माता-पिता, वृद्धों ओर गुरुजनों की पूजा तथा सेवा करने की साधना करने के साथ ही साथ श्री भगवान की पूजा भी सीखते जावें। श्री भगवान की पूजा से सदाचार की प्राप्ति होकर विद्या तथा ऐश्वर्य की दिन प्रति दिन उन्नति होती जाती है।

[कर्त्तव्य पालन और सदाचार : वचन १०२]

३-बच्चों से सदाचार के लिये तीन बार यह प्रार्थना करने के लिये कहते थे-

हे ईश्वर ! हमें सुमति और सद्बुद्धि दे।
हे ईश्वर ! हम नीरोग तथा सदाचारी बनें।
हे ईश्वर ! हमें खब विद्या आवे।

४-हमारे तृतीय सुपुत्र ब्रह्मआनन्द को जो ८-९ वर्ष का था, श्री श्री चच्चाजी साहब ने माता-पिता को प्रणाम करना, उसको सामने बिठालकर और उसके पैरों में अपना सिर रखकर बताया और सिखाया था। सदाचार का पाठ इसप्रकार कौन सिखायेगा ?

५-सदाचार के बाह्य और आन्तरिक रूप में प्रकट होने की स्थिति को अन्यथा मन की निर्मलता कहा गया है। मन निर्मल होने के लिये ही अभ्यास साधन, पूजा पाठ आदि किये जाते हैं।

सभी संत महात्माओं ने निर्मल मन की आवश्यकता पर बल दिया है।

गो० तुलसीदास	—	निर्मल मन सो जन मोहि पावा। मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥
संत कबीरदास	—	कबिरा मन निरमल भया, जैसे गँगा नीर। पाछे-पाछे हरि चलें, आगे दास कबीर॥
संत तुकाराम	—	ईश्वर के पास मोक्ष की ऐसी गठरी नहीं है जिसे वह किसी को दे दे। यहां तो इन्द्रियों को जीतना और मन को निर्विषय एवं निर्मल बनाना ही मुख्य उपाय है।

—जीविका को शुद्ध, पवित्र और सात्विक बनाने का सबसे उत्तम और सरल उपाय यह है कि मनुष्य अपनी जीविका करते हुये निरन्तर भाव व प्रेम सहित अपने इष्टदेव श्री भगवान् का स्मरण करता रहे।

[श्री श्री चच्चाजी साहब]

२.३.० साधक संस्कारी

झांसी
१०.३.४१

भलो मानि हैं रघुनाथ जो हाथ जोरि माथो नाइ है।
[विनय पत्रिका-१३५]

अदब पहला करीना है, मुहब्बत के करीनों में।

प्रिय भाई जी।

परमात्मा गुरुदेव सदैव आपकी रक्षा करें ... ... यह ईश्वर की विशेष कृपा व दया है जो इसी अवस्था में आपका प्रेम ईश्वरीय साधन की ओर आकर्षित हो रहा है। गुरु महाराज से प्रार्थना है कि आपका ईश्वरीय प्रेम सबकी यथार्थ सेवा के लिये हो।

दास
भवानीशंकर

श्री भगवान् के भक्तों की आदर्श जीवनचर्या तथा सदाचार भगवत् रूप होकर संसार के कल्याण का कारण है।
[गृहचर्या के उपयोगी नियम]

अदब, लिहाज़ और कायदे की पाबन्दी जरूरी है... ... अदब अख्त्यार करना पहली चीज है।

'अदब ताजीस्त अज़ लुत्फे इलाही।'
[श्री श्री लालाजी सा०]

टीप : साधक के संस्कार परिवार तथा संगत से बनते हैं। ईश्वर की विशेष कृपा व दया होती है जब ईश्वरीय साधन की ओर मन लगता है। इसलिये मुख्य प्रार्थना तो यही होती है कि श्री गुरुचरणों में प्रेम जाग्रत हो।

इस गुरु परम्परा की साधना में गुरुदेव के प्रति सदाचार या सम्मान समादर अथवा अदब विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण होता है। प्रायः साधक आजकल के गिरते मूल्यों के समाज में अदब की शिक्षा परिवार अथवा संगत में नहीं प्राप्त कर पाते। इधर इस सिलसिले के बुजुर्ग अपने प्रेमभाव में इसके लिये चिन्ता नहीं करते। फलस्वरूप शिष्य का व्यवहार अतिसामान्य तथा कभी-कभी तो अन्य संसारी प्रभावशाली व्यक्तियों की तुलना में हल्का हो जाता है। इस विद्या के बारे में बुजुर्गों का कहना है कि यह अदब के सहारे गुरु से शिष्य की ओर अपने आप सरकती है, पहुंचती है। इसको साधन या अभ्यास से प्राप्त करने में अन्यथा समय लगता है और कठिनाई होती है। श्री श्री चच्चाजी साहब ने इस अदब को "भाव व प्रेम" कहा है। झांसी सत्संग में १८.८.४६ को भाव व प्रेम पैदा होने के लिये उन्होंने बताया था "जब आप अपने माता-पिता या अपने से बड़ों के आज्ञाकारी बनेंगे और उनकी सेवा ठीक-ठीक करेंगे, सोई तुम में भाव आने लगेगा।" इस प्रकार भाव व प्रेम के संस्कार परिवार में पड़ने से यह साधना ठीक-ठीक हो सकती है।

"भय बिन होई न प्रीति" अथवा "प्रेम या सम्मान का भय" भाव व प्रेम अथवा अदब को ही बताता है। अदब में सम्मान के या प्रेम के प्रसंग में भय का भाव रहता है। यह भय का भाव ऐसा होता है कि इससे भागने की नहीं बल्कि इसमें रमने की तबियत करती है। दो तीन घटनायें स्मरण है।

[१] फतेहगढ़ भण्डारे की बात है। (र०बा०) जनाब किब्ला मौलवी सा० (परमसंत र०अ० हाजी अब्दुल गनी खां साहिब भोगांव) आये हुए थे। पूज्यपाद महात्मा ब्रजमोहन लालजी दर्शन करने पधारे। जनाब किब्ला मौलवी सा० ने उलाहना देते हुये कहा "अरे ··· ··· भई तुम तो खत भी नहीं डालते" यह सुनकर श्री श्री ब्रजमोहन लाल जी थर-थर कांपने लगे और बड़े आजिज होकर प्रार्थना की "हुजूर मुआफ करें, गलती हो गई, आइन्दा न होगी।" और भाव विव्हल होकर कई बार कह गये।

[२] ऐसी ही दूसरी घटना सुनी है। जनाब मोलवी सा० किब्ला कानपुर आये हुये थे। रात १० बजे के लगभग पानी लाने के लिये महात्मा ब्रजमोहनलाल जी से कहा। वह जब तक पानी लेकर आये, जनाब किब्ला मोलवी सा० समाधिस्थ हो गए। महात्मा ब्रजमोहनलाल जी पानी का गिलास लिए हुए वैसे ही खड़े रहे। प्रातः ५ बजे जनाब किब्ला मौलवी सा० ने आंख खोली और महात्मा ब्रजमोहनलाल जी को, पानी लिए देखा। उस समय उनके अदब से जनाब किब्ला मौलवी सा० कितने प्रभावित हुए और कितनी अध्यात्म विद्या अपने आप सरक गई, इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

[३] मैंने शाहजहांपुर में पूज्यपाद श्री बाबूजी सा० (परमसंत महात्मा रामचन्द्रजी श्री श्री लालाजी सा० के नामराशि) का गुरुदेव जी के प्रति अदब का अनुपम भाव भी देखा। वहां घर पर एक लम्बा कमरा था। उसके आगे बरामदा था। कमरे में अन्दर एक कोने में पलंग पड़ा था। उसके सिरहाने श्री श्री लालाजी सा० का चित्र लगा हुआ था। इस पलंग पर श्री श्री बाबूजी सा० आराम करते थे। बाहर बरामदे में आराम कुर्सी पड़ी हुई थी। **श्री श्री बाबूजी सा० अपने गुरुदेव के चित्र का इतना अदब करते थे** कि वहां हुक्का नहीं पीते थे। हुक्का पीने के लिये बाहर बरामदे में आते थे तथा आराम कुर्सी पर विराजकर हुक्का पीते थे।

२.४.० साधक आधारी एवं प्रेमी

सीम कि चांप सकइ कोउ तासू।
बड़ रखवार रमापति जासू॥

फानूस बनकर जिसकी हिफ़ाज़त हवा करे।
वह शमा क्या बुझे जिसे रोशन खुदा करे॥

२.४.१ आधारी

"··· ··· नाम ही मानव-जीवन का आधार है। जो इस आधार को अपना बना लेते हैं वे उस आधार के ही हो जाते हैं।"

[श्री श्री चच्चाजी सा० : गृहस्थ जीवन और सदाचार ७३, पृ० ५८]

"मैं तो केवल नाम आधार हूं और ईश्वर की तरफ निगाह किये हूं। इसके सिवा और कुछ नहीं जानता।"

[श्री श्री लालाजी सा० : श्री राम संदेश : १९७४, पृ० १]

"··· ··· भक्त को गुरु की हर एक अदा, चाल-ढाल, बोल-चाल उठक-बैठक, व्यवहार बर्ताव में एक अजब सुहावनापन और खूबसूरती नजर आवे ··· ···।"

[श्री श्री चच्चाजी सा० : देखें ७क]

भगवान का बल :

"जिस प्रकार धनवान को अपने धन का, पहलवान को अपने बल का, विद्यावान को अपनी विद्या का और राजा को अपने राज्य का बल रहता है, वैसे ही भक्त को अपने इष्टदेव श्री भगवान् का बल रहता है। [शिष्य को अपने गुरुदेव का बल रहता है] [कर्त्तव्यपालन और सदाचार : १८वां पाठ से साभार]

> जैसी प्रीति कुटुम्ब से, तैसी गुरु से होय ।
> चले जाहु बैकुण्ठ को, हाथ न पकड़े कोय ॥

प्रेम से समीपता ... ...

श्री भगवान के प्रति भाव और प्रेम होने से वह बहुत दूर होते हुये भी, समीप हैं। जहाँ प्रेम और भाव की कमी है, वहाँ श्री भगवान पास होते हुये भी दूर हैं ।

[श्री श्री चच्चाजी सा० : गृहस्थ जीवन और सदाचार]

प्रथम दिन का भाव*

प्रथम दिन का भाव यदि बना रहे तो साधक बिना किसी अभ्यास साधन के ही परम पद को प्राप्त हो जायगा ।

[श्री श्री चच्चाजी सा० : नरहरि उपदेश]

प्रेम सबसे बड़ी साधना :

पूजा की अपेक्षा जप बड़ा है, जप की अपेक्षा ध्यान बड़ा है, ध्यान से बढ़कर है भाव, और भाव से बढ़कर महाभाव या प्रेम। प्रेम यदि हुआ तो ईश्वर को बांधने की मानो रस्सी मिल गयी ।

[स्वामी रामकृष्ण परमहंस]

टीप : श्रीमान् चच्चाजी सा० ने प्रेम के संबंध में इसप्रकार कहा है—

"जिसको प्रेम नहीं कुछ नहीं। **प्रेम श्री गुरुदेव की स्मृति को बनाये रखने को कहते हैं।** जिसको प्रेम प्राप्त है तो वह इस मार्ग पर सीधा लगा है और उसे किसी चिन्ता की आवश्यकता नहीं।

यह प्रेम ही ध्रुव लोकों तक पहुंचा देगा। प्रेम ही मार्ग है ।

संत साधना, प्रेम साधना है। कबीर, सूर, तुलसी, मीरा सबने प्रेम को ही अपनी भक्ति का आधार बनाया है। गो० तुलसीदास जी ने तो रामचरितमानस के अन्तिम छंद में साधन-साररूप यही प्रार्थना की है—

कामिहि नारि पिआरि जिमि, लोभिहि जिमि प्रिय दाम ।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहि राम ।

प्रेम साधना स्वरूप :

हमारी वही पूजा वास्तविक पूजा होती है जिसमें हम प्रभु की याद में दो बूंद आंसू भेंट कर पाते हैं। वह प्रेमी भगवान् हमारी इसी भेंट की कामना करता है और प्रतीक्षा करता है। यह प्रेम कैसे जाग्रत हो, सारी साधना का लक्ष्य यही है। प्रेम करना आजाय तो पूजा आप होने लगती है। ईश्वर कृपा करें ।

---

*प्रथम दिन का भाव अपने पति से पत्नी का प्रथम दिन का भाव सम्मान-समादर, प्रेम-प्रतीति, अर्पण-समर्पण, भय-प्रीति, आकुलता-विकलता, संयोग-वियोग की अनेक अनुभूतियों से भरा और सराबोर होता है, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में यही भाव आजीवन, दाम्पत्य जीवन का आधार होता है तथा पति सेवा में, पति के लिये त्याग-तपस्या में प्रकट एवं परितुष्ट रहता है। यही भाव दशा शिष्य की प्रथम दिन होती है। इस भाव को बनाये रखने के लिये ही अभ्यास और साधन करना होता है। यह प्रेम का भाव ऐसा होता है कि अपने प्रेमी को देखते रहने, उसके साथ बने रहने, उसकी सेवा करने की एक सहज इच्छा होती है, उससे अलग होने पर उसकी हर समय स्मृति बनी रहती है, विकलता होती है, कुछ सुहाता नहीं। उसके अलावा न कोई लौकिक और न कोई पारलौकिक मांग होती है। हम अपने प्रेमी से अपने प्रेमी की ही मांग करते हैं, 'बस, आप ही चाहिये।' यही हमारी इच्छा, कामना, याचना होती है ।

२.५.० साधक : निरहंकारी एवं सेवाभावी

२.५.१—निरहंकारी :

झांसी सत्संग
६.२.४०

... ... भक्त लोगों की परीक्षा ... ... ईश्वर नहीं बल्कि हम खुद ही लिया करते हैं। ... ... अगर हमको किसी बात का अहंकार ... ... पैदा हुआ कि हमारी परीक्षा हुई क्योंकि जब हम ईश्वर की याद करते हैं तो **ईश्वर यह नहीं चाहता कि हमारे भक्तों में किसी किस्म का अहंकार पैदा हो ... ...**

झांसी सत्संग
१९.८.४६

"... ... जो-जो सन्त महात्मा हुए हैं उन सबने बहुत ऊँचे स्थान तक पहुंच कर यह कभी नहीं कहा कि अब हमारी यह हालत है, बल्कि हमेशा यही कहते रहे कि **मालूम होता है कि हम अब और नीचे गिर गये हैं और ऐसा मालूम होता है कि अब हमारी हालत पहले से और भी खराब हो गई है।"**

[श्री श्री चच्चाजी सा०]

"जब सब मुलाकात तै हो जाते हैं तो कौन सी बात बाकी रह जाती है।"

"निदामत" [अपमान] अर्थात् अहंकार का टूटना ।

—श्रीमान् श्री श्री लालाजी सा० एवं
श्रीमान् चच्चाजी सा० [कानपुर]

टीप : साधक की आध्यात्मिक साधना में सबसे अधिक बाधक उसका अहंकार होता है जो अति सूक्ष्म रूप में अंत तक बना रहता है। साधक का मुख्य अपना प्रयत्न अपनी हालत पर नजर रखना और निरहंकारी बनना होता है ।

२.५.२—सेवाभावी :

इस सिलसिले के बुजुर्गों ने शिष्य सेवा के आदर्श रखे हैं तथा स्वयं सेवा कराने से सदा बचते रहे हैं। श्री श्री चच्चाजी सा० संबंधी दो घटनायें हैं जो गुरु के अनुपम सेवा भाव को प्रकट करती हैं।

... ... श्री श्री चच्चाजी सा० भाव विभोर होकर सुनाया करते थे। वह फतेहगढ़ में अपने गुरुदेव के निवास पर थे। प्रातः ४-५ के बीच जिस समय कुछ अंधकार सा रहता है, वह कुँए पर स्नान करने लगे। उन्होंने देखा कि कोई व्यक्ति पानी खींचकर बाल्टियों में डाल रहा है। गर्मी के दिन थे। श्री श्री चच्चाजी सा० ने उनसे कहा कि एक बाल्टी मेरे सिर पर डाल दो। पानी भरने वाले व्यक्ति ने ऐसा ही किया। तृप्ति न हुई तो श्री श्री चच्चाजी सा० ने कहा कि एक बाल्टी और डाल देवें। स्नान करके कपड़े बदले और उस व्यक्ति को धन्यवाद देने की गरज से उसके पास गये तो हृतप्रभ रह गये और विकल होकर चरणों में गिर पड़े। यह तो और कोई नहीं स्वयं गुरु महाराज श्री श्री लालाजी महाराज थे।

टीप : **अहंकार का मनोविकार सबसे अधिक घातक है—**

श्री श्री चच्चा जी सा० ने इस सम्बन्ध में १३.१०५९ को सत्संग-प्रवचन में बताया—"अहंकार ही गिरा देती है। यह कई प्रकार का होता है, सेवा करने का, आज्ञा पालन करने का, जगह पा जाने का आदि। अहंकार सबसे खतरनाक होता है। अहंकार पूजा का भी आता है। गुरु ही इससे बचा सकता है। अतः पूजा न कहें, कहें कि जरूरी काम से अभी निपट कर आता हूं। पूजा कहने से लोग भक्त कहने लगेंगे, बस खराबी आजायगी।"

"जिस सत्कर्म से अहंकार पैदा हो उससे तो वह पाप अच्छा है जो ईश्वर की ओर ले जाय।"

…… श्रीमान् चच्चाजी सा० [कानपुर] ने भी श्री श्री चच्चाजी सा० की ऐसी ही सेवा की थी।

"एक बार श्री भवानीशंकर जी को जाड़ा देकर बुखार हो आया। बैठक के सामने बरामदे में चारपाई पर लिटा दिये गये। लिहाफ ओढ़ा दिया गया। नौ बजे रात्रि के बाद जब सब सत्संगी भाई चले गये, पूज्य चच्चा जी उठे और पैर तथा कमर दबाने लगे। कुछ देर बाद उन्हें होश हुआ, उन्होंने मुंह खोलकर देखा, तो कहने लगे "अरे चच्चा! आपने यह क्या किया? पूज्य चच्चा जी महाराज ने उत्तर दिया, कोई हर्ज नहीं—"अब तुमको भी हमारे पैर दबाने का अधिकार प्राप्त हो गया।"

[श्री रघुवर चरितामृत : पृ० ६७]

—श्री श्री चच्चा जी सा० ने अपने सद्गुरुदेव [द्वय] के उपर्युक्त आदर्शों का अनुपम अनुकरण किया। प्रत्येक प्रेमी भाई की उन्होंने किसी न किसी रूप में सेवा की। पड़ोसी भी उनके इस सेवा भाव से अनुगृहीत हुए। किन्तु एक सत्सगी भाई की सेवा तो एक अन्यतम आदर्श ही बन गयी। दिसम्बर १९४९ में सत्सगी भाइयों को दो-तीन बसों में साथ लेकर चित्रकूट, अयोध्या, मथुरा आदि स्थानों की तीर्थ यात्रा का कार्यक्रम बनाया गया। एक सत्सगी भाई को दस्त आ रहे थे। उनकी बड़ी इच्छा थी। उन्होंने रोकर निवेदन किया कि हम कैसे जा पावेंगे। श्री श्री गुरुदेव ने आश्वस्त किया तथा साथ ले लिया। उन्होंने उन प्रेमी भाई की सेवा का भार स्वयं लिया। आगे तीर्थ यात्रा में वह बहुत शिथिल हो गये तो श्री श्री गुरुदेव शौच के बाद उन्हें स्वयं अपने हाथों आबदस्त दिलाते थे। बार-बार दस्त होते और श्री श्री गुरुदेव आबदस्त दिलाते तथा साफ करते। यह दृश्य जिसने देखा वह गद्‌गद् हो गया और अपने आप में यह कमी पाकर लज्जित भी हुआ। **सेवा के ऐसे आदर्शों से ही (अहंकार दूर होकर) ईश्वरीय प्रेम के भाव जाग्रत होते हैं।**

३—संत साधना

३.१ वैज्ञानिक मानसिक शोध प्रक्रिया

३.२ संत साधना स्वरूप

३.३ साधना : तीन अंग

३.४ जाप

३.५ साधन : सातत्य एवं नित्यता

३.६ सत्संग

३.७ साधन मार्ग की कठिनाई एवं
साधनगत मन की बाधाओं का निराकरण

३.८ भूतकाल के बाधक विचारों का निराकरण

३.९ साधन : जिज्ञासा समाधान

३.१० साधन प्रभाव

साधना

++++++++

साधना का अर्थ है प्रयत्न करना, लगना। साधना का अर्थ सिद्धि भी है। आत्मानुसंधान के मार्ग में अपनी आत्मा को परमात्मा में लीन कर "पूर्णमदः पूर्णमिदम्" की अनुभूति के पथ में हमारी जो कुछ भी आत्मिक चेष्टायें होती है, उन सबका नाम साधन है। नदी की धारा ऊँचे उठती है, नीचे ढलती है, बन-पर्वत को लांघती हुई बढ़ती जाती है। क्यों, किसलिये ? इसलिये, कि अन्त में अपने आपको समुद्र की गोद में सुला दे, लीन कर दे, मिटा दे। मनुष्य की आत्मा भी भाग्य के चढ़ाव-उतार, सुख-दुख, हर्ष-विषाद और ऐसे ही जीवन के विविध खट्टे-मीठे अनन्त अनुभवों को पार करती हुई सतचित् और आनन्द के एक अनन्त महासागर में अपने आपको डाल देने के लिये व्याकुल है, बेचैन है। नदी का लक्ष्य है समुद्र और मनुष्य का लक्ष्य है भगवान्।

(श्री श्री चच्चाजी सा० : झांसी सत्संग में प्रवचन)

"भीतर ऊपर और सभी चीजों से अस्पष्ट बने रहना, आंतरिक चेतना और आंतरिक अनुभूति से भरपूर रहना—जब आवश्यकता हो तो बाहरी चेतना से किसी की ओर कान देना पर उसे भी विक्षुब्ध हुये बिना करना, न तो बाहर की ओर खिंच जाना न आक्रान्त हो जाना—बस यही है साधना करने की सर्वांग पूर्ण अवस्था।"

—श्री अरविन्द

३.१.१—वैज्ञानिक मानसिक शोध प्रक्रिया

भवानी शंकर
सत्संग आश्रम घोसीपुरा, उरई
२४.८.५१

ॐ

प्रिय ... ...

ईश्वर कृपा करें। प्रेम पत्र मिला... ... जिस प्रकार आप सांसारिक विद्या की किसी विषय पर [रिसर्च] शोध करके डिग्री प्राप्त करना चाहते हैं, उसी प्रकार मैं आशा करता हूं कि आप मानसिक शक्तियों का शोध [रिसर्च] करके उसका अनुभव प्राप्त करें। ईश्वर कृपा करें।

शु० चि०
भवानी शंकर

टीप : १ विज्ञान सम्मत क्रमबद्ध आत्मज्ञान को सतमत कहते हैं, अर्थात् आत्मिक विद्या के आंतरिक इल्म को साइन्टिफिक तरीके से हासिल करना सतमत है।

[श्री श्री लालाजी सा० : आध्यात्मचर्चा से साभार संकलित]

२-आध्यात्मिक विद्या गुरुगम्य है। पुस्तकों से वह सीखी नहीं जा सकती।

[श्री श्री चच्चाजी सा०]

३-'यह इल्म सीना है, सफीना नहीं' यह विद्या गुरु के हृदय से शिष्य के हृदय को प्राप्त होती है। यह पुस्तकों की विद्या नहीं है, पुस्तकों से प्राप्त नहीं हो सकेगी। [यह मनगत अनुभूतियों या हालतों की विद्या है]।

श्री श्री बाबूजी सा० [परमसंत महात्मा डा० श्यामलालजी]
[गाजियाबाद]

4- Each Soul is potentially divine. The goal is to manifest the divinity within by controlling nature, External and Internal. Do this either by work or worship or Psychic control or philosophy : By one or more or all of these and be free. This is the whole religion Doctrines or Dogmas or rituals or books or Temples or forms are but secondary details.

—Vivekanand

५–सूफी संत साधना—"सूफीमत ११वीं शताब्दी में एक रहस्यवादी आंदोलन के रूप में शुरू हुआ। मुहम्मद साहब के परदा करने के बाद इस्लाम के अनुनायियों में संत सूफियों की एक ऐसी परम्परा चली जिन्होंने ईश्वर से व्यक्तिगत सम्पर्क की पद्धति पर आधारित भक्ति, श्रद्धा, प्रार्थना और आध्यात्मिक जीवन पर बल दिया ··· ··· ईश्वर का साक्षात्कार विश्वास, भक्ति और ध्यान से किया जा सकता है।"

[विश्व प्रसिद्ध धर्म, मत एवं सम्प्रदाय,
पुस्तक महल दिल्ली प्रकाशन १९८८ : .०५]

६–संत साधना मुख्य रूप से मन-निग्रह तथा आंतरिक अनुभव की साधना है। इसमें मानसिक शक्तियों का परिचय प्राप्त करना होता है।

श्री श्री चच्चा जी सा० एक कुशल एवं निष्ठावान शोधार्थी है तथा उन्होंने मानसिक शक्तियों के शोध में उच्चा स्थान प्राप्त किया है। इसीलिए वह अपने प्रेमी जनों से भी इस दिशा में आगे बढ़ने की आशा करते हैं।

उन्होंने अपने पत्रों में समय-समय पर मानसिक शोध के संकेत दिये हैं। इसलिए इनको बड़ी सावधानी से पढ़ना और बार-बार पाठ एवं चिन्तन करना चाहिए।

इस शोध प्रक्रिया में श्री श्री गुरुदेव की सक्रिय भूमिका रहती है। उनकी दया व कृपा से ही इस मार्ग में अग्रसर हुआ जा सकता है। उनकी दया व कृपा के लिए हर समय उनका ध्यान बनाए रखना चाहिए। मन की विशेषता है कि जिसका निरन्तर ध्यान करता है, उसी के रूप का हो जाता है। इसप्रकार गुरु रूप होकर ही हम इस शोध कार्य को कर सकते हैं। ईश्वर कृपा करें।

७–मनुष्य में कितनी शक्ति है यह कोई नहीं जान पाया। मनुष्य और ईश्वर अत्यन्त निकट हैं, बीच में बालभर का अन्तर है। जो इस अन्तर को निकाल पाते हैं, वह उस अनन्त शक्ति में मिलकर पूर्ण शक्तिवान बन जाते हैं। प्रभु में मिलकर प्रभुवत् हो जाते हैं।

[साधन अक्टूबर ८३]

—प्रत्येक मनुष्य को कुछ उपयोगी कार्य नित्य प्रति अवश्य करते रहना चाहिये।

—जब तक दो-तीन घंटे आसन सिद्ध कर श्री भगवान् में चित्त लय होने की अवस्था प्राप्त न हो, तब तक माला पर अवश्य ही मंत्र जपना योग्य है।

—पवित्रता तथा उन्नति का आधार सत्सग ही है।

[श्री श्री चच्चा जी साहब]

३.१.२—प्रारम्भिक अभ्यास : विचार शून्यता

भवानीशंकर, सत्संग आश्रम
घोसीपुरा, ऊरई
१२.२.५२

प्रिय ... ...

पूज्य फिलहाल इस प्रकार किया कीजिये कि चुपचाप मौन होकर और आँखें बन्द करके बिना किसी प्रकार के अभ्यास व साधना के जितनी देर तक आप बैठा करते हैं, बैठे रहा कीजिये।

शु० चि०
भवानीशंकर

टीप : १—निस्तब्ध मन और हृदय में भगवान ऐसे दिखलाई देता है जैसे शान्त जल में सूर्य।

[श्री अरविन्द]

२—एक विचार केन्द्रिता :—कुछ न करो, सिर्फ दस मिनट बैठ जाओ और यही विचार करो कि गुरु महाराज के सामने बैठे हो। बस, अगर यह साधना सच्ची है तो आपको थोड़े ही दिनों में दिखाई देगा कि आप क्या थे और क्या हो गये।

[साधन : अक्टूबर ८३]

३—ध्यान और एकाग्रता—ध्यान विशुद्ध रूप में एक मानसिक क्रिया है। इसमें केवल मानसिक सत्ता को ही रस मिलता है। ध्यान करते हुये मनुष्य एकाग्र हो सकता है, पर वह मानसिक एकाग्रता है ... ... २० घंटे ध्यान में बिता सकने के बाद भी बाकी ४ घंटे एकदम साधारण व्यक्ति बने रहेंगे, क्योंकि मन ही केवल ध्यान में तल्लीन था—बाकी सत्ता, प्राण और शरीर दबाकर रखी गई थी ... ... ध्यान में सत्ता के अन्य भागों के लिये कुछ नहीं होता

... ... परन्तु एकाग्रता उससे अधिक सक्रिय स्थिति है। तुम मन में एकाग्र हो सकते हो प्राण में, शरीर में, चैत्य पुरुष में एकाग्र हो सकते हो। **एकाग्र होना अथवा एक बिन्दु पर अपने आपको एकत्र कर लेने की क्षमता ध्यान करने से कहीं अधिक कठिन है।** ... ... अगर तुममें एकाग्र होने की शक्ति है तो तुम्हारा ध्यान बड़ा ही मजेदार होगा ... ... परन्तु मनुष्य एकाग्रता के बिना भी ध्यान कर सकता है। बहुत से लोग अपने ध्यान में विचारों की एक शृंखला का अनुसरण करते हैं, इसे ध्यान कहते हैं, पर एकाग्रता नहीं।

... ... किसी एक केन्द्र में एकाग्र होना—सभी शक्तियों को एकत्र कर सौर चक्र [हृदय] के केन्द्र में ले आओ, और यदि सम्भव हो **तो खूब नीरवता प्राप्त करो, मानो तुम कोई अत्यन्त सूक्ष्म चीज सुनना चाहते हो,** कोई ऐसी चीज सुनना चाहते हो जिसकी ओर पूर्ण रूप से ध्यान लगाने की, संपूर्ण एकाग्रचित्त और सर्वांगपूर्ण निश्चल-नीरव होने की आवश्यकता है, और **जरा भी मत हिलो-डुलो। अब कुछ न सोचो, जरा भी मत हिलो, वरन् अपने आपको इसप्रकार खोले रखो कि जो कुछ ग्रहण करना संभव हो, वह ग्रहण कर लिया जाय ... ...**

४—स्थाई शान्ति और नीरवता :— पहले तुम्हें संकल्प करना होगा फिर कोशिश करनी होगी, लगातार कोशिश करनी होगी ... ... आसन लगाकर बैठ जाओ फिर पचासो चीजों के बारे में सोचने के बदले अपने मन में कहो, "शान्ति, शान्ति, शान्ति" **स्थिरता और नीरवता की कल्पना करो विचारों की ओर दृष्टि न दो, उनके शोरगुल को न सुनो।** जब कोई

तुम को बहुत तंग करता है तब तुम कैसा व्यवहार करते हो और छुटकारा पाना चाहते हो ? तुम महज उसकी बात सुनना अस्वीकार कर देते हो, अपना सिर उसकी ओर से घुमा लेते हो, और दूसरी बातें सोचने लगते हो। बस, उसी ढंग से अपने विचारों के साथ भी बर्ताव करो।

बार-बार चुपचाप बैठ जाने का मौका ढूंढ़ा करो "शान्ति" का जादू पैदा करो। जैसे ही तुम सवेरे सोकर उठो, वैसे ही इसको करो और जब शाम को सोने जाओ तब उससे पहले करो। इससे तुम्हारे स्वास्थ्य पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा, भोजन प्रारम्भ करने से पहले भी दो-एक मिनट करो। तुम यह देखकर चकित हो जाओगे कि इससे भोजन हजम करने में कितनी अधिक सहायता मिलती है।

४—आंतरिक उन्नति की कसौटी :— ··· ··· जीवन की घटनाओं और वस्तुओं के संपर्क में आते ही ··· ··· एकदम बाह्य ढंग से यह जांच कर सकते हो कि आया तुमने कोई प्रगति की है या नहीं, आया तुम अधिक शान्त स्थिर, अधिक सचेतन, अधिक सबल, अधिक निःस्वार्थ हुए हो या नहीं, आया तुम में कोई कामना या आसक्ति है या नहीं, आया तुममें कोई कामना या आसक्ति है या नहीं, आया तुममें कोई कमजोरी या अविश्वास-पात्रता है या नहीं ···

(श्री माँ– श्री अरविन्द : 'ध्यान और एकाग्रता' से साभार)

—कष्ट से सत्य अथवा परमात्मा की प्राप्ति अनायास हो जाती है।

(श्री श्री चच्चाजी साहब)

३.२ संत साधना स्वरूप

भवानीशंकर
सत्संग आश्रम, घोसीपुरा उरई
२-८-५१

ॐ

प्रिय ··· ···

ईश्वर कृपा करें। प्रेम पत्र मिला।

··· ··· जहाँ दूसरों से सम्बन्धित होकर के मानसिक पूजा का सेवा रूप में साधन होता है, वहाँ आदर पूर्वक भाव व प्रेम के सहित स्वरूप की स्थिति में ठीक आसन से बैठकर अपने आपको तथा अपने से सम्बन्धित को इष्टदेव के स्वरूप में लीन कर देना चाहिए।

शु० चि०
भवानीशंकर

टीप : १—व्यक्तिगत अभ्यास साधन में आचार्य अपने शिष्य को सम्मुख बिठा लेते हैं तथा तवज्जह देते हैं—अपने हृदय से शिष्य के हृदय पर दिव्य प्रकाश डालते हैं। यह आध्यात्मिक शक्ति ही शिष्य के हृदय को निर्मल बनाती है तथा निर्मल मन किंवा हृदय में प्रभु दर्शन होते हैं।

२—"न चक्रों को बेधने की जरूरत है न अनाहत शब्दों में अपने को अटकाने की जरूरत है। गुरुदेव से अपना प्रेम सम्बन्ध दृढ़ करो। उनसे शक्ति खींचो और शक्ति द्वारा हृदय के मल और आवरण को नष्ट कर डालो। साधक का काम केवल शक्ति

खींचना है और अपने अन्दर उसे भरना है। बाकी काम वह शक्ति अपने आप करेगी। साधक को न तो कोई परिश्रम ही करना है और न किसी क्रिया के करने की जरूरत है। जिस दिन साधक मल और आवरण दूर कर अपने को निर्मल बना लेगा, उसी दिन दर्शन का अधिकारी हो जायगा। दर्शन हो जायेंगे।"

[श्रीमान् चच्चाजी सा० : श्री रघुवर चरितामृत पृ० १३१]

३—श्री श्री चच्चाजी सा० तथा श्रीमान् चच्चाजी सा०, दोनों संतों की तवज्जह देने की एक विशेषता थी। साधकों के बाहरी मन को श्री श्री चच्चाजी सा० परिवारीजनों की कुशल क्षेम पूछने, दुनियादारी की मतलब की बातों के पूछने-बताने में लगा देते थे और श्रीमान् चच्चाजी सा० [कानपुर] किस्से कहने-सुनने में, जो बड़े दिलचस्प होते थे, लगा देते थे, तथा उनके आंतरिक मन को विशेष तवज्जह द्वारा शुद्ध और पवित्र करते रहते थे। किसी को कुछ पता ही नहीं चलता था कि आंतरिक रूप में क्या कुछ हो रहा है।

—मनुष्य दरिद्री उसी समय तक है, जब तक उसको केवल अपने ही पेट पालने और अपने ही दुःख निवारण की चिन्ता रहती है।

—नित्य प्रति नियमानुसार श्री भगवान की उपासना करने से मनुष्य के अनेक जन्मों के पापों का नाश हो जाता है और उसे श्री भगवान के दर्शन अवश्य होते हैं।

(श्री श्री चच्चाजी सा०)

३.३ साधना : तीन अंग : अभ्यास, सेवा, बुद्धि प्रयोग

३.३.१ अभ्यास : नियमित एवं नित्य करना

[साधन के लिये] बिना अभ्यास के कुछ भी नहीं हो सकता। नागा होने की वजह यही समझ में आती है कि हम लोग इस काम को और कामों के बराबर नहीं समझते जैसे—पाखाना, पेशाब जरूरी है, हम किसी भी हाल में हों लेकिन इनको नहीं टाला जा सकता, उसी प्रकार अभ्यास को नहीं टाला जाना चाहिए"... ... ...

झांसी सत्संग
३०-८-४६

अभ्यास : आंख खोलकर करना

"इस बात का भी अभ्यास करना चाहिये कि आंखें खोलकर अभ्यास हो सकता है या नहीं। आंखें खुली हुई रखकर अभ्यास करना आंखें बन्द करके अभ्यास करने से मुश्किल है और ज्यादा असर का है। हम लोगों को चाहिये कि ठीक हो करके ठीक सम्पर्क [कनेक्शन] जोड़ दें और बैठे रहें।

झांसी सत्संग
२३-९-४५

टीप : १—अभ्यास करने के तीन दर्जे :

१. आंख बंद करके गुरु को प्रत्यक्ष में या कल्पना द्वारा सामने बिठलाकर उनके हृदय से अपने हृदय में प्रकाश आता महसूस करें और वहां से अपने सारे शरीर में नाड़ियों द्वारा फैलता अनुभव करें।

२. अपने हृदय रूपी आइने में गुरु को बैठा हुआ और 'ॐ ॐ' का उच्चारण [जाप] करते हुए अनुभव करें। ख्याल की आंख से देखें कि गुरु 'ॐ' कह रहे हैं, ख्याली जुबान से 'ॐ' 'ॐ' करता रहे और ख्याली कान से सुनता रहे।

३. ऐसा अभ्यास पक्का करे कि मैं नहीं हूं, गुरु ही बैठे हैं, यह मेरी आंख, कान, नाक आदि नहीं गुरु के हैं। उनके शरीर रूपी

खोल में मैं घुस गया हूं। अब मैं 'मैं' नहीं, 'गुरु' हूं। यह सब काम वही कर रहे हैं।

[श्रीमान् चच्चाजी सा०, कानपुर]

२—अभ्यास : संतों के तीन मुख्य साधन हैं—

सद्गुरु, सतनाम, सत्सग ।

सद्गुरु—जो शिष्य को आंतरिक चढ़ाई में क्रियात्मक शिक्षा द्वारा अपने आत्मबल से धुर तक पहुंचा सके।

सतनाम—आन्तरिक जाप जो गुरु कृपा व क्रियात्मक शिक्षा से प्राप्त होता है। जब जागृत हो जाय तो अहोभाग्य, निरन्तर उसकी उपासना में लगे रहें।

सत्संग—गुरु के साथ आन्तरिक सत्संग।

इन्हीं को सूफियों ने इस प्रकार कहा है—

पीर कामिल की सोहबत : (आन्तरिक सत्संग)

जिक्र : (सतनाम जाप)

मराकबा : तवज्जह् लेना अर्थात् ध्यान और गुरु से शक्ति लेना

राबता शेख : गुरु का ध्यान चिन्तन और स्मरण।

[श्री रघुवर चरितामृत पृ० ३४]

३—गुरुध्यान के कई अभ्यास बताये गये हैं—

साकित रहे यानी ज्यों का त्यों रहे और यह सोचा करे कि मैं नहीं हूं। जो कुछ है वह ही है। यह रास्ता बहुत नजदीक है।

[श्री श्री लालाजी सा० : कमाले इंसानी]

"अगर किसी तरह तुम्हारे अन्दर यह ख्याल पैदा हो जावे कि सतपुरुष मालिक हमारा मरकज़ [केन्द्र] है और हम उससे निकले हैं तो तुम में प्रेम के जज़बात पैदा होकर तुमको खास किस्म की हालत अता करेंगे और तुमको खुद व खुद रूह [आत्मा] और माद्दा [माया] वगैरह की समझ आती जावेगी।

[श्री श्री लालाजी सा०]

३.३.२ सेवा

३.३.२.१

— ··· मगर खाली अभ्यास से भी काम नहीं चलेगा जब तक कि हम अपना ध्येय भी न बना लेवें। **वह ध्येय सेवा का होना चाहिये।**

[श्री श्री चच्चाजी सा०]

३.३.२.२

प्रिय भाई जी··· ···

झांसी, २०-३-४१

परमात्मा गुरुदेव सदैव आपकी रक्षा करें ··· ···

गुरु महाराज से प्रार्थना है कि आपका **ईश्वरीय प्रेम सबकी यथार्थ सेवा के लिए हो। सबको सेवा रूप से अपने प्रेम का परिचय देते रहने का साधन करते रहिये** ··· ···

शु० चि०
भवानीशंकर

३.३.२.३

— ··· वंशकुल एवं खानदान वही उत्तम और जगत पूज्य है जिसमें **श्री भगवान की भक्ति की वृद्धि होकर निःसहाय और दुखी प्राणियों की भाव और प्रेम सहित निरन्तर सेवा होती रहे।**

[कर्त्तव्य पालन और सदाचार : दूसरा पाठ]

३.३.२.४

··· ··· अपने घर के सब लोगों में रहते हुये अपना ऐसा ख्याल करना चाहिये कि **ये सब ईश्वर की संतान हैं और ईश्वर ने हमको उनकी सेवा के वास्ते भेजा है। अगर सेवा में कुछ कमी हुई या ठीक सेवा न हो पाई तो ईश्वर हमसे नाराज होगा** और हम अपने मार्ग से नीचे गिर जायेंगे, इस ख्याल को पुख्ता करने से मोह छूट जाता है और प्रेम आने लगता है क्योंकि हम फिर जो कुछ भी किसी की

सेवा करेंगे वह बगैर किसी स्वार्थ के होगी। ...... **हम सब संसार को ईश्वरमय देखें और हम दास होकर सबकी सेवा करें, इसी को भक्ति कहते हैं।**

[झांसी सत्संग, २८-१२-३९]

३.३.२.५

निष्काम प्रेम भाव से **बिना किसी भेदभाव व पक्षपात के प्रत्येक प्राणी की सेवा करना** साक्षात ईश्वर की सेवा करना है।

[कर्त्तव्य पालन व सदाचार : दूसरा पाठ]

अगर हम भगवान की सेवा करते हैं, जाप करते हैं, पूजा करते हैं, साधन व अभ्यास करते हैं तो हमारा यह भी कर्त्तव्य होना चाहिये कि हम दूसरों की भलाई के लिये मन, वचन और कर्म से हार्दिक प्रार्थना करें।

[श्री श्री चच्चाजी सा० : नरहरिउपदेश]

सेवा— मखलूक की खिदमत से ही सच्ची भक्ति नसीब होती है। ...... जब तक हृदय शुद्ध न होगा, ईश्वर की सच्ची मोहब्बत दिल में भरी न होगी, खिदमत करना आ ही नहीं सकता। जैसा बर्ताव जहां चाहिए वहां वैसा ही अदा हो जावे, भला यह कैसे जाना जा सकता है। जब तक 'मैं' और 'हम' बने हैं, ख्याल भी बना है कि मैं सेवा करता हूं, सेवा नहीं हो सकती।

[पीयूष वाणी : पृ० ६०]

—कष्ट से सत्य अथवा परमात्मा की प्राप्ति अनायास हो जाती है।

[श्री श्री चच्चाजी सा०]

३.३.३ बुद्धि प्रयोग

इन सबके साथ-साथ बुद्धि का प्रकाश यानी फैलाव का भी होना बहुत लाजमी है। जैसे अगर कोई लड़का स्कूल में पढ़ता है और मास्टर साहब ने उसको एक सवाल करके बता दिया और उसको खूब समझा दिया। अब अगर वह लड़का बुद्धिमान है तो वह अपनी बुद्धि लगा कर इस सवाल के जरिये से और भी कई सवाल लगा सकता है ......। इसी तरह से ईश्वरीय मार्ग में भी हम सबको बुद्धिमान [इंटेलीजेन्ट] बनने की कोशिश करना चाहिए ताकि अगर हमको एक बात मालूम हो गई तो हम उस बात को और कामों में ठीक-ठीक प्रयोग करके उन सब कामों को हल कर सकते हैं और अगर ऐसा नहीं कर पाते तो फिर इस मार्ग में तरक्की करने से कोई फायदा नहीं हो सकता।

बुद्धि के फैलाव की शक्ति प्राप्त करने के लिए पूजा के बाद हमको अपनी हालत को परखना चाहिए कि कैसी हालत है, दिमाग का क्या हाल रहा, शरीर का क्या हाल रहा, मन का क्या हाल रहा, ख्यालात वगैरह कैसे आये। इनका क्या असर रहा और हर चीज को देखकर के इन सबका निपटारा ठीक-ठीक करें यानी जिस चीज की ज्यादती या कमी हो, वह सब धीरे-धीरे पूरी होती चली जावे। वह काम हमको अपनी बुद्धि से करना पड़ेगा। यों शुरू में बड़ी दिक्कत सी मालूम होगी ...... **मगर धीरे-धीरे अभ्यास करने से सब ठीक से हो जायेगा और हर चीज का या हर ख्याल वगैरह का निपटारा ठीक-ठीक होने लगेगा।**

झांसी सत्संग, १८-८-४६

—ज्ञान ही सुख के भण्डार की कुंजी है। अतः जिस तरह भी संभव हो सके उसे प्राप्त करना चाहिये।

[श्री श्री चच्चाजी सा०]

गुरुदेव में लीन होकर "गुरुदेव की जय हो, गुरुदेव की जय हो" का जाप करना ही चैतन्य समाधि है।

[श्री श्री चच्चाजी सा०]

जिक्र या जाप जियादा जरूरी है, और उसी को पहले शुरु करना चाहिये।

[श्री श्री लालाजी सा० : कमाले इंसानी]

टीप : १—समय को अमूल्य समझकर प्रत्येक श्वांस को भाव सहित श्री भगवान के स्मरण तथा ध्यान में लगाये रहने का अभ्यास तथा साधन करते रहने से मनुष्य को सदाचार की प्राप्ति होकर यथार्थ कर्त्तव्य पालन तथा सेवा करने की शक्ति प्राप्त होती है।

[श्री श्री चच्चाजी सा० : कर्त्तव्य पालन और सदाचार १४ वां पाठ]

२—जाप सिर्फ ॐ का करे। रामायण की चौपाई पढ़ने के पश्चात कम से कम एक माला 'ॐ' का जाप निम्नलिखित विधि से करें—

इस ॐ के जाप में जबान बिल्कुल न हिलाई जाय। जाप सिर्फ मन से—आंतरिक जाप किया जाय। **जाप के समय हर प्रकार से ध्यान हृदय चक्र पर रहे और ॐ शब्द की ठेस बराबर हृदय में लगाते रहें।**

राम नाम में भक्ति और ॐ नाम में शक्ति है। रामायण की चौपाई प्रथम पढ़ने का आशय यही है कि भक्ति से शक्ति 'ॐ' पर आये। हृदय पर ठेस देने से आशय यह है कि प्रेम जाग्रत हो जो कि ईश्वर प्राप्ति का निश्चित मार्ग है। ['पूजा की विधि']

[डा० वीरेन्द्रकुमार सक्सेना : श्री रामाश्रम सत्संग गाजियाबाद का प्रकाशन]

३—भले 'राम' नाम जीभ पर हो और मन में दूसरे विचार आते रहें (किन्तु) जीभ से राम नाम इतना प्रयत्न पूर्वक लें कि अन्त में जो जीभ पर हो, वही हृदय में भी प्रथम स्थान ले ले। फिर मन चाहे जितना मिथ्या प्रयत्न करे तो भी एक भी इन्द्रिय उसके वश में नहीं होने देनी चाहिये।

महात्मा गांधी : बापू के पत्र [स० सा० म० १९५७]

४—यदि कोई रोज पन्द्रह से बीस हजार का जाप करता है, तो मन स्थिर होता है। यह बिल्कुल सत्य है। मैंने स्वयं इसका अनुभव किया है।

श्रीमां शारदादेवी : 'मन' अद्वैत आश्रम, कलकत्ता ८१ पृ० १२३

५—श्री श्री चच्चाजी साहब ने रामनाम जाप पर सदा विशेष बल दिया— चित्रकूट यात्रा के समय उन्होंने सभी प्रेमी भाइयों से अपेक्षा की थी कि वे हर समय जाप करते रहें। यह संभव न हो पावे तो २१६०० रामनाम का जाप अवश्य करें। यह दो घंटे में पूरा हो जाता है। प्रारम्भ में वह स्वयं १००० माला प्रतिदिन जाप करते रहे (देखें आत्मकथा)

६—श्री मां व श्री अरविन्द के सदसंगत विचार इसप्रकार हैं—

जब कोई नियमित रूप से किसी मंत्र का जाप करता है तो बहुत बार जाप अपने आप भीतर में होना प्रारम्भ हो जाता है। इसका मतलब है कि आंतरिक सत्ता के द्वारा जाप होने लगा है। इस ढंग से जाप अधिक फलदायक बन जाता है।

"हमारी साधना का मंत्र—साधारणतया साधना में व्यवहृत होने वाला एकमात्र मंत्र है, श्री मां का मंत्र या मेरे और श्री मां के नाम का मंत्र।"

७—श्री श्री चच्चाजी सा० से एक साध्वी साधिका ने कहा कि हमसे 'ॐ' 'राम' कुछ भी नहीं बनता, तो चच्चाजी सा० ने पूछा 'फिर क्या बनता है' तो उन्होंने निवेदन किया कि 'हमसे तो 'चच्चा चच्चा' बनता है।' इस पर गुरुदेव ने कहा कि अच्छा तुम यही जपा करो।

८–श्रीमान् चच्चा जी साहब (कानपुर) के एक प्रेमी भक्त श्री रामप्रसाद जी माथुर (अवकाश प्राप्त कैप्टन) मथुरा, ने एक जाप मंत्र बनाया था–

–राम रघुवर, राम रघुवर, राम रघुवर पाहिमाम।
राम रघुवर, राम रघुवर, राम रघुवर रक्षमाम॥

–नमस्ते की जगह वह 'जय राम रघुवर' करते-कराते थे।

–दो पंक्तियां और बनाई थीं तथा इनको गाते–गुनगुनाते हुए ही उन्होंने शरीर छोड़ा –

"चच्चा चच्चा मैं पुकारूं तेरे दर के सामने।
चच्चा चच्चा हम कहेंगे तेरे दर के सामने।"

–एक बार उनको आते हुए श्रीमान चच्चाजी सा० ने ऊपर से देख लिया था और देखते हुए तवज्जह देना शुरू कर दिया था। इस घटना से संबधित ये पंक्तियां लिखी थीं–

गुंजित करदो पथ का कण-कण ये मधुशाला जिन्दाबाद।
देख लिया है हमको आते धार लगी गिरने मदिरा की,
ऐसा साकी जिन्दाबाद॥

९–नाम, साधन की सुदृढ़ता तथा सहजता के लिये सुनिश्चित आधार है। साधन का प्रवेश द्वारा ही नाम है। इसके सहारे ही साधन-मार्ग में आगे बढ़ा जा सकता है। नाम से ही नामी की पहचान और नामी तक गति हो सकती है।

१०– इष्टदेव के शब्दों की आज्ञा का पालन करना ही नाम है महामंत्र भी वही है जो संत का वचन हो, आदेश हो। इसको सब नहीं समझ सकते, केवल अधिकारी ही समझ सकते हैं, … एकबार गुरु महाराज के यहां फतेहगढ़ में सत्संग हो रहा था। गुरु महाराज ने मुझसे कहा -तुम वहाँ जाकर खड़े हो जाओ, किसी को छींक न आवे। मैं यही मंत्र जपता रहा कि किसी को छींक न आवे। उनकी कृपा से ऐसा ही हुआ कि किसी को छींक नहीं आई।

[नरहरि उपदेश भाग-१- १९७१ पृ० २७ से उद्धृत]

१.५ साधन–सातत्य एवं साधन नित्यता

१.५.१ साधन–सातत्य

ॐ

भवानीशंकर
सत्संग आश्रम घोसीपुरा, उरई
२२-९-५२

प्रियवर … …

ईश्वर कृपा करें। आपकी साप्ताहिक रिपोर्ट मिली। **आपने जो विवरण लिखा है, वह आपके संग का कारण है। अतः किसी भी हालत में अपने स्वरूप की स्थिति से विचलित न होना चाहिये।** ऐसी साधना करते रहने का प्रयत्न करते रहना चाहिये।……

शु० चि० : भवानीशंकर

१.५.२ साधन नित्यता : नित्य अभ्यास दृढ़ता से करना

(१) … … यह बात भी जरूरी है कि चाहे ईश्वर की याद बहुत थोड़ी देर के वास्ते ही क्यों न की जाती हो **अगर वह समय की पाबन्दी और बिना नागा के की जाती हैं तो जरूर पावर पैदा होगी।**

झांसी सत्संग : १९-८-४६

अगर हम अभ्यास [नियमित रूप से] पंक्चुअली, रेगुलरली यानी बिना नागा, नियम से समय पर करते रहेंगे तो फिर कोई वजह समझ में नहीं आती कि फायदा क्यों न हो, जरूर फायदा होगा। … …

झांसी सत्संग : २०-८-४६

(२) हम सबको यह नियम बना लेना चाहिये कि **जितनी देर हमको पूजा में बैठने के वास्ते कहा गया है या हमने निश्चित किया है कुछ भी हो चाहे तबियत लगे या न लगे, बराबर हम उतनी देर तक पूजा में जरूर बैठेंगे।** हमारा काम तो सिर्फ पूजा के वास्ते बैठ जाने का है, तबियत लगना या न लगना इसकी जिम्मेदारी हमारे

ऊपर नहीं है, यह उसकी मर्जी पर है। जब हमसे पूछा जायेगा कि तुमने ईश्वर की याद की तो हम कह सकते हैं कि साहब हम तो रोज बैठ जाते थे। तबियत लगने या न लगने के बारे में हम कुछ नहीं कह सकते हम **अपनी ड्यूटी रोजाना बिना नागा पूरी करते रहे।**

झांसी सत्सग : १०-८-४६

भवानीशंकर
सत्संग आश्रम घोसीपुरा, उरई
१२-७-५४

(३) प्रिय··· ईश्वर कृपा करें।

सबसे आवश्यक बात आपके लिए यह है कि **दृढ़ता के साथ समय की पाबन्दी के साथ साधना करें।** इसके पश्चात निश्चित समय पर आध्यात्मिक अभ्यास की साधना नियम पूर्वक बिना नागा करते रहें। ऐसा करने से, ईश्वर की कृपा से आपको शारीरिक व मानसिक शक्ति प्राप्त होती रहेगी। ··· ···

शु० चि० : भवानीशंकर

टीप : आध्यात्मिक अभ्यास साधन को नित्यप्रति निश्चित समय पर करते रहने के लिए श्री श्री चच्चाजी सा० ने प्रायः सभी प्रेमी भाइयों को आग्रह पूर्वक लिखा है और साधन नित्यता पर बड़ा बल दिया है। यह अभ्यास का वस्तुतः मूल तत्व है और इसी से साधन व अभ्यास की प्रगति होती है। उन्हीं के शब्दों में उल्लेनीय है—

"मैंने दौड़े वाली नौकरी भी की। रेल व घोड़े पर जाना पड़ा। अंग्रेज अफसरों के सामने भी जाना पड़ा। घर के लोग बीमार पड़े, दवा आदि की व्यवस्था की। स्वयं को तकलीफ हुई। मृत्यु आदि भी हुई, **परन्तु पूजा ठीक उसी समय पर होती रही। कभी घोड़े पर, कभी रेल में सभी जगह। चाहे घर में हों या रास्ते में हों, चाहे दस्त लग रहे हों परन्तु पूजा समय से करते जाओ।"**

श्री श्री चच्चाजी सा०
सत्संग प्रवचन : १२-१०-५९

३.६.० सत्संग

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत्संग॥

बड़े भाग पाइब सत्संगा।
बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा॥

"जो फल जप करने, प्राणायम, तीर्थ, व्रत व अनेक प्रकार के शुभ कर्म करने से प्राप्त होता है, **उन सब का फल सत्संग में बिना प्रयास प्राप्त हो जाता है।"**

"शरीर की बाह्य तथा आंतरिक पवित्रता तथा उन्नति का आधार सत्संग ही है।"

"सत्संग द्वारा बिना ही परिश्रम तथा कष्ट के सत्य अथवा **परमात्मा की प्राप्ति अनायास हो जाती है।"**

"सत्संग के प्रभाव से बुद्धि तीव्र तथा चैतन्य होती है और बुद्धि के चैतन्य होने से **हृदय में प्रकाश बढ़ता है।**

"जब तक जीव बहिर्मुख है तब तक वह श्रीभगवान की दया का अनुभव नहीं कर सकता, जीव को अन्तर्मुख कौन करावे? **सत्संग ही जीव को अन्तर्मुख करके हृदय की ग्रन्थि खोलता है।"**

"सत्संग किये बिना केवल ग्रंथ अवलोकन द्वारा अभ्यास करने से सब साधन व्यर्थ जाते हैं। इसलिये **ज्ञान व भक्ति प्राप्त करने के लिये अनुभवी महात्माओं के पास सत्संग अवश्य करना चाहिये।**

—श्री श्री चच्चाजी सा०

३·६·१ सत्संग : दादा गुरु महात्मा श्री श्री रामचन्द्रजी महाराज [सत्संग के सम्बन्ध में श्री श्री लालाजी सा० का लेख साभार उनके आशीर्वाद के रूप में संकलित किया गया है ।]

सत् के संग का नाम सत्संग है । सत् है नाम मालिक का और वह वहां रहता है, जहां सन्त सद्गुरु विराजमान होते हैं तथा जहां सच्चे मालिक के भक्तों का मजमा रहता है । ऐसा क्यों है ? क्योंकि जहां जिस ख्याल में जिस श्रेणी में और जिस जजबात के लोगों की शक्लें नजर आती हैं, वहां का इमकान वैसा हो जाता है, जैसे मदरसों और कालेजों का है, दवा का इमकान शफाखानों, दवाखानों और अस्पतालों का है; गर्मी का इमकान वहां है, जहां आतिशकदें हैं और लकड़ियों का अम्बार जल रहा है । तरावट का इमकान वहां है जहां पानी की बूंदे इकट्ठी होकर समुद्र बनाती हैं, फूल और फूल के दरख्तों के मजमुए और हरी-भरी क्यारियों की कसरत में बाग नज़र आता है । गर्मी के परमाणु एक-दूसरे से गुथ कर अग्नि की शक्ल व सूरत की जयारत कराते हैं । यह भी सच है कि जहां भक्त-जन निवास करते हैं, वहां ही मालिक रहता है, क्योंकि वहां भक्ति के जज़्बात का, प्रेम के ख्यालात का और अच्छे भावों के महसूसात का अम्बार है । **यह भक्ति के जज़्बात, प्रेम के ख्यालात और अच्छी भावना के महसूसात की मजमुई सूरत सचमुच मालिक की सूरत है,** जिससे प्रेम की लहरें भरपूर निकल कर दुःखों के सताये हुए प्रेमियों के खेत रूपी दिल को शादाब व सैराब वगैरह करते हैं, फिर उनसे दूसरे प्राणियों को सुख व शान्ति वगैरह नसीब होती है और फिर भक्तों का मजमा एक उमड़ता हुआ बेपायां किनार-ए-समुन्दर है, जिसके प्रेम की लहरें आसमान से बातें करती हैं । इसी तरह से सारी ज़मीन व आसमान अर्श-कुरसी तबकात अलूए सिफली उसके ठण्डे करने वाले व पाक करने वाले असरात से शान्ति को प्राप्त होते रहते हैं । फिर यह संसार एक जबर्दस्त आतिशकदा है, जिसमें तीन तरह के दुःखों की प्रचण्ड अग्नि

जोर व शोर के साथ जल रही है और प्राणी उसमें ईंधन की तरह जल रहे हैं । इनकी आह व फुगां के नालों से कान बहरे हो रहे हैं । इन मुसीबतजदों की सूरत कौन देखे ? मगर ऐसी मुसीबत में सन्तों का सत्संग ऐसी नियामत बेबहा है, जो संसार के सताये हुए प्राणियों के लिए शान्ति व सुख, सब्र व अकीदत का आधार होजाता है और वह उसका सहारा लेते हैं और शान्त होकर सिर्फ आप ही आप इस भव-सागर से पार हो जाते हैं; बल्कि फिर उनके मिलने जुलने वाले साथी भी अगर रफाकत का दम भरते हैं तो वे भी तर जाते हैं और अगर यह सही है कि नदी नालों का जल गंगा जी में जाकर गंगाजल होजाता है, अगर यह सच है कि लोहा पारस से मिलकर कुन्दन होजाता है अगर यह वाकई सच है कि अण्डार (एरण्ड) व नीम के दरख्त चन्दन के पास रहने से खुशबूदार होजाते हैं, **तो यह भी करीब कयास है कि जो बराबर सत्संग में जाते हैं, उन पर सन्त का रंग चढ़ जाता है और वह परमार्थ की खराद पर चढ़कर नये रंग में प्रकट होते हैं । सत्संग की महिमा कौन बयान कर सकता है ?** किसके मुंह में जबान है, जो उसकी बड़ाई करे ? सत्संग एक महफिल है, जिसमें सन्त सत्गुरु शमा की तरह प्रकाशवान होकर सबको अपना प्रकाश देते हैं और जो इस प्रकाश में जेरअसर आजाता है, वह अपने को देखता है और दूसरों को देखता है, गुरु को देखता है, यहां तक तो दुई का दरजा बाके रहता है, लेकिन जहां प्रकाश ने अपना असर किया वह प्रकाश रूप बनकर शमा की तरफ परवाना की सूरत में दौड़ता है और उससे मिलकर एक होजाता है । यह तौहीद और वहदत है, **फिर उनकी जिन्दगी अपनी जिन्दगी नहीं रहती, वह गुरु की जिन्दगी होजाती है, वह नफसानियत से आजाद होजाते हैं और मालिक आप उनके दिल में और दिमाग वगैरह में जगह कबूल करता है,** यह फनाफिल्शेख और फनाफिल्ला का दरजा है । पारस के छू जाने से लोहा सोना होजाता है,

उसकी कदर व कीमत बढ़ जाती है; मगर वह धातु का धातु बना रहता है और फिर भी पारस नहीं होता—मगर सत्संग की महिमा कोई क्या कहे ? जैसे सत्संग किया, वह 'सत' होगया; उसके हिस्सा में हमेशा की जिन्दगी आगई । दुनियां में हमदर्द इंसान देखे जाते हैं, जो बहुत तदबीरों से दुःखों का इलाज बताते हैं, मगर **कोई ऐसा नजर नहीं आता कि हर तरह से लोगों के दुःख खुद ले ले और उनको अपना जैसा बना ले। यह महिमा सिर्फ सत्संग और संत संग वगैरह की है।**

सत्संग में काल और माया वगैरह की अमलदारी नहीं रहती और इंसान इसमें जाकर आपे को भुला देता है; खरबूजा को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है; कहानियत का फुब्बारह जारी है जो आया उस पर प्रेम का बूंद छिड़क दिया गया और वह प्रेम की मूरत बन गया। कहानी नुक्ता निगाह से अगर तुम काल और माया के असली मुराद को नहीं समझते, तो जाहिरी तौर पर ही उसका अर्थ बताया जा सकता है। काल कहते हैं वक्त को, माया कहते हैं संसार और संसारी पदार्थ की वासना को और तफकुरात वगैरह को। सत्संगी सत्संग वगैरह में आया, श्रद्धा और भक्ति भाव वगैरह लेकर आया, चित्त में भजन सुनता है, शब्द के पुरअसर मजमून में मगन हो जाता है, उसको खबर ही नहीं रहती कि वक्त क्या है और कैसे गुजर गया और जब तक वह सत्संग में है, उसके पास दुनियां की फिक्र भूल कर भी नहीं आती, क्योंकि जहां प्रेम है, वहां खास किस्म के सरूर और महवियत वगैरह की हालत तारी होती है। हम सच्चे दिल से तुमको दावत देते हैं कि सन्तों के सत्संग में जाओ और वहां की तन्दुरुस्ती, ताजगी और हवा तुमको कहानी तौर पर खुद-ब-खुद तन्दुरुस्त व ताजादम वगैरह बना देगी और तुम देखते-देखते बाएखलाक होते जाओगे। सावधान होकर बहुत चित्त वगैरह से रोज-रोज वचन सुनते-सुनते तुमको बाआसानी मन और इन्द्रियों को रोकने

की ताकत आती जावेगी और नेक खयालात के अमृत की धार को निरखार करते हुए, तुम सच्चे मासूम सिफत हो जाओगे और जिस यम और नियम वगैरह की नादान दुनियां डींगे मारती है, उसमें कोई यम और नियम वाला नजर नहीं आता। वह यहां तुमको बतौर जात के मिलेगा। सत्संग में जाकर गुरु और साधा (साधक) वगैरह की सेवा करो—मन, वचन और कर्म से शुद्ध हो जाओगे। कैसी आसानी से हम आप ही आप किसी बाहरी सख्त साधन व यम-नियम वगैरह के बनते जाते हैं। जिस बात के लिए और जगह फिजूल मेहनत करते और फिर भी नतीजा काबिले इत्मीनान नहीं होता, वह सत्संग में बतौर जात के पक्का होजाता है। नादान इसको नहीं समझते और **मूरख जन कोई मरम न जाने, सत्संग में अमृत बरसे।**

टीप : महात्मा गांधी ने सत्संग को शक्तिशाली वस्तु बताया है तथा पवित्र स्नान की भांति आवश्यक प्रतिपादित किया है—

Congregational Prayer is a mighty thing. What we do not often do alone, we do together ... —
It brings us all together with God. It is a real purifing bath All who flock to Churches temples or mosques, are no scoffers or humbugs. They are honest men and women. For them Congregational prayer is like a daily bath, a necessity of their existence.
[Food for the Soul]

—जिसके हृदय से जितना ही स्वार्थ निकलता जावेगा, वह उतना ही नम्र होता जावेगा।

[श्री श्री बच्चाजी सा०]

३·६·२ अभ्यास की हालतें (आध्यात्मचर्चा* से साभार)

संत—भाईजान जब गुरुजी के सत्संग में बैठते हैं तो क्या हालत होती है ? ··· आज की दशा बतायें ।

पहिला सत्संगी—आज मेरी दशा यह थी कि विचार आते रहे लेकिन सत्संग समाप्त होने पर मुझको याद नहीं रहे कि क्या विचार आये थे ।

संत—एक बारात मय बाजों के यहां से निकल गई है जिसके बाजे अभी तक सुनाई दे रहे हैं ··· ··· इसकी बाबत आपको कुछ अहसास हुआ ?

पहिला सत्संगी—जी हां । इस कदर मालूम हुआ कि कुछ गाना बजाना होता है लेकिन यह नहीं मालूम कि क्या गाना-बजाना हुआ है । मेरा चित्त अभ्यास में पूरे तौर पर लगा रहा ।

संत—और कुछ मालूम हुआ ?

दूसरा सत्संगी—एक ऐसी आनन्द की अवस्था थी जो कही नहीं जा सकती है । बदन फूल की तरह हल्का हो गया है ··· ··· मुझको तो यह भी नहीं पता रहा कि मैं कौन हूं, कहां हूं, एक आनन्द ही आनन्द था । चित्त की वृत्ति अपने सेन्टर पर अभ्यास में खो गई थी ।

संत—गीता में स्थित प्रज्ञ † की पहली तारीफ है कि इन्सान की सारी कामनाओं का त्याग हो जाता है । यह हालत आपकी थी । जो भी विचार उठे वह याद न रहे । अतः उनका त्याग हो गया कि नहीं ? यदि आप कोशिश करके इरादा रखकर त्याग करते तो त्याग करने का विचार भी एक कामना हो जाता । अपनी बुद्धि बल से परिश्रम द्वारा भी विचारों का त्याग करना असंभव है ··· ···

---

* प्रो० डा० कृष्णजी डी० लिट्, ५१/२ चन्द्रनगर उरई के निजी संग्रह में पाण्डुलिपि के रूप में उपलब्ध ।

† गीता : स्थितप्रज्ञ वर्णन : २ : ५५–५८ स्थितप्रज्ञ की सभी हालतें अभ्यास साधन से यथासमय हो जाती है ।

पहिला सत्संगी—मैंने सत्संग में कभी भी ख्याल नहीं बांधा कि ख्याल न आवें या याद न रहें ··· ···

संत—संसार के आनन्द को महात्माओं ने दो भागों में बांटा है—

विषयानन्द और आत्मानन्द या परमानन्द ··· ··· क्या आप बता सकते हैं कि ··· ··· यह कैसा आनन्द था ?

पहिला सत्संगी—मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि यह विषयानन्द नहीं था ··· ··· इस आनन्द का कोई जरिया या वसीला इन्द्रिय आदि का नहीं था । आपसे आप आनन्द प्राप्त हो रहा था ।

संत—इस आनन्द को गीता में 'आत्मा द्वारा ही आत्मा में संतुष्ट रहना', कहा है । क्या आपकी समझ में आया कि दूसरी अवस्था आपकी यही थी–आत्मा द्वारा ही आप आत्मा में संतुष्ट थे । ··· ··· मेहरबानी करके यह ध्यान रखें कि गुरु कृपा और ईश्वर दया से ही आपकी यह हालत थी । कभी भी भूल से यह अहंकार न आ जावे कि मैं स्थित प्रज्ञ हूं वरना आप कहीं के न रहेंगे । दूसरी बात यह है कि यह हालत आपकी कोशिशों का नतीजा नहीं है, अतः अहंकार करने का आपको अधिकार भी नहीं है । हां, यदि अभ्यासी गुरु के चरण पकड़े रहे और उनसे सच्चा प्रेम अदा करता चले तो वह दिन दूर नहीं कि वह स्थित प्रज्ञ ही क्या मालिक बन जावेगा कि उसके असर से दूसरे लोग भी स्थित प्रज्ञ बन सकेंगे । ···सद्गुरु में सामर्थ्य है कि वह एक नजर में अपना-सा बना लें लेकिन पात्र बनने में देर लगती है ··· ···

—नित्य प्रति नियमानुसार श्री भगवान की उपासना करने से मनुष्य के अनेक जन्मों के पापों का नाश हो जाता है और उसे श्री भगवान के दर्शन अवश्य होते हैं । [श्री बच्चाजी सा०]

३.७ साधन मार्ग की कठिनाई एवं बाधायें

३.७.१ साधन मार्ग की कठिनता

सत्संग आश्रम घोसीपुरा उरई

प्रिय ··· ··· ईश्वर कृपा करें। पत्र मिला। ६-२-५३

मैं श्री ··· ··· के लिए प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर कृपा से उनका मानसिक भ्रम नष्ट हो। **आध्यात्मिक मार्ग बहुत ही कठिन मार्ग है।** ईश्वर रक्षा करें। ··· ···

शु० चि० : भवानीशंकर

—०—

सत्संग आश्रम घोसीपुरा उरई

प्रिय··· ··· ईश्वर कृपा करें।··· ··· १५-१०-५३

आपके मन में बड़ी उलझन है। पर घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं। आपको **जो तरकीब अभ्यास की बताई गई है, उसे निश्चित समय पर दृढ़तापूर्वक करते रहिये।** सारी परेशानियाँ अपने आप ठीक हो जायेंगी।

राम और कृष्ण में कोई अन्तर नहीं है। नाम भेद ही तो है। **निरन्तर नियमित अभ्यास से आप अपने सही रास्ते पर आ जायेंगे।**

अपनी हालत से महीने में कम से कम दो बार सूचित अवश्य करें।

शु० चि० : भवानीशंकर

टीप : आध्यात्म साधन आंतरिक एवं मानसिक प्रक्रिया है। मन अपने संस्कारों तथा अहंकार में श्री श्री गुरुदेव के प्रति समर्पण में विरोध करता है और अनेक उलझने उत्पन्न होती हैं। यही साधन मार्ग की कठिनाई है।

"सत्संग की प्राप्ति तथा महात्माओं और संतों की कृपा कोई खिलौना या अल्प पुण्य का फल नहीं है जो प्रत्येक मनुष्य को आसानी से मिल सकें।"

श्री श्री चक्रपाणी साखी

कर्त्तव्यपालन और सदाचार : १२वां पाठ

३.७.२ साधनागत मन की बाधाओं का निराकरण

३.७.२.१ मन की बाधाओं से बचने का उपाय गुरुवचन पालन

भवानीशंकर

सत्संग आश्रम घोसीपुरा उरई

२-८-५१

प्रिय ······ ईश्वर कृपा करें। प्रेम पत्र मिला।

मन प्रायः सत्य का धोखा देकर तम के रूप में डाला करता है। अतः **सबसे सरल व सुगम उपाय इस चक्कर से बचने का यह है कि जो शब्द कहे जायें, बिना किसी विचार और मतलब के पालन किये जायें।**

शु० चि० : भवानीशंकर

३.७.२.२ दृढ़ता के साथ अभ्यास साधन से मनोविकारों से मुक्ति—

भवानीशंकर

सत्संग आश्रम घोसीपुरा उरई

प्रिय ··· ···

ॐ

ईश्वर कृपा करें। प्रेम पत्र मिला। मनोविकार * समयानुसार आक्रमण कर रहे हैं। ईश्वर कृपा से यह दशा भी निकल जावेगी। **दृढ़ता के साथ अभ्यास का साधन नियमानुसार करते रहिये ···**

शु० चि० : भवानीशंकर

---

* अहंकार एक प्रमुख मनोविकार है।

—जीव का अहंकार ही माया है। यही अहंकार कुल आवरणों का कारण है। यदि ईश्वर की कृपा से "मैं अकर्त्ता हूं" यह ज्ञान हो गया तो वह मनुष्य जीवन्मुक्त हो गया। फिर उसे कोई भय नहीं।

—स्वामी रामकृष्ण परमहंस

—२.५.१ में दिया गया सन्दर्भ भी देखें।

३.७.२.३ पूजा में मन न लगना

झांसी सत्संग : ३०-८-४६

"अगर हमारा मन पूजा में न लगे तो नियत समय से पहले नहीं उठ बैठना, बल्कि **नियत समय तक बराबर पूजा के वास्ते बैठे रहना चाहिए, चाहे हमारी तबियत लगे या न लगे।** इस वक्त जिस ख्याल में या जिस काम में हमारा मन लगे, लगा देना चाहिए और बैठे रहना चाहिए।"

—पूजा से मन उचटने लगे तो **अपने श्री गुरुदेव के श्री चरणों में सिर रख कर प्रार्थना करना चाहिए कि प्रभो! कृपा कीजिए, आप ही की शरण में हूं, रक्षा कीजिए।**

३.७.२.४ विचारों के आवेग में प्रार्थना

प्रिय बाबू ··· ···

झांसी : ७-७-४२

परमात्मा गुरुदेव सदैव आपकी रक्षा करें,······घबड़ाया न कीजिए। **जब कभी मानसिक विचारों का ज्यादा आक्रमण हो, फौरन प्रार्थना शुरू कर देना चाहिए।** अगर कोई भजन या चौपाई याद हो तो उसको जोर से पढ़कर उसका मतलब विचारना चाहिए।

३.७.२.५ साधन करते नींद आ जाना

एक प्रेमी की जुलाई ४८ की मासिक डायरी रिपोर्ट "पूजा में तबियत मेरी समझ में ठीक-ठीक नहीं लगती। नींद तो प्रायः आ ही जाती है।" के लिए श्री श्री चच्चाजी सा० ने निम्नलिखित समाधान बताया—

"**अगर ठीक आसन पर, शुद्ध होकर, ठीक-ठीक तरीके पर चैतन्य होकर अभ्यास किया जाता है** तो जिस अवस्था को नींद कहा जाता है, वह अवस्था यथार्थ में मन के लय होने की है जिसको दूसरे शब्दों में समाधि की अवस्था कहते हैं।"

'**पूजा, जाप से प्रारंभ करें तथा जाप के पश्चात ध्यान किया जाए,** ऐसी स्थिति में नींद आती है भी, तो अभ्यास होगा। ध्यान से पूजा प्रारंभ करने पर प्रायः नींद आ जाती है।"

(श्री श्री महात्मा दिनेश कुमार जी)

३.८ साधन : भूतकाल के बाधक विचारों का निराकरण

ॐ

भवानीशंकर

सत्संग आश्रम घोसीपुरा उरई

प्रिय ··· ···

२९-९-५१

ईश्वर कृपा करें। डायरी २२ से २३ सितम्बर तक की मिली। **भूतकाल के विचार जो सामने आते हैं, वह निपटारा कराकर अपने उद्धार के लिए आते हैं।** अतः उनके आने पर उनका स्वाद न लेते हुए बहुत सावधानी के साथ **उनका प्रायश्चित करके श्रीभगवान के सामने रख देना चाहिए।** आवश्यकता अनुसार कई बार तथा कई दिन तक यह विधान जारी रखा जा सकता है।

शु० चि० : भवानीशंकर

टीप : विचार अपने आप में एक व्यक्तित्व होता है। जैसे बाहरी दुनियां में हम व्यक्तियों से बातचीत करते हैं, समझते-बूझते हैं और अपना आपसी फैसला करते हैं, उसी प्रकार विचारों के साथ व्यवहार करना होता है। झांसी सत्संग में १८-८-४६ को इस विषय पर श्री श्री चच्चाजी सा० ने प्रकाश डाला था।

ख्यालात ज्यादातर दो तरह के होते हैं—एक जानदार व दूसरे बेजान। बेजान ख्यालात वह हैं जो घूमते हुए निकल जाते हैं। इनकी याददाश्त भी आपको नहीं रहती और न इन ख्यालात की वजह से आपको कोई खास परेशानी ही होती है; दूसरे किस्म के ख्यालात जानदार होते हैं। ये ऐसे होते हैं कि इनको "डिसपोज आफ" करना बहुत लाजमी है और अगर इनका निपटारा ठीक-ठीक तरह से नहीं किया जाता है तो वे बराबर आपको परेशान करते रहेंगे। इनका निपटारा [डिसपोज आफ] करने का यह तरीका है। मान लीजिए आप पूजा में बैठे हैं और

कोई ख्याल आपको आता है, तो आपका पहला काम यह है कि यह देखना चाहिए कि यह ख्याल कहां से आया है और इस ख्याल के भोगने में या पूरा करने में फायदा है या नुकसान है। इस ख्याल के पूरा करने में किसी को दुःख वगैरा तो नहीं होगा। इन सब बातों को सोच करके अगर पूरा करने में फायदा है. तो उससे कहदीजिये कि हम ऐसा जरूर करेंगे और अगर उसके भोगने में नुकसान है तो उस ख्याल को ज्ञान या वैराग्य से ऐसा काट दीजिये कि फिर उसमें कोई ताकत बाकी न रहे। अगर दौरान पूजा यह सब बातें नहीं हो सकती हैं तो उस ख्याल से कह देना चाहिए कि महाराज इस वक्त तो हम ईश्वर की याद में बैठे हैं, और बाद पूजा के फलां वक्त पर हम आपके वास्ते सोचेंगे कि हमको क्या करना उचित है लिहाजा आप फलां वक्त पर तशरीफ लावें। ऐसा कहने से वह ख्याल उस वक्त फौरन गायब हो जावेगा और जो समय आपने बताया है वह उस वक्त फिर आपके सामने मौजूद होगा। अब आपका यह काम होना चाहिए कि जो समय आपने उसके सोचने के लिए मुकर्रर किया है, फिर चाहे कुछ भी हो उस ख्याल का आप उस वक्त निपटारा कर ही दीजिए, अगर आप इस नियत समय में इस ख्याल का निपटारा नहीं करते हैं या और काम में वह समय बिता देते हैं तो फिर जो ख्यालात आपके सामने आवेंगे और आप अपने कहे मुताबिक उस वक्त उनको टालना चाहेंगे तो फिर वह नहीं हटेंगे। काहे से, वह यह जान जावेंगे कि यह ऐसे ही वक्त नियत कर देते हैं मगर उसकी पाबन्दी नहीं करते हैं। आपकी फिर यह एक ड्यूटी हो जाती है कि जिस ख्याल को आपने जो समय दिया है, उस वक्त उस ख्याल का निपटारा कर ही देवें। अब इसमें यह भी हो सकता है कि कुछ ख्यालात के निपटारा के वास्ते आप बैठें और उनके निपटारे पर विचार करें, मगर कई दिन लग जाय और उस ख्याल का निपटारा आप न कर सकें और वह आपकी बुद्धि से बाहर हो; वहां पर बुद्धि भी काम नहीं करती हो, तो उस वक्त आप इस ख्याल को ईश्वर के

सामने बड़े दीन होकर रख दीजिए कि महाराज यह ख्याल है और मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है कि मुझे क्या करना चाहिए, मेरी बुद्धि भी कुछ काम नहीं कर रही है, इस वास्ते आपसे प्रार्थना है कि इसका सही-सही 'डिस्पोजल' आप करदें और मेरे करने की जो बात हो वह मुझको कृपा कर बता देवें ताकि मैं फिर वैसा ही करूँ। यहां ईश्वर से प्रार्थना जिस कदर गहरी होगी, वैसा ही इसका फल होगा और वैसा ही इस ख्याल के 'डिसपोजल' में समय लगेगा। यह सब सत्संग में आने से आप ही आप हो सकता है, लेकिन सत्संग में आने की क्वालिटी लेकर के आना होगा; वह है—भाव व तामील हुक्म। बस, अगर यह दो बातें पूरे तौर से साधक में है और वह बिला नागा सत्संग में आता है, तो फिर उसको कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है।

२—भूतकाल के बाधक विचार : **विचार घाट**

कुसंग एवं अविवेक के फलस्वरूप कोई विचार लगातार वर्षों चिन्तन का विषय बना रहता है तथा विचार-घाट बना लेता है। विचार-घाट बना लेना, यह होता है कि वह विचार जब मन को थोड़ी-सी भी फुरसत हुई बिना किसी प्रयत्न के अपने आप आजाता है तथा साधक के चिन्तन को अशान्त कर देता है। घाट का टूटना बड़ा कठिन होता है। इसके लिए कोई प्रतिकूल सद्विचार बरबस लाना चाहिये और उससे इसका काट करना चाहिये। जब यह विचार आवे तो तुरन्त इसके प्रतिकूल सद्विचार कोलावे और उस पर चिन्तन करने लगे। यह सतत अभ्यास से दूर होता है। एक बोधकथा इसप्रकार पढ़ी थी।

—एक व्यक्ति एक पिंजड़ा लेकर चल रहा था और ऐसा लग रहा था कि उस पिंजड़े में कोई जानवर है। जब उससे किसी ने पूछा कि इस पिंजड़े में क्या लिये जा रहे हो तो उसने बताया कि मुझे अभी थोड़ा नशा है जब नशा तेज हो जाता है तो मुझे ऐसा लगता है कि बहुत से सांप मेरे चारों तरफ हैं और मुझे काटे खाते हैं। इसलिए मैं

इस पिंजड़े में नेवला लिये रहता हूं जिससे साँप मुझको नुकसान न पहुंचा सके। इस उत्तर को सुनकर दूसरे व्यक्ति ने कहा "किन्तु ये साँप तो आपके ख्याल के हैं।" इस पर उस व्यक्ति ने उत्तर दिया और पिंजड़ा खोल कर दिखा दिया कि नेवला भी तो मेरे ख्याल का ही है।" उस पिंजड़े में वास्तव में नेवला था ही नहीं।

—बस, इसप्रकार कुत्सित विचार-घाट रूपी साँप के लिये सद्-विचार रूपी नेवला साथ रखना चाहिये। धीरे-धीरे घाट टूट जायेगा क्योंकि यह भी ख्याल के कारण ही बना है। ऐसे विचार के लिये प्रतिकूल सद्विचार का साधन करते हुये साथ में नाम जाप करना और भी लाभ-प्रद होता है। जाप करते समय जाप के मन्त्र के अक्षर विशेष की चोट किसी न किसी चक्र पर देते रहना चाहिये। तदनुकूल जाप करने से विचार-घाट टूटने में बड़ी सहायता मिलती है। जाप के गंगाजल में विचार-घाट का दूषण अपने आप धुल जाता है। ईश्वर कृपा करें।

३—हृदय चक्र पर हर समय ख्याली नजर बनाये रखने से भी बड़ा लाभ मिलता है।

४—विनयपत्रिका या गीता के एक-एक पद या श्लोक को प्रतिदिन याद करने और दिन भर उसको गुनगुनाते और विचार करते रहने से भी विशेष लाभ मिलता है। अपने गुरुदेव को पद या श्लोक को सुनाने के भाव को लेकर यह साधन करने से, इसमें विशेष रुचि आ जाती है।

५—भक्त चरित कथाओं के पाठ से हृदय द्रवित होता है, नेत्र गीले होते हैं और इसप्रकार मन का कलुष धुल जाता है।

६—सजग संकल्प और दृढ़ प्रण तो इस संदर्भ में प्रमुख अपेक्षा है ही।

अब लौं नसानी, अब न नसैहौं।
मन मधुकर पनकै तुलसी, रघुपति-पद-कमल बसैहौं॥

[वि॰ प॰ १०५]

३.९ साधन : जिज्ञासा समाधान

तब संकर प्रभु पद सिरु नावा।
सुमिरत रामु हृदय अस आवा॥

अनुभव करने का तरीका बयान किया कि अगर किसी ने कोई बात पूछी तो फौरन मन से सवाल किया और **आप बिल्कुल खामोश होकर बैठ गये। दो-चार मिनट के बाद वहाँ से जो कुछ आवेगा वह ठीक होगा** क्योंकि जब आपने मन में यह सवाल किया तो मन उसका सही जवाब उस आदमी के पास से लाकर आपको देगा कि जिसको उसका अनुभव है, मगर ऐसा करने में इस बात का ख्याल रहे कि **खामोशी की हालत में हम अपने को बिल्कुल भुला दें** तब तो जो बात आवेगी वह ठीक अनुभव की होगी और अगर हमने अपने को नहीं भुलाया तो वह अनुभव नहीं हो सकता है और इस सवाल का जवाब जो हम दे रहे हैं; वह गलत भी हो सकता है।

[झाँसी सत्संग : २२-६-४०]

टीप : १—इस सम्बन्ध में श्री माँ से किये गये प्रश्नोत्तर, इसप्रकार हैं—

प्रश्न—काम शुरु करने से पहले यह कैसे जाने कि यह तरंग भगवान से ही आयी है।

—सबसे पहले समस्या को इसप्रकार सामने रखो मानो तुम उसे किसी और के सामने रख रहे हो।

—फिर शांत हो जाओ, बिना कोई चेष्टा किये वैसे ही शांत बने रहो। तब कुछ समय बाद तुम देखोगे कि कम से कम तीन विभिन्न बातें तुम्हारे सामने घट सकती हैं, कभी-कभी अधिक भी।

पहले एक विचार आता है—"यदि मैं इसे इस ढंग से करूं तो ठीक रहेगा, इसे इसी ढंग से होना चाहिये।" यह हुई एक मानसिक रचना

दूसरी बात है—एक प्रकार का आवेग; मुझे यह करना चाहिए, वह ठीक है, मुझे वैसा ही करना चाहिए ।"

तब तीसरी चीज आती है जो जरा भी शोरगुल नहीं करती; और न ही अपने आपको दूसरों पर लादने का प्रयत्न करती है, पर उसमें एक निश्चयता की शान्ति होती है । न ही कोई आघात पहुंचाती है, न ही कार्य की ओर धकेलती है किन्तु यह एक ऐसी वस्तु होती है जो जानती है और शांत, बहुत शांत रहती है, यह केवल कहती है, "यह इस तरह है" बस, इतना ही और फिर यह आग्रह नहीं करती । **अधिकतर व्यक्ति पर्याप्त रूप से नीरव या सतर्क नहीं होते कि वे इसे समझ सकें,** क्योंकि यह शोर नहीं करती । ··· ··· यह भागवत कृपा का छोटा-सा संकेत होता है और कभी-कभी इसकी बात मानने में बहुत अधिक प्रयत्न करना पड़ता है, क्योंकि शेष सारी सत्ता इसका उग्रतापूर्वक विरोध करती है । यदि तुम पूरी तरह तटस्थ हो ··· तुममें कोई इच्छा न हो न मानसिक, न प्राणिक न शारीरिक, तो तुम निश्चयपूर्वक जान लोगे ।

[अग्निशिखा सित० १९८६ : पृ० १४ से साभार]

२—अन्तरात्मा की आवाज ईश्वर की आवाज है । वही प्रत्येक कार्य तथा विचार का और औचित्य का अन्तिम निर्णायक है ।

—महात्मा गांधी

३-(a) दूरानुभूति चिकित्सा का आधार—

—डा० माकटिंग सुम कु० आलालमपुर [मलेशिया]

"मेरा मन पूरी तरह शान्त रहता है । मैं १५ मिनट तक अपने एक रोगी का नाम मन में बार-बार दुहरा कर उसके स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूं । इन पन्द्रह मिनटों में **इस प्रार्थना के अलावा कोई और विचार मेरे मन में** नहीं होता । यही इलाज का तरीका है । **मेरी मस्तिष्कीय विचार ऊर्जा मीलों दूर के रोगियों की काया के तंतुओं को स्पंदित करके उन्हें नयी ऊर्जा से भर देती है ।** फलस्वरूप 'रोगी ऊतक" पुनर्जीवन प्राप्त कर लेते हैं ।

३-(b) डा० रमाकान्त केनी (१४२, पुरणानंद बाणगंगा, बम्बई) बम्बई अस्पताल बम्बई के आध्यात्मिक चिकित्सक हैं । वह रोगी को छूते हैं और रोग दूर हो जाता है । दूरस्थ रोगियों के लिये प्रार्थना करते हैं । उससे लाभ मिलता है । वह बताते हैं—

ईश्वर रोग मेरे ध्यान में प्रकट होता है आकृतिविहीन दिव्य ज्योति रंग बदलती नित नूतन ज्योति' के रूप में ।

ईश्वर की भाषा शब्दों की नहीं होती । ईश्वर की भाषा तो अहसास की भाषा है । मैं ईश्वर को अपने गहनतम, किन्तु क्षुद्र विनय का अहसास देता हूं । ईश्वर भी मुझे अपने गहनतम आशीर्वाद का अहसास देता है । [साप्ता० हिन्दुस्तान : ४-१० दिसम्बर ८३]

४—श्री श्री महात्मा श्री दिनेशकुमार जी [फतेहगढ़] ने किसी प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसीप्रकार का निम्नलिखित अभ्यास बताया है—

"हृदय में शब्द का अभ्यास करते हुए उस प्रश्न को डाल देवें, जैसे—हारमोनियम की लय में किसी भजन की पंक्ति को डाल देते हैं । फिर छोड़ें नहीं, अपना अभ्यास करते रहें और तब तक करते रहें, जब तक उत्तर उतरा कर ऊपर न आ जावे ।

अपने गुरु महाराज की विशेष छवि (पोज) में अपने को डालने से इसप्रकार के अभ्यास में जल्दी पहुंच जाते हैं ।"

५—आध्यात्मिक मण्डल, कल्पवृक्ष कार्यालय उज्जैन (म०प्र०) भी आध्यात्मिक चिकित्सा तथा आध्यात्म शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र है ।

—यथार्थ में जो हमारा शुभचिन्तक है; भूत, भविष्य और वर्तमान में जो हमारी उन्नति चाहता है, वही हमारे लिये भगवान है । (श्री श्री बच्चाजी सा०)

३.१० साधन : प्रभाव

३.१०.१ सदाचार की प्राप्ति

> तुम अपनायो तब जानिहौं,
> जब मन फिरि परि है ।
>
> वि० प० २६८

ॐ

भवानीशंकर सत्संग आश्रम
घोसीपुरा उरई : ८-९-५१

प्रिय… … ईश्वर आपकी रक्षा करें।

प्रेम पत्र २७-८-५१ से २-९-५१ तक की डायरी का मिला। समयानुसार हालत ठीक है। आध्यात्मिक अभ्यास समय-समय पर जितना किया जाये वह, **गृहचर्या में देखने का साधन करने से और भी उन्नति करता जाता है। तात्पर्य यह कि अभ्यास की शक्ति का परिणाम सदाचार में बाह्य तथा आंतरिक रूप से प्रकट होता रहे।**

शु० चि० : भवानीशंकर

अभ्यास साधन का सार ईश्वर दर्शन नहीं, सदाचार है अगर मनुष्य का सदाचार ठीक नहीं हुआ तो उसके समस्त अभ्यास साधन बेकार हो जायेंगे।

[नरहरि उपदेश से]

३.१०.२ पाप से सुरक्षा

… … … पूजा चाहे दस या पन्द्रह मिनट ही की जावे, वह ही बहुत है, मगर उसके साथ-साथ हमको यह देखना बहुत जरूरी है कि **दिन भर उस पूजा का असर हमारे ऊपर क्या रहा,** यह बात हर कार्य [एक्शन] पर नोट करना चाहिए कि क्या यह पूजा का ही असर है। इस तरह से बराबर अभ्यास करने में इसका फायदा होगा कि हम लोगों से, बुरे काम या पाप बहुत कम हुआ करेंगे क्योंकि जिस वक्त हमसे कोई पाप या गल्ती होने वाली होगी तो उस वक्त फौरन यही ख्याल आवेगा कि क्या यह पूजा का असर है और ऐसा ख्याल आते ही फिर वह काम न हो सकेगा।

[झांसी सत्संग : ११-१२-३९ सायं]

३.१०.३ शरीर की सफाई

… … … यह जो अभ्यास किया जाता है वह इसी वास्ते किया जाता है कि शरीर की सफाई हो क्योंकि बगैर शरीर के सफाई के ईश्वर कभी भी नहीं मिलता है।

(झांसी सत्संग : ११-१२-३९ सायं)

३.१०.४ बुरी आदतों का छूटना

हमारे गुरु महाराज (श्री लालाजी महाराज) कहते थे कि जो जिसमें आदत है, वह बनी रहने दो, इसमें क्या हर्ज है। उन्होंने कभी किसी से भी यह नहीं कहा कि तुम ऐसा काम न करो या ऐसा करो … … पाबन्दी इस बात की जरूर है कि पूजा वक्त से बिला नागा जितनी देर के वास्ते बताई गई हो, कर लिया करें। **इस पूजा का यह असर होगा कि बुरी आदतें आपसे आप छूट जावेंगी और त्याग व वैराग्य, जिसकी जैसी पूजा होगी उसी हिसाब से उसमें खुद-ब-खुद आते जावेंगे।** हमको इन बातों के वास्ते कोई खास मेहनत करने की जरूरत नहीं है बल्कि यह तो इस अभ्यास का असर ही है कि अपने आप यह बातें पैदा हो जावेंगी।

(झांसी सत्संग : १२-८-४६)

३.१०.५ यथोचित व्यवहार

… … … पूजा का असर यह होना चाहिए कि **जिसके साथ जैसा व्यवहार करने की जरूरत है, वैसा आपसे आप अदा होता जावे।** इसमें हमारी मेहनत व चतुराई वगैरह कुछ भी काम नहीं कर सकती सिर्फ गुरु महाराज की कृपा ही है कि अगर वह चाहेंगे या जब उनकी मौज होगी वह वैसा हमसे करा सकते हैं। उनमें इतनी ताकत है, और किसी में भी नहीं है।

(झांसी सत्संग : २-७-४०)

टीप . इस पूजा का अपने आचार-विचार पर प्रभाव पड़ता है । इस प्रभाव को देखना चाहिये तथा इसी संदर्भ में अपनी पूजा कैसी हो रही है, इसकी जांच करनी चाहिये । कतिपय प्रभाव-संदर्भ अंकित किये जा रहे हैं—

—प्रेम जाग्रत होता है, अपने परिवार के सदस्यों, अपने मिलने जुलने वालों से ही नहीं, सबसे प्रेम होने लगता है । पहले औपचारिकता के रूप में उनसे राम राम होती थी, अब जब उनके दर्शन होते हैं तो बड़ा अच्छा लगता है, हृदय गद्गद् होता है, प्यार उमड़ता है ।

—अन्तरात्मा की आवाज जाग्रत हो जाती है जो हर एक विचार के लिये उचित उत्तर देती है, आदेश जैसे मिलने लगते हैं । यथोचित व्यवहार होने लगता है ।

—साधन संबंधी निर्देश मिलते रहते हैं ।

—अपने श्री गुरुदेव का पक्का भरोसा होने लगने से बड़ी परेशानियां भी आसानी से कट जाती हैं । घबराहट और व्याकुलता नहीं होती है । चित्त शान्त बना रहता है या शीघ्र शान्त हो जाता है ।

—अन्तर में आनन्द और प्रसन्नता रहने लगती है ।

—मन के विकार पहले उभरते हैं और बड़ी परेशानी मालूम पड़ती है, फिर अपने आप सफाई होने लगती है ।

—रुपया पैसा सच्चा धन नहीं है और न उससे कल्याण होता है । केवल धन पर भरोसा करना चिकनी भूमि पर खड़ा होना है ।

(श्री श्री चच्चाजी सा०)

४. पूजा विधि

४.१ त्रिकाल संध्या

४.२ पूजा पूर्व-संकल्प, पर-धन्यवाद

४.३ डायरी रखना

४.४ प्रायश्चित

४.५ रोना

जो कुछ लिखा जाता है, वह बहुत सोच विचार कर लिखा जाता है, उसके पीछे अनुभव होता है। जो कुछ कहा जाता है, वह बहुत सोच विचार कर कहा जाता है, उसके पीछे शुभ चिन्तन होता है। जो शब्द पर ध्यान नहीं देता, वह कुछ नहीं कर सकता, शब्द का पालन करने वाला विरला ही होता है।

—श्री श्री बच्चाजी सा०

४.१ त्रिकला संध्या—अनिवार्य

१. प्रातः काल—प्रत्येक साधक को प्रातः काल शीघ्र बिस्तर छोड़ने के पहले ५ मिनट तक अपने इष्टदेव श्री भगवान का स्मरण एवं ध्यान करने के बाद शौचादि से निपटकर श्री भगवान की उपासना अपने निश्चित किये हुए समय तक अवश्य करना चाहिए। उसके पश्चात् सांसारिक कार्य ईश्वर के स्मरण में करते रहना चाहिए।

२. दोपहर की संध्या—अवश्य करना चाहिए। यदि सांसारिक कार्यों के कारण अधिक समय मिलने की संभावना न हो, तो एक ही मिनट की सध्या निश्चित किये हुए समय पर कर ही लेना चाहिए। *

३. सायंकाल की संध्या—अनिवार्य समझकर निश्चित किये हुए समय तक नियमानुसार करना चाहिए।

---

* परमपिता परमात्मा श्री श्री बच्चा जी महाराज ने दोपहर १.१५ बजे शरीर त्याग किया था। इसलिए इस समय २ माला "ॐ शान्ति" जाप कर लेना अनिवार्य बना लेना चाहिए।

सत्संग के अन्य प्रमुख निर्धारित नियम—जो छपे हुए प्रपत्र "सतमार्ग पर चलने के लिए त्रिकाल संध्या अनिवार्य' के द्वारा प्रसारित किये गये थे।

४. समय-समय पर जब भोजन किया जाय तो भोजन अपने इष्टदेव श्री भगवान के स्मरण में करना चाहिए।

५. रात्रि को सोने से पूर्व बिस्तर पर अपने इष्टदेव श्री भगवान का स्मरण व ध्यान करते हुए सो जाना चाहिए।

६. प्रातः काल व सायंकाल सत्संग आश्रम में सत्संग के प्रवेश के लिये अपने मकान से जब चलें, अपने इष्टदेव श्री भगवान के स्मरण में चलें तथा सत्संग के पश्चात् अपने इष्टदेव श्री भगवान का ध्यान करते

हुए घर वापिस जावें।

७. सत्संग से सम्बन्धित अभ्यासियों तथा जिज्ञासुओं का कर्त्तव्य है कि वह साफ स्वच्छ कपड़े पहनकर सत्संग में आवें और अपने साथ में एक आसन लावें। आसन साधारण होना चाहिए, कीमती होने की आवश्यकता नहीं है। आसन न छोटी हो न बड़ी हो, सिर्फ इतनी हो कि जिससे आसानी से बैठा जा सके व दूसरों को बैठने के लिए अधिक जगह न ले। यह आसन कीलक मंत्र के रूप में सहायक होगा।

८. सत्संग में बैठते समय एक हल्के पीले रंग की चादर रखना चाहिए जो अपने कपड़ों पर ओढ़कर बैठना चाहिये। यह चादर प्रातःकाल सायंकाल सत्सग के अलावा और कभी प्रयोग न करना चाहिये। इस चादर का महत्व बहुत होगा।

९. श्री भगवान् की प्राप्ति हेतु सत्संग मुख्य आधार है और यह लाभ उठाने के लिए जिज्ञासुओं तथा अभ्यासियों का मुख्य कर्त्तव्य है कि वह ब्रह्मचर्य का आठों अङ्गों से साधन करते रहें। यदि इसका साधन न करते हुए सिनेमा आदि की तरह सत्संग को मनोरंजन समझेंगे तो बजाय लाभ के भयंकर हानि होगी जिसका परिणाम केवल उन्हीं को नहीं किन्तु बहुतों को भोगना पड़ेगा।

टीप : पूजा विधि विस्तारपूर्वक 'सदाचार' में क्रमशः प्रकाशित हुई है। यहां पत्रों में संकेतित संदर्भों को ही लिया गया है।

—जो लोग दूसरों की सेवा करेंगे और उनसे कोई आशा नहीं करेंगे, उनको संसार में दुःख-क्लेश रंच मात्र भी नहीं हो सकते।

(श्री श्री चच्चाजी सा०)

४.२ पूजा करने से पूर्व संकल्प तथा समाप्ति पर धन्यवाद

झांसी सत्संग : १-९-४०

पूजा करने से पूर्व संकल्प—हर काम के शुरू करने में हम कोई संकल्प या नियत कायम कर लेते है। बगैर उसके काम नहीं चलता है और ऐसी नियत कायम करने से उस काम में खूबसूरती आ जाती है। इसी प्रकार पूजा में बैठने के साथ ही हम लोगों को चाहिये कि ईश्वर से प्रार्थना करें कि "हे ईश्वर ! हम तेरी याद के वास्ते बैठे हैं। इस वास्ते तुझसे प्रार्थना करते हैं कि इस दरम्यान में तू मेरी रक्षा करना।" ऐसा संकल्प या नियत पूजा के पहले कायम करने से यह फायदा होगा कि ईश्वर जिसकी याद के वास्ते हम बैठे हैं, वह हमारी रक्षा भी करेगा और दौरान पूजा, जो हम लोगों को ख्याल वगैरह आते हैं, उनसे भी वह हम लोगों को बचावेगा।

पूजा समाप्ति पर धन्यवाद—बाद पूजा के उसे धन्यवाद देना चाहिए कि आज जो आपने मेरी रक्षा की है, उसके वास्ते मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

झांसी सत्संग : १०-८-४६

पूजा के बाद पाठ—अभ्यास करने के बाद कुछ थोड़ा-सा पढ़ या गा लेना चाहिये। ऐसा करने से अभ्यास के समय जो कोई चीज जमा हो गई है, वह कुल शरीर में फैल जायेगी। पाठ ऐसा होना चाहिए कि हम अगर एक दोहा [रामायण] रोज पढ़ें तो उस एक दोहे के अन्दर से एक या आधी चौपाई ऐसी पकड़ना चाहिए कि फिर जब दूसरे दिन हम पाठ करें उस वक्त तक वह बराबर हमारी तबियत में घूमती रहे।

झांसी सत्संग : १०-८-४६

टीप : १—अगर हमारी तबियत पूजा के वक्त पूजा में नहीं लगती तो हम ईश्वर से प्रार्थना करें, अगर उसमें भी नहीं लगती तो जिसमें लगती हो चाहे अच्छा हो या बुरा हो, उसी में लगायें और बैठे रहें। ऐसा अभ्यास करने से फिर मन खुद-ब-खुद पूजा में लगने लगेगा।

—श्री श्री चच्चाजी सा०

२—"पूजा में तो मूसलाधार वर्षा के समान आत्मधार उतरती है, आई और गई, विरले ठौर ठहरती है। जब पूजा समाप्त हो चुकती है तो जो मंद-मद धार उठती है, उससे सच्ची आत्मिक उन्नति होती है, वह थम जाती है और स्थिर रहती है, इससे आत्मिक पोषण होता है।

श्रीमान् बच्चाजी सा० (कानपुर)
[पीयूष वाणी : पृष्ठ ७५]

३–स्तुति करने का तरीका–

—प्रातः उठते ही आंख बन्द रखे हुए ही ख्याली तौर पर अपने गुरु के चरणों में सिर रख दो और ख्याल करो कि वह तुम्हारे सिर पर हाथ रखकर तुमको दुआ दे रहे हैं।

—जब पूजा के लिए जाओ तो ख्याल करो कि किसी महापुरुष के सामने जा रहे हो। आदर से सिर झुकाकर पग रखो। आह्वान करो और ख्याल करो कि वह तुमको देख रहे हैं और तुम उनको देख रहे हो। अदब का ख्याल ऐसा हो जैसे किसी अफसर के सामने जा रहे हो और बेअदबी से सावधान रहो।

—खाना खाते समय ख्याल करो कि गुरु महाराज भोजन कर रहे हैं। तुम इसरार कर रहे हो और बाद में उनका प्रसाद प्राप्त कर रहे हो।

—काम करते हुए ख्याल करो कि वह तुम्हारे हृदय में विराजमान हैं और देख रहे हैं। बीच-बीच में आंख झपककर दर्शन करते चलो।

—सोते वक्त नाम लो, उनके दर्शन अपने घट में करो और उसी ख्याल में सो जाओ।

परमसंत महात्मा श्री कृष्ण लालजी
[सत्उवचन : भाग–२]

४–श्री श्री बच्चाजी सा० ने पूजा अथवा आंतरिक अभ्यास के प्रारम्भ में तथा अन्त में इस प्रकार संकल्प एवं धन्यवाद बताया था—

प्रारम्भ में—

१. हे ईश्वर ! तुझे धन्यवाद है कि तूने अपनी विशेष कृपा व दया से अपनी याद करने के लिए मुझे पूजा में बैठने का अवसर दिया।

२. हे ईश्वर ! माता-पिता को धन्यवाद कि जिन्होंने तेरी कृपा व दया से मुझे केवल तेरी याद करने के लिए जन्म दिया।

३. हे ईश्वर ! गुरुदेव को धन्यवाद है कि उन्होंने अपनी विशेष दया व कृपा से भवसागर से पार होने के लिए मुझे सहज सरल और सीधे मार्ग पर आरूढ़ किया।

अन्त में—

१. हे ईश्वर ! तू मेरे सब पापों को क्षमा कर।

२. हे ईश्वर ! तू मुझे अपनी मर्जी के मुताबिक चलने की शक्ति दे।

'जैसो तुम समझो अतिनीकी तैसोई करो नाथ निज जी की।

चित्त सोई चिन्तन करै, वाक् बकै नित सोइ।
काया कर्म सोई करै जो तुम्हें अति प्रिय होइ।

३. हे ईश्वर ! तू गुरुदेव के श्री चरणों में मुझे सच्चा प्रेम दे।

हे परम पिता परमात्मा, गुरुदेव ! तूने यह शरीर अपनी विशेष कृपा व दया से दिया है। अपनी कृपा व दया से इस शरीर पर ऐसी कृपा कर कि यह शरीर अपना और अपने सम्बन्धियों का निर्वाह करते हुए तेरी

और तेरी सन्तान की सेवा के योग्य बन जावे। मैं स्वार्थवश इस शरीर के लिये कुछ नहीं चाहता हूं बल्कि मैं तो तेरी ही सेवा के लिये प्रार्थी हूं। हे ईश्वर ! अपनी सेवा के हेतु तू मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर, हे ईश्वर ! तू तो बड़ा कृपालु व दयालु है। ऐसा ही हो ।३।

समापन इस कामना के साथ करें–

१. हे ईश्वर ! बड़े से बड़े नेताओं से लेकर छोटे से छोटे सभी नेताओं को सुमति और सद्बुद्धि दे।

२. हे ईश्वर ! बड़े से बड़े कर्मचारी से लेकर छोटे से छोटे सभी कर्मचारियों को सही कर्त्तव्य पालन करने की शक्ति दे तथा घर-घर में सदाचार का वास हो।

३. हे ईश्वर ! सारे संसार का वायुमण्डल शुद्ध, पवित्र, सुख और शान्ति का देने वाला हो।

४. हे ईश्वर ! आप सर्व शक्तिमान हैं, आपकी दया व कृपा से, ऐसा ही हो ! ऐसा ही हो !! ऐसा ही हो !!!

ॐ शान्तिः

ॐ शान्तिः

ॐ शान्तिः

—साधन तथा अभ्यास के साथ हमारा यह भी कर्त्तव्य होना चाहिये कि हम दूसरों की भलाई के लिये मन, वचन और कर्म से हार्दिक प्रार्थना करें।

[श्री श्री चच्चासी सा०]

पूजा विधि

४.३ डायरी रखना—

प्रत्येक साधक को आत्मोन्नति तथा ईश्वर भक्ति के साधन का रोजाना का हिसाब उसी तरह रखना चाहिये जिस तरह नित्यप्रति सरकारी खजाने की आमदनी व खर्च का हिसाब खजांची रखता है।

[कर्त्तव्य पालन और सदाचार : पांचवां पाठ]

ॐ

झांसी सत्संग
७-७-४२

प्रिय बाबू ··· ···

परमात्मा गुरुदेव सदैव आपकी रक्षा करें।

··· निम्नलिखित रूप से डायरी लिखना आवश्यकीय है—

१. पूजा निश्चित समय अथवा किस समय पर की गई ?
२. पूजा में बैठे कितना समय व्यतीत किया गया ?
३. लक्ष्य की ओर चित्त की वृत्ति लगी रही या क्या कैसा होता रहा ?
४. मानसिक विचार अगर आये तो किस किस्म के और मानसिक तथा शारीरिक दशा पर उनका क्या प्रभाव पड़ा ?
५. मानसिक व शारीरिक दोनों की सामान्य दशायें कैसी रहीं ?
६. खाना ईश्वर की याद में खाया गया या नहीं ? खाना खाना भी ईश्वरीय पूजा का विशेष अंग है और उसका प्रभाव गृहचर्या में परखने में आता है तथा विचारों का प्रवाह भी इसी पर अवलम्बित है। अगर शुद्ध भोजन ईश्वरीय याद में खाया जावे तो स्वतः ही ईश्वर की ओर चित्त आकर्षित होने लगता है और लौकिक व पारलौकिक व्यवहार तथा कर्त्तव्य पालन में एक शुद्ध झलक-सी दिखलाई देती है। अतः भोजन भी ईश्वरीय हवन रूप प्रतीति में लाते हुए बहुत सावधानता के साथ अपने अभ्यास की हालत में करना चाहिए।
७. सोने की हालत में मानसिक विचारों के वेग का आक्रमण तथा मन के विरुद्ध प्रतिकूल स्वप्न आदि का देखना, अभ्यास की बहुत कमी जाहिर करता है। अतः लेटते समय बहुत सावधान होकर अभ्यास करते-करते सो जाने का साधन करने से गुरु महाराज की कृपा से इस रोग के दूर हो जाने की सम्भावना है।

या इलाही मैं तो मुजरिम हूं, मगर तू बख्श दे
क्या खता कोई चीज है, तेरी अता के सामने

पूजा विधि

४.४ प्रायश्चित एवं परिताप : [अ] जाप द्वारा

एक साधक की डायरी पर दिये गये निर्देश

डायरी नोट

१०-११-४८

"स्वप्न में सांसारिक स्वप्न रहे,
एक स्त्री को कामातुर दृष्टि से देखा।"

निर्देश—ऐसे स्वप्न आने पर २ माला राम नाम मंत्र द्वारा प्रायश्चित करें और जाग्रत अवस्था में ऐसे ख्यालात या कुदृष्टि पर २ माला राम नाम मंत्र द्वारा (हर दृष्टि के हिसाब से) प्रायश्चित करें।

किसी पाबन्दी के न होने पर राम नाम मन्त्र द्वारा प्रायश्चित होना आवश्यकीय है। अगर उस रोज का उसी रोज प्रायश्चित न हो सके तो दूसरे रोज और दूसरे रोज के अभाव में जिस रोज या जब मौका मिले सबको चुकता कर लेना चाहिए, जैसे कोई ईमानदार कर्जदार अपना कर्ज साहूकार को अदा कर सुख शान्ति व चैन का अनुभव करते हुए प्रसन्न रहता है।

स्वयं भूल-चूक तथा अनुचित व्यवहार होने पर शीघ्र से शीघ्र समय मिलने पर एकान्त में बैठकर गायत्री या राम नाम मन्त्र अथवा जिसका जो अभ्यास हो, उसके द्वारा तुरन्त प्रायश्चित करें और भविष्य में ऐसी भूल-चूक न होने के लिए ईश्वर से हार्दिक प्रार्थना करके, जिसके प्रति भूल-चूक तथा अनुचित व्यवहार हुआ हो, उससे नम्रता पूर्वक करुणामय क्षमा मागें। [कर्तव्य पालन और सदाचार : पहला पाठ]

(आ) अश्रुपात द्वारा

—प्रत्येक मनुष्य से गलतियां होती रहती हैं। कुछ जान-बूझकर और कुछ बिना जाने। परन्तु वह सब अपने-अपने वजन की होती हैं। श्री भगवान का सहज स्वभाव है कि वह किसी की गल्तियों को नहीं देखते परन्तु प्रकृति के नियम अनुसार जो जैसी गल्ती होती है, उसका फल अवश्य भोगना पड़ता है। ऐसी गल्तियों के भोगने से बचने के लिए यदि मनुष्य स्वयं ही अपनी गलती को गलती समझकर उससे ग्लानि करने लगे और ऐसा करते-करते उसे उन गल्तियों से घृणा होने लगे तथा श्री भगवान् से हार्दिक प्रार्थना क्षमा प्रदान करने के लिए करे और प्रार्थना करते-करते उसकी आंखों से आंसू टपकने लगें तो श्री भगवान् उस गलती को क्षमा ही नहीं कर देते किन्तु उस गलती का संस्कार जड़ मूल से नष्ट कर देते हैं।

(कर्तव्य पालन और सदाचार-३२ वां पाठ)

पश्चाताप के मानी है कि गुनाह यानी पापों से घृणा होना और यह ख्याल करके शर्म आना कि इन्हीं वजहों से अपने इष्टदेव से दूर हूं, और सच्चा मिलाप नहीं हो पाता और इस बात का पक्का इरादा करना कि कभी ऐसी गलती नहीं करूंगा।

(श्री श्री पेशकार सा० – आत्म कथा पृष्ठ १३३)

टीप—परिताप और प्रायश्चित द्वारा श्री श्री पेशकार सा० ने साधन में सफलता प्राप्त की। श्री श्री पेशकार सा०, श्री श्री चच्चा जी सा० के साथ फतेहगढ़ गये थे तथा गुरु कृपा के अधिकारी हुये थे। उरई वापिस आकर श्रीश्री चच्चा जी सा० को पूजा में आनन्द आता था तथा हृदय का शब्द सुनाई पड़ता था किन्तु श्रीश्री पेशकार सा० को शब्द सुनाई नहीं पड़ता था। इससे उनको बड़ा परिताप होता था तथा वह बार-बार शब्द प्राप्त करने के लिए प्रायश्चित करते थे उन्होने अपने तीन प्रायश्चितों का वर्णन अपनी कथा में किया है। तीसरे प्रायश्चित का वर्णन आगे ४.५-आ में देखें।

४.५ रोना : 'अँसुवन जल सींच-सींच प्रेम बेलि बोई'

कबिरा हँसना दूर कर रोने सों कर प्रीत ।
बिन रोये नहि पाइये प्रेम पियारा मीत ॥

४.५.१

रोने से हृदय का संताप दूर होता है । संसारी मनुष्यों के सामने रोने से मनुष्य पुरुषार्थहीन, तेजहीन तथा बुद्धिहीन होकर मनुष्यता से गिर जाता है । परन्तु श्री भगवान् के सामने रोने से मनुष्य के जन्म जन्मान्तर के पाप एक ही घड़ी में धुलकर वह ऐश्वर्य तथा श्री भगवान् को प्राप्त होता है । इसलिए संसारी मनुष्यों के सामने झीका-झांकी करना तथा रोना छोड़कर अपने हृदय की सब प्रकट व गुप्त बातें एकान्त में श्री भगवान् को ही सुनानी चाहिए ।

[कर्त्तव्य पालन और सदाचार : २४ वां पाठ]

टीप : "क्षण भर के रोने में जो बात होती है वह बरसों के पूजा भजन में नहीं होती ।"

—श्रीमान् चच्चाजी सा० [कानपुर]

हमारा हृदय ही राजधानी है । यहीं पर सम्राटों का सम्राट आत्मा वास करता है । जीव रूपी राजा का भी यहीं पर दफ्तर है, जहाँ मन, चित्त, बुद्धि व अहंकार रूपी मन्त्रिमंडल है । इसी दरवाजे पर अड़ जाओ, दस्तक दो, भिखारी की तरह डट जाओ, रो-रो कर गिड़-गिड़ा कर भिक्षा मांगो । एक दिन परदा उठेगा और उनके दर्शन होंगे ।

—श्रीमान् चच्चाजी महाराज (कानपुर)
संत मत दर्शन : डा० श्री रामनरायन वर्मा

"दो बूँद आँसू गिरे और पूजा हो गई ।"

—श्री श्री ज़िन्दे महाराज (कालपी)
[श्री श्री चच्चाजी सा० के प्रिय प्रेमीजन]

४.५.२ रोने से बुजुर्गों से सम्पर्क

परदा कर गये बुजुर्गों से सम्पर्क के लिए ॐ शान्ति जाप के साथ रोना भी एक प्रमुख साधन है । रोने से मन निर्मल होता है और निर्मल मनसे सहज ही सम्पर्क बन जाता है ।

४.५.३ रोने से ईश्वर प्राप्ति

(अ) "रोने से ईश्वर प्राप्त होता है" यह उत्तर श्री रामकृष्ण परमहंस ने अपने एक शिष्य के इस प्रश्न के अंतर्गत दिया था कि ईश्वर कैसे मिलता है ।

इस सन्दर्भ को लेकर पूज्य डा० प्रकाशचन्द्र जी वर्मा ने अभ्यास किया ।

... ... यह सोचकर कि स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी के वचन असत्य नहीं हो सकते, हृदय में रोने का निश्चय किया । अतएव एकान्त में बैठकर जहाँ दूसरे के सुनने की शंका न हो, यह कार्य आरम्भ किया । नित्य तीन बजे प्रातः काल उठकर एक घंटे यही पूजा की जाती थी । पहले तो रोना नही आता और बहुत कठिनाई होती थी । रामायण के अयोध्या काण्ड में राम बन गमन का हाल पढ़ने या गीता प्रेस की छपी हुई भक्त चरित्र की छोटी-छोटी पुस्तकें पढ़ने से धीरे-धीरे कुछ रोना आने लगा । आरम्भ में यह रोना केवल बनावटी ही था किन्तु यह दृढ़ विश्वास था कि चाहे वर्षों लग जाँय, इस मार्ग से काम बनेगा अवश्य, क्योंकि स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी का वचन असत्य नहीं हो सकता । अतः जैसा कुछ भी बन सका, रोना जारी रखा । शनैः शनैः काम बनने भी लगा । कभी-कभी बेसुधी भी आने लगी । ...... स्वप्न में सरोवर के निकट मन्दिर में बैठे महात्मा जी के दर्शन किये ... ... स्मरण आया कि जिन महात्माजी को स्वप्न में देखा था, वह यही श्रीमान् पू० चच्चाजी महाराज (कानपुर) है.... ...

—श्री रघुवर चरितामृत : पृ० ८२

(आ) श्री श्री पेशकार सा० की आत्मकथा (पृ० ५१-५२) में प्रायश्चित के अन्तर्गत रोने से प्रभुदर्शन हुआ है।

(देखें ४.४-आ की टीप)

... ... इसप्रकार जोर-जोर से विलाप करने लगा राम, राम, राम, राम आँखें बन्द होगईं। थोड़ी देर के लिए सकते की सी दशा होगई। इस दशा में क्या देखता हूं कि हृदय में एक दम से एक बड़ा भारी प्रकाश पैदा हो गया। गुरुदेव जी सामने खड़े हैं। मैंने दौड़कर चरण पकड़ लिये। भगवान् बचाओ, रक्षा करो और रोना शुरू कर दिया। आपने सिर पर हाथ रखा, एक बिजली-सी दौड़ गई और एक विचित्र आनन्द और शान्ति पैदा होगई। आपने फरमाया ऐसा नहीं घबराते हैं, तुम छुट्टी मंजूर होने के इन्तजार में हो, उसका हुक्म कल मिल जावेगा, फौरन हमारे पास फतेहगढ़ आजाओ, सब ठीक हो जायेगा ... ... ऐसा ख्याल करते-करते समाधि लग गई। आंख खुली तो बदन हल्का था और कोई ख्याल व विचार नहीं थे।

श्री श्री पेशकार सा० की यह पुस्तक "आत्मकथा" मायाग्रस्त साधकों के लिये बड़ी उपयोगी एवं सहायक पुस्तक है। इसका नित्य पाठ निश्चित रूप से साधन में प्रगति प्राप्त कराता है।

—मन ही सच्चा मित्र है, मन ही ब्रह्म है, मन ही गुरु है, उसकी अपार शक्ति है।

—हमारी तीव्र उत्कण्ठा के द्वारा लोगों के अवगुण दूर हों, ऐसा प्रयत्न करना चाहिये।

[श्री श्री चच्चाजी सा०]

५ पूजा–विधान

५.१ पाठ-विधान

५.२ दान-विधान

५.३ शान्ति-विधान

५.४ 'ॐ शान्ति' जाप-विधान

५.५ कल्याण मार्ग में कष्ट-विधान

५.० पूजा–विधान

५.१.१ पाठ का विधान

सत्संग आश्रम
१११, खत्रयाना झाँसी
ॐ
प्रिय ··· ··· ता० २६-४-५१

ईश्वर कृपा करें।

जब कभी भी अखण्ड रामायण पाठ करने की आयोजना की जावे तो पाठ पूरा हो जाने के पश्चात् कुछ हवन अवश्य करा देना चाहिए और हवन के पश्चात कुछ कन्या व कुछ छोटे-छोटे बालकों को भोजन भी करा देना चाहिये जिनकी संख्या १२ से अधिक न हो, ६ से न्यून न हो।

शु०चि० : भवानीशंकर

५.१.२ पाठ सावधानीपूर्वक करें

भवानीशंकर सत्संग आश्रम
घोसीपुरा, उरई
ॐ
प्रिय ··· ··· २०-८-५१

ईश्वर कृपा करें।

··· ··· रामायण का अखण्ड पाठ साधारण प्रयोग की वस्तु नहीं है। अतः जब कभी अखण्ड रामायण पाठ किया जावे तो बहुत भाव व प्रेम के साथ सत्संग रूपी वायु मण्डल में किये जाने के साधन करते हुए किया जाय ··· ···

शु०चि० : भवानीशंकर

५.१.३ पाठ ईश्वर की प्रसन्नता के लिए

भवानीशंकर सत्संग आश्रम
घोसीपुरा उरई : २४-७-५१

प्रिय ··· ··· ईश्वर आप पर दया व कृपा करें।

··· ··· अखण्ड रामायण पाठ ··· ··· यह शुभ कार्य ईश्वर की प्रसन्नता के लिए भाव और प्रेम सहित किया जा सकता है।

शु०चि० : भवानीशंकर

५.१.४ पाठ सुनना

झाँसी सत्संग : १-९-४६

अगर रामायण आदि पढ़ी जा रही है और आप उसको बैठे हुये सुन रहे हैं तो आपका यह फर्ज होगा कि आप अभ्यास की हालत में सुनें और हमेशा आपकी निगाह अभ्यास पर रहे कि दौरान रामायण अभ्यास में कुछ तेजी रही या कमी रही। अगर इस हालत में रामायण सुनी जायेगी तो वाकई में उसके सुनने से फायदा होगा। उस वक्त यह ख्याल नहीं करना चाहिए और न इसकी तरफ ध्यान देना चाहिए कि जो कुछ पढ़ा जा रहा है, वह समझ में आता है या नहीं, न उसके समझने की उस वक्त कोई कोशिश करनी चाहिए। आप अपना ख्याल बराबर अभ्यास पर बनाये रहे, ऐसा न हो कि आपका अभ्यास कहीं छूट जावे। ऐसी हालत में जो कुछ भी सुना जावेगा, वह सब खुद-ब-खुद ही आपमें भर जावेगा और मौके पर उससे आपको मदद मिलेगी, यह हो नहीं सकता कि मौके पर उसकी याद न आ जावे। यह अभ्यास का असर है।

टीप : १—रामायण, गीता * के सम्बन्ध में श्री श्री चच्चाजी सा० के

अपने अनुभूत विचार रहे हैं—

मनुष्य पर कितनी ही विपत्ति आवे तो भी उसे धैर्य नहीं छोड़ना चाहिये । आपत्ति के समय में हार्दिक प्रार्थना, गीता पाठ और तुलसीकृत रामायण से बड़ी सहायता मिलती है । **इससे श्री भगवान् पर विश्वास होकर कठिन समय को सहन करने की शक्ति प्राप्त होती है ।**

[कर्त्तव्य पालन और सदाचार : पाठ १९]

२—रामायण पढ़ते समय श्री श्री चच्चाजी सा० अभ्यास का [सत्संग रूपी वायुमण्डल का] विशेष ध्यान रखते और ऐसा ही करने को कहते हैं । रामायण के दोहे, चौपाई के एक-एक शब्द को वह स्वयं जोर देकर इसप्रकार पढ़ते कि हृदयचक्र पर दोहे, चौपाई के प्रत्येक शब्द की चोट पड़ती और अभ्यास चलता रहता ।

३—**पाठ या जाप करते हुए स्वयं उसको सुनने का प्रयत्न एवं अभ्यास करने से एकाग्रता † एवं ध्यान की साधना भी होने लगती है ।** प्रायः लोग 'राम राम' या किसी अन्य नाम का मुखर जाप करते हैं । यदि ये व्यक्ति उसको स्वयं सुनने का भी अभ्यास करते चलें तो उन्हें वास्तविक लाभ प्राप्त होगा ।

---

*परिशिष्ट में गीता रामायण के पाठ के सम्बन्ध में दिये गये आधुनिक सन्दर्भ को भी पढ़ें ।

† यदि मुझे अपनी शिक्षा फिर प्रारम्भ करनी हो और कुछ भी मेरी चले तो मैं सर्वप्रथम अपने मन का स्वामी बनना सीखूँगा... लोगों को सीखने में बहुत देर लगती है, क्योंकि वे अपने मन को इच्छानुसार एकाग्र नहीं कर पाते ।

—स्वामी विवेकानन्द

५.२ दान विधान

श्री श्री चच्चाजी सा० दान पर विशेष बल देते थे किन्तु दान के लिये सुयोग्य पात्रों को खोज पाने की आज-कल की कठिनाई को देखते हुए उन्होंने वैकल्पिक व्यवस्था की थी ।

५.२.१ दान योग्य पात्र

५.२.१.१ चींटियों को पंजीरी चुगाना * : हवन के पश्चात् दान की अपेक्षा होती है । इसके लिये श्री श्री चच्चाजी सा० ने चींटियों को पंजीरी चुगाने का विधान निश्चित किया था ।

अपने यहां भण्डारों के अवसरों पर भी प्रेमीजनों से पंजीरी का प्रसाद लाने केलिये उन्होंने कहा था । इस प्रसाद को एकत्र करके ही बाद में भण्डारे के महा प्रसाद के रूप में बाँट दिया जाता था ।

५.२.१.२ कन्या व छोटे बालकों को भोजन कराना : रामायण पाठ के पश्चात् हवन तथा हवन के पश्चात् ६ से लेकर १२ तक की संख्या में कन्या व छोटे बालकों को भोजन कराने का दान-विधान रखा था । [देखें ५.१.१]

---

* दयानन्द वैदिक महा विद्यालय उरई को उन्होंने अपनी ३५ बीघा भूमि जो ७०-८० हजार की थी, दान दी थी । उस दान-पत्र में गांधी जयन्ती [२ अक्टूबर] पर हवन करने के निर्देश हैं और हवन के पश्चात् चींटियो को चुगाने का निम्नलिखित विधान दिया हुआ है—

"शास्त्रों के अनुसार हवन की शान्ति के लिए सुपात्रों को भोजन कराने का विधान है परन्तु वर्तमान समय में यदि सुपात्रों का मिलना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है । अतः हवन की शान्ति के लिए सवा सेर पंजीरी बनवाकर कालेज के अहाते के वृक्षों की पिण्डी के चारों ओर चींटियों के चुनने के लिए किसी विश्वास-पात्र व्यक्ति या व्यक्तियों के द्वारा डाल दिया जाय ।"

५.२.१.३ अच्छे पण्डितों * अथवा १२साल से कम उम्रके लड़कों को खाना खिलाना : मूल शान्ति के पश्चात् यदि अच्छे ११ पण्डित मिल जायें तो उन्हें भोजन करावें अन्यथा १२ साल से कम उम् के लड़कों को खाना खिलावें। [देखें आगे ५.३.२ मूल शान्ति]

५.२.१.४ चिड़ियों को चुगाना : अन्य संदर्भों में श्री श्री चच्चाजी सा० ने कन्या एवं छोटे बच्चों को भोजन कराने के साथ एवं अन्यथा भी चिड़ियों को चुगाने का दान-विधान रखा था।

५.२.२ दान वस्तु—श्री श्री चच्चाजी सा० दानवस्तु के अन्तर्गत ऐसी वस्तुओं को रखना पसन्द करते थे जो सामान्यजनों को भी सुलभ हो सकें।

अतएव दान वस्तुयें थीं—पंजीरी, गुड़ (१ किलो से ५ किलो , दूध चावल, दाल चावल, आटा नमक आदि।

५.२.३ दानसंग्रह × — दानसंग्रह के लिए एक सुन्दर व्यवस्था यह की थी एवं जिसकी अपेक्षा वह गृहणियों से करते थे—

अपने घर के भोजन के लिये भोज्य सामग्री लेते समय उसमें से प्रतिदिन निकाल कर रखते जाना चाहिये जैसे ३ मुट्ठी दाल निकाली तो १ मुट्ठी दाल दानसंग्रह के लिये अलग से निकाल कर रख दी जाये, चार कंकड़ी नमक निकाला तो एक कंकड़ी दानसंग्रह के लिये निकाल दी,

---

* तेरहवीं के अवसर पर भी १३ पण्डितों / सुपात्रों के विकल्प रूप १३ कन्या या बालकों को खिलाने का विधान रखा था। (देखें ५.४.२)

× गुरुमाता श्री श्री राधामातेश्वरी इसीप्रकार दान संग्रह करती थीं। महात्मा श्री श्री दिनेशकुमार जी की श्रीमाताश्री गुरुमाता जी भी इसीप्रकार दान संग्रह करती हैं।

इसी प्रकार अन्य मसाले तथा आटे आदि में से निकालकर रख देना चाहिए। इस संग्रह में से अतिथि सेवा की जा सकती है। किसी याचक दीन दुखी, पीड़ित आदि को भण्डारों के लिये दे सकते हैं। माह के अन्त में जो सामान बचे उसको अपने घर के प्रयोग में ले लेना चाहिये और उसके स्थान पर उतनी ताजी सामग्री रख देना चाहिये जिससे रखी हुई भोज्य सामग्री खराब न हो।

इसीप्रकार श्री श्री चच्चाजी सा० अपनी मासिक आय * का दशांश या शतांश दानसंग्रह के रूप में पृथक रख लेने की अपेक्षा करते थे।

दान, धन ° के प्रति मोह को भंग करने का एक साधन है।

---

* एक वैकल्पिक व्यवस्था हो सकती है कि प्रतिदिन दोपहर के भोजन के समय भोजन करने से पूर्व एक रुपया दानसंग्रह के लिए सुरक्षित रखते जावें।

° अपने विचार में **आध्यात्मिक शक्ति और धन** को कभी मत मिलाओ, यह सीधा विध्वंस की ओर ले जाता है।

[अग्निशिखा जन० ९० पृ० ४]

—**आज्ञापालन ही सेवा है और सेवा से ही सदाचार की प्राप्ति होती है।**

—**मन ही सच्चा मित्र है, मन ही ब्रह्म है, मन ही गुरु है, उसकी अपार शक्ति है।**

[श्री श्री चच्चाजी सा०]

५.३ शान्ति विधान

—महामृत्युञ्जय मंत्र द्वारा

—ख्याल दूर करना —मूल शान्ति ।

५.३.१ ख्याल दूर करना

ॐ ७३८-पुराना कटरा, इलाहाबाद

प्रिय — — ईश्वर कृपा करें । ७-४-५६

— — — के लिये चिन्ता की कोई बात नहीं है । **फिर भी चूंकि आप लोगों को कुछ ख्याल* हो गया है, अतः उस ख्याल को दूर करने के लिए रोजाना आप और (आपकी गृहिणी) ११** मालायें नीचे लिखे मन्त्र का जाप कर लिया करें—

मन्त्र — — ॐ ह्रों जूं सः — — — शु०चि० : भवानीशंकर

५.३.२ मूल शान्ति

ॐ उरई

प्रिय — — ईश्वर कृपा करें । ११-७-१९६१

आप किसी पण्डित, जो मूलों की शान्ति का कार्यक्रम करेगा, कह दीजिये कि **ग्यारह हजार महामृत्युञ्जय मंत्र का जाप विधि पूर्वक ११ दिन तक कर देव** और ग्यारहवें दिन मूलों की शान्ति करा दी जावे । **अगर अच्छे पण्डित मिल जायें तो ग्यारह पण्डितों को भोजन करा दीजिये अपने मकान पर ।** यदि अच्छे पण्डित न मिलें तो सिर्फ एक पण्डित जो मूलों की शान्ति करादेंगे, उनको भोजन करा दीजिये और **बारह साल से कम उम्र के लड़के लड़कियों को घर पर खाना खिला दीजिये ।** ··· शु०चि० : भवानीशंकर

---

*परिवार के सनातनधर्मी अथवा कर्मकाण्डी संस्कारों के कारण प्रायः प्रेमीजनों की पूजा-पाठ विधान में आस्था बनी रहती है । कभी कुछ ख्याल हो जाता है तो उसको दूर करने के लिए पूजा-पाठ विधान मनोवैज्ञानिक दृष्टि से कारगर उपाय सिद्ध होता है । इसीप्रकार के सन्दर्भों में श्री श्री चच्चाजी सा० ने पूजा-पाठ विधान का परामर्श अपने प्रेमीजनों को दिया है ।

५.४ 'ॐ शान्ति' जाप-विधान

५.४.० दादा गुरु श्री श्री लालाजी सा० की समाधि (फतेहगढ़) पर प्रतिवर्ष भण्डारे के अवसर पर "ॐ शान्ति जाप" किया जाता है । सभी सत्कुलों ने इसको अपनाया है । श्री श्री चच्चाजी सा० ने भी महात्मा गाँधी जी की आत्मशान्ति के आयोजन में इसको करने के निर्देश दिये हैं । (देखें ५.४.२)

७०,००० जाप करने की व्यवस्था होती है, जो सामूहिकरूप से ५००० बीजों या चनों को लेकर १४ चक्र में पूरी हो जाती है ।

'ॐ शान्ति' का अखण्ड जाप भी किया जाता है जिसमें चार-चार प्रेमी भाइयों की टोली बना दी जाती है, जो एक-एक घंटे जाप करती है। जाप के पश्चात् जिन बुजुर्ग के लिये जाप किया जा रहा हो, उनको समर्पित करते हैं ।

५.४.१ जाप विधि

[५.४.२ में श्री श्री चच्चाजी सा० ने इसका विवरण दिया है]

—अपने गुरुदेव का ध्यान करके जिन बुजुर्ग के लिये जाप करना है, उनका आह्वान करें ।

—जाप के समापन पर इसका फल उन बुजुर्ग की सेवा में ही अर्पण कर देना चाहिए ।

—जाप के पश्चात् प्रसाद रखना चाहिये तथा ग्रहण करने के लिये प्रार्थना करनी चाहिये । अपने गुरुदेव से प्रार्थना करनी चाहिये कि इस प्रसाद को वह बुजुर्ग कृपा कर स्वीकार करें ।

टीप : —जब किसी दूसरे बुजुर्ग के लिये जाप करें तो अपने गुरुदेव के ध्यान में अवस्थित होकर जाप करना चाहिये । यों पहली विधि से भी कर सकते हैं । यह प्रार्थना होनी चाहिये कि प्रभो आप ही इसको करें और आप ही इसको करावें ।

—"ॐ शान्ति" जाप को श्वास-प्रश्वास पर करने से जाप एकाग्रता पूर्वक बन जाता है। श्वास पर "ॐ" तथा प्रश्वास पर "शान्ति" का जाप होना चाहिये।

श्री श्री बाबूजी सा० (गाजियाबाद) इस जाप का फल बताते थे कि इसके करने से जिस बुजुर्ग के लिये किया जाता है, उनसे सपर्क (निस्बत) हो जाता है। यदि एक वर्ष तक नियमित रूप से किया जाय तो वह बुजुर्ग दर्शन देते हैं और परमात्मा से सिफारिश कर देते हैं।

—रात को सोने से पूर्व निम्नलिखित रूप में "ॐ शान्ति जाप" करना चाहिये। यह जाप विधान श्री श्री दिनेशकुमार जी ने बताया है—

१ माला संसार के और अपने सिलसिले के सभी बुजुर्गों के लिये
१ माला श्री श्री लालाजी सा० के लिये
१ माला अपने पितृगणों के लिये
५ माला अपने श्री गुरुदेव के लिये

५.४.२ महात्मा गांधी की आत्मा की शान्ति प्रार्थना के आयोजन के लिए निर्देश

प्रस्तावना : परिपत्र संक्षिप्ति

सेवा में,

सब प्रेमी भाई साहबान मौजा गोरन (जि० जालौन) परमात्मा गुरुदेव स्मरण।

जगदगुरु महात्मा गांधी ईश्वर का अवतार लेकर सत्य व अहिंसा रूपी गरुड़ पर सवार होकर इस संसार में सदाचार की वृद्धि के लिए प्रकट हुये थे और अपनी बिलक्षण शक्तियों द्वारा प्रकाश रूपी सदाचार का सारे संसार में प्रचार करते हुए उन्होंने अपने ईश्वरीय अवतार का परिचय दिया।

सब प्रेमी सज्जनों को उनकी सन्तान की हैसियत से उनको श्रद्धाञ्जलि देना कर्त्तव्य है। महान आत्मा की महान शान्ति के लिए निम्नलिखित कर्त्तव्य पालन करने की सम्मति प्रकट की जाती है।

१. दस तारीख की रात को ३/४ भोजन करने के बाद ठीक समय पर चारपाई पर चले जाना चाहिए और सोते-सोते यह संयम करना चाहिए कि उनकी सेवा के हेतु अपनी विषय रूपी कुछ इच्छायें बाकी न रहें। ११ तारीख के लिये जिसको जो गृह कार्य करना हो, इसका इन्तजाम १० तारीख को ही करके निवृत्त हो जावें ताकि महात्माजी के शान्ति पाठ में कोई बाधा न हो।

२. ११ तारीख को सुबह नियमानुसार अपने-अपने घर पर सुबह की सध्या करने के बाद ९ बजे सत्संग भवन में आ जाना चाहिए और **अपने गुरुदेव का स्मरण करके महात्मा जी की महान आत्मा का आह्वान करके उनकी सेवा के लिये परमसंत महात्मा तुलसीदास जी की रामायण का पाठ शुरू करें। ११ तारीख की रात को पाठ समाप्त होने पर उसका फल महात्मा जी की आत्म शांति के लिए अर्पण कर देना चाहिए।**

रामायण पाठ के दर्मयान चने गिनकर कम से कम २००० रख लेना चाहिए। **७२००० का "ॐ शान्ति" जाप खत्म होने पर थोड़ा विश्राम लेकर मानसिक प्रार्थना करें।** बाद में फिर शुरू कर देना चाहिए। रामायण का पाठ, जिनको रुचि हो बदल-बदल कर पाठ करते रहें। इस तरह ११ तारीख का पूरा दिन और सारी रात महात्मा गाँधी जी की आत्मा की शान्ति प्रार्थना में व्यतीत होगा।

१२ तारीख को ९.१० बजे के दर्म्यान में मोहल्ले के छोटे-छोटे लड़के व **लड़कियों को जिनकी तादाद १३ से कम न होना चाहिए, दूध चावल खिला देना चाहिए।**

प्रसाद में गुड़ रहे जो सवा सेर से कम न हो तथा ५ सेर से ज्यादा न हो। इसको महात्माजी की महान आत्मा के सम्मुख रखकर उनकी महान आत्मा से प्रार्थना करने के पश्चात् परमात्मा गुरुदेव से प्रार्थना करना चाहिए कि महात्मा गांधी जी उसको स्वीकार करें।

उसके पश्चात् जो प्रेमीजन वहाँ मौजूद हों उनको थोड़ा-थोड़ा करके प्रसाद तकसीम कर देना चाहिए। इसके लिये यह लाजिमी नहीं है कि सत्संगी भाई साहबान ही शामिल हों बल्कि जो महात्मा गांधी जी के प्रेमीजन हों वह शामिल हो सकते हैं।

शान्ति पाठ के दरम्यान सबको चाहिये कि बहुत अदब के साथ अपना-अपना शान्ति पाठ कार्य जारी रखें और फिजूल की बातचीत या वाद-विवाद न करें।

दासानुदास : भवानीशंकर
मु० सीसामऊ, कानपुर

५.४.३ तर्पण एवं दिवंगत के लिये आत्म-शान्ति प्रार्थना विधान

> लाई हयात आए, कज़ा ले चली चले,
> अपनी खुशी न आए, न अपनी खुशी चले।

५.४.३.१ तर्पण

झाँसी सत्संग
८-८-४६

—ईश्वरीय मार्ग में तर्पण के माने है प्रकाश के।

[गुरु के दिव्य प्रकाश में पितृगणों की आत्मा को लीन किया जाना तर्पण है]

[श्री श्री चच्चाजी सा०]

५.४.३.२ दिवंगत की आत्म-शान्ति के लिए प्रार्थना

झाँसी सत्संग
५-९-४५

पहले तो हमको ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि हे ईश्वर! तू बड़ा कृपालु व दयालु है। उस आदमी के अपराधों को क्षमा कर। मुमकिन है कि इससे अपने जान में या अनजान में कोई गलती हो गई हो क्योंकि वह भी तेरी माया में फँसा हुआ था। इस तरह से प्रार्थना करते रहना चाहिए और **जब यह महसूस हो कि वह प्रार्थना कुबूल हो गई है** तब फिर ईश्वर से प्रार्थना करना चाहिये कि अब आप उस आदमी को हुक्म दें कि वह मुझको और मुझसे कोई गलती हो गई है तो उसको क्षमा करें। इसके बाद फिर ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि अगर मुझसे या उससे कोई गलती हो गई है तो उसको क्षमा करें क्योंकि गलती वगैरह सब ईश्वर के सामने ही हुआ करती है। इसमें और उसमें दोनों में ईश्वर व्यापक है। इस वास्ते बिना ईश्वर के हुक्म के हम और वह मजबूर हैं कि आपस में क्षमा कर दें। प्रार्थना इतनी होनी चाहिए कि जब-जब उसका ख्याल हमारे दिल में आवे तो हमको फौरन उसके वास्ते प्रार्थना करनी चाहिये। **प्रार्थना से हृदय साफ होता है, शान्ति मिलती है और माया-मोह का वेग कम होता जाता है। लिहाजा हर आदमी का फर्ज है कि वह प्रार्थना किया करें।**

[श्री श्री चच्चाजी सा०]

५.४.३.३ एक प्रेमी भाई के बाबा की मृत्यु पर (अंग्रेजी में) लिखे पत्र में शान्ति प्रार्थना का विशेष आग्रह किया गया।

[परिशिष्ट ७-१-ग-३]

ॐ

झाँसी
(१९४३-४४)

प्रिय बा० ... ...

जब मैं अपने भाई की पुत्री के विवाह के सम्बन्ध में कौंच में था

तब आपके बाबा के प्रसादपूर्ण देहावसान की सूचना मिली थी। आपके बाबा सौभाग्यशाली थे कि संसार से हँसी-खुशी विदा हुए। उनके करने के लिए कुछ भी शेष नहीं था। इन परिस्थितियों में आप सब पर यह लाजिमी है कि जब तक आप इस संसार में हैं, उनकी आत्मशान्ति के लिये प्रार्थना करें। **यह एक या दो दिन का काम नहीं है बल्कि इसको जब तक आपका जीवन है, जारी रखना चाहिये।**

—भवानीशंकर

५.५ कल्याण मार्ग में कष्ट विधान

परेशानियाँ ईश्वरीय देन

भवानीशंकर, सत्संग आश्रम
ॐ पोलीपुरा, उरई
प्रिय ··· — ईश्वर कृपा करें। ५-८-५४

··· ··· आपकी परेशानियाँ ईश्वरीय देन हैं। ऐसे ही समय में धर्म-पालन काम है। बिपत्ति में धैर्य धरे सोई ललाम है। **ईश्वर सहायता करें।**

शु॰चि॰ : भवानीशंकर

टीप : 'गृहस्थ जीवन और सदाचार' में श्री श्री चच्चाजी सा॰ ने 'कल्याण मार्ग में दुःख विधान' नाम से एक प्रकरण प्रस्तुत किया है। उसके उद्धरण यहाँ दिये जा रहे हैं।

—उच्चावस्था, आचरण एवं सदाचार प्राप्त करने के लिये सर्वप्रथम अन्तःकरण की शुद्धि अनिवार्य है। **इसके लिये विपत्तियाँ और कठिनाइयाँ आवश्यक हैं।**

—जब भगवान किसी को कीर्ति प्रदान करना चाहते हैं तो पहले उसे सोने की भाँति दुखाग्नि में तपाते है। **भगवान अपने भक्तों को सर्वप्रथम नाना प्रकार के दुःख देते हैं, उनका अपमान**

कराते हैं; उनकी अपकीर्ति होती है, उनपर झूठे कलंक लगते हैं। यह सब भगवान इसलिये करते हैं ताकि उनका भक्त पूर्णरूपेण स्वच्छ व निर्मल होकर उनकी तरह से संसार की सेवा के योग्य बन सके।

—भजन पूजन का उद्देश्य, विपत्तियों को सहन करने की शक्ति प्राप्त करना है। ··· ··· यदि भजन करने वाले भी दुःखों या कष्टों को सहन करने की शक्ति नहीं रखते हैं, तो यह समझना चाहिये कि उनका भजन पूजन अपूर्ण है, उन्होंने अपना समय व्यर्थ ही नष्ट किया है।

—यदि हम अपना कल्याण चाहते हैं, अपनी रक्षा चाहते हैं तो हमें संतमत के अनुसार **श्वास प्रति श्वास राम नाम का जाप करना चाहिए। राम नाम में अपार शक्ति है।**

—हमारी साधना का फल सदाचार में पाया जाना चाहिए क्योंकि ज्ञान, वैराग्य, भक्ति आदि का फल सदाचार है। **अभ्यास साधन यदि सदाचार में परिणत नहीं होता तो सब करा कराया बेकार हो जाता है और समय भी नष्ट होता है।** यदि साधन करते-करते वाक्य सिद्धि, कामना-सिद्धि तथा अन्य प्रकार की **ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ प्राप्त हो जायें तो उससे आध्यात्म मार्ग में लाभ होने के बजाय हानि ही होती है।**

१–सूफी संत, साधकों के जीवन में इल्लत (बीमारी) जिल्लत (अपमान, तिरस्कार) किल्लत (पैसे की तंगी) होना साधन सफलता हेतु आवश्यक समझते हैं।

२–संत हज़रत बायजीद बस्तामी (र॰अ॰) कहा करते थे कि अगर किसी दिन कोई बला (मुसीबत) नहीं आती तो शिकायत करता हूं कि 'या इलाही रोटी भेजी लेकिन सालन न भेजी।"

६.० लोक–व्यवहार

६.० लोकाचार का सम्मान

६.१ परिवार के साथ व्यवहार

६.२ स्त्री के साथ व्यवहार

६.३ अमित्र के साथ व्यवहार

६.४ तीर्थस्थल का आचार

६.५ शरीर रक्षा एवं हृदय मंदिर की रक्षा

६.६ चिन्ता न करना

६.७ अन्य परामर्श

प्रीति–नीति परमारथ स्वारथ
कोऊ न राम सम जान जथारथ

'यथार्थ कर्त्तव्य पालन वह है कि जिससे न आपका मन दुःखी व दूषित हो और न दूसरे का।'

[श्रीश्री चच्चा जी सा० कर्त्तव्य पालन और सदाचार]

'पूजा का यह असर होना चाहिये कि जिसके साथ जैसा व्यवहार करने की जरूरत है, वैसा व्यवहार आपसे आप अदा होता जावे।'

'हम सभी कामों को भगवान के काम समझकर करें।'

—श्री श्री चच्चा जी सा०

६.० लोकाचार का सम्मान

[श्रीश्री चच्चा जी सा० लोकाचार के विधि-विधान एवं पूजन आदि लोक मान्यता के अनुसार मानने और करने के पक्ष में रहे हैं। लोकाचार का सम्मान करने का अपने प्रेमीजनों को परामर्श देते रहे हैं।]

ॐ

सत्संग आश्रम
११४, चन्द्रनगर उरई
६-१०-५९

श्रीमान वैद्य जी ! ईश्वर कृपा करें।

यह प्रसन्नता की बात है और ईश्वर को धन्यवाद है कि आप का मकान रहने के योग्य बन गया है। आपने गृह प्रवेश के सम्बन्ध में मुझे आने को लिखा है, यह आपका पवित्र प्रेम है। आजकल मेरा स्वास्थ्य ऐसा है कि आने-जाने में मुझे कष्ट प्रतीत होता है। अतः मैं आने से लाचार हूं। **आप किसी शुभ मुहूर्त में किसी पंडित द्वारा गृह प्रवेश के समय यथाविधि पूजन करा दें, और ईश्वर का आसरा लेकर मकान में प्रवेश करें। मैं भी आंतरिक रूप से उपस्थित रहूंगा, *ऐसा दृढ़ निश्चय रखिये।** ईश्वर सब प्रकार से आपकी रक्षा करें।

शु० चि०
भवानी शंकर

---

* कृपया १.३.१ का संदर्भ लें।

६.१ परिवार के साथ व्यवहार

—परिवार वालों से प्रेम करना ईश्वरीय प्रेम करने का सरल व सुगम साधन है। जिसने अपने परिवार वालों से प्रेम नहीं किया, वह प्रेम प्राप्त कष्ट व दुःखों का अनुभव न होने के कारण प्रेम के रहस्य से वंचित रहता है।

[श्रीश्री चच्चा जी सा० : कर्त्तव्य पालन व सदाचार ५९]

६.१.१ अग्रज का दायित्व

ॐ

२६.६.५४
भवानी शंकर सत्संग आश्रम
पोसीपुरा, उरई

प्रिय ······ईश्वर कृपा करें

······ आप घर में अपने पिता जी की आत्मा की शान्ति के लिये अपने घर का वातावरण ठीक रखिये। **आपका स्थान अब आपके पिताजी के स्थान पर है।** अतः आपस में प्रेम पूर्वक सब घर की बातें तय कर लीजिये। इसी में आपका तथा आपकी माता जी तथा भाइयों का कल्याण है। ·········

शुभ चिन्तक
भवानी शंकर

६.१.२ घर के मामले आपस में तय कर लेना

ॐ भवानी शंकर सत्संग
घोसी पुरा, उरई

प्रिय ·· ··· – ईश्वर की कृपा करें । ९.७.५४

······घर के मामले आपस में समझौता होने में ही सबका लाभ है स्वयं आप समझदार हैं । आपकी गृहिणी भी समझदार हैं । इसलिये जो आपस में तय हो जावेगी वह प्रसंशनीय रहेगी ।

शु० चि० : भवानी शंकर

६.१.३ अलग–अलग बने रहना

ॐ झांसी २३.२.५४

प्रिय – परमात्मा गुरुदेव कृपा करें । पत्र मिला ।
यथा योग्य सेवा माता-पिता, भाई इत्यादि की करना कर्त्तव्य है। आजकल का समय ऐसा है साथ रहने में बजाय प्रेम के वैर भाव पैदा होने लगता है । अतःसबको अपने-अपने स्थान में रहना चाहिये । सेवा के हेतु आर्थिक सहायता जो हो सके, करते रहिये और ऐसा ही उनसे निवेदन कर दीजिये । शु० चि० : भवानी शंकर

६.२ स्त्री के साथ व्यवहार

६.२.१ अपने सदाचार का परिचय देना

ॐ भवानी शंकर सत्संग आश्रम
घोसीपुरा, उरई ३.८.५२

प्रिय····· आपको शुद्ध व पवित्र हृदय से अपने सदाचार का यथार्थ परिचय अपनी धर्म पत्नी को देना चाहिये । ऐसा होने से वह धर्मानुसार आपकी अर्द्धांगिनी होकर सब प्रकार से आपकी रूचि के अनुसार रहेगी । सांसारिक तथा आध्यात्म मार्ग में इस पर विचार करते हुये हार्दिक प्रायश्चित आवश्कीय है । आप सब की सेवा में ईश्वरीय प्रेम, शु० चि० : भवानी शंकर

६.२.२ स्त्री आध्यात्म मार्ग में सहायक

झांसी २३.३

प्रिय भाईजी ·– –– ··· परमात्मा गुरुदेव सदैव आपकी रक्षा करें । ··· इस मार्ग के लिये स्त्री विशेष रूप से सहायक होती है और बिना उसकी सहायता के यह मार्ग तय भी नहीं होता है । अतः उसको अपना प्रेम पात्र बनाना ईश्वरीय साधना के लिये आवश्यकीय है । ··· प्रेम के साथ अपनी गृहचर्या करते हुए एक दूसरे के प्रेम पात्र बनने का साधन करते रहें । तन्दुरुस्ती का विचार खास-तौर पर रखिये । इसकी जिम्मेदारी आपकी स्त्री पर निर्भर है ।··· ·· आपकी स्त्री मेरी लड़की है। अतः लड़की के रिश्ते से उससे प्रार्थना है कि आपकी सेवा उसके लिये ईश्वरीय सेवा है ।

शुभ चिन्तक
भवानी शंकर

६.२.३ अन्य स्त्री मात्र के प्रति उदासीनता

ॐ ४.९.५१
घोसीपुरा, उरई

प्रिय··· ··· ·· ईश्वर आप पर विशेष कृपा करें ।
······किसी भी श्रेणी की स्त्री को[चाहे वह निज माता, बुआ, बहिन, बेटी ही क्यों न हो] यदि विशेष कारणवश पत्र लिखने की आवश्यकता पड़े तो कम से कम शब्द में पत्र लिखा जाय (मोह उत्पन्न करने वाले शब्दों का कदापि प्रयोग न किया जाय)

शुभ चिन्तक
भवानी शंकर

६.३ अमित्र के साथ व्यवहार

शिष्टाचार का व्यवहार

अपने घर आये हुए का, यदि वह शत्रु भी हो तो भी तिरस्कार तथा अनादर करना महान असभ्यता तथा पाप है । घर पर आये हुये शत्रु का भी प्रेम पूर्वक शिष्टाचार तथा सत्कार वैसा ही करना चाहिये जैसा कि सर्व साधारण के साथ किया जाता है ।

[कर्त्तव्य पालन व सदाचार २६ वाँ पाठ]

६.४ तीर्थ स्थल का आचार

ॐ सत्संग आश्रम
१११, खत्रियाना, झांसी

प्रिय… …ईश्वर कृपा करें । २१.७.५०

… …मथुरा ब्रजभूमि है । उस भूमि का प्रभाव यह है कि जो जिस रुचि की भावना रखता है, वह उत्तेजित हो जाती है । आवश्यकता इस बात की है कि स्वार्थ तथा आर्थिक साधन के साथ ही साथ आध्यात्मिक साधन का भी प्रयत्न जारी रहे ।

शु० चि० : भवानी शंकर

टीप : दिसम्बर ४९ में (८-१२-४९ से २२-१२-४९) तक श्री गुरुदेव द्वारा अपने लगभग ४००-५०० प्रेमी भाईयों के साथ मथुरा वृन्दावन, काशी, आयोध्या तथा चित्रकूट की तीर्थयात्रा की गई थी। इस यात्रा में भाग लेने वाले प्रेमियों को कुछ प्रमुख निर्देश थे-

१-तीर्थ यात्रा के प्रारम्भ से अन्त तक के समय को अपने जीवन में बहुत अमूल्य समझें । प्रतिदिन नियमानुसार निश्चित-निश्चित समय पर भाव व प्रेम सहित अपनी पूजा की पाबन्धी अवश्य करें ।

२— इन दिनों में विशेष प्रकार से प्रत्येक श्वास श्रीराम नाम के साथ लेकर जीवन को पवित्र कर लेना चाहिये । यदि इसमें कठिनाई हो तो प्रतिदिन २१६०० राम नाम (या जिसको जो अपने इष्टदेव श्री भगवान के नाम का मंत्र प्रिय हो) का जाप माला द्वारा करते रहने का साधन करते रहना चाहिये ।

३— सौभाग्यवती स्त्रियों को मूँगा अथवा कांच की गुरियों की माला रखना उचित है ।

४— जब-जब जिस तीर्थ स्थान पर पहुंचे, उस स्थान पर पहुंचते ही अपने स्वरूप की स्थिति [अपने इष्टदेव के ध्यान] में सबसे प्रथम जिस देवता संत, मुनि, ऋषि अथवा अवतार का स्थान हो, उसकी महान आत्मा की शान्ति के लिये भाव और प्रेम सहित ५मिनट तक हार्दिक प्रार्थना करते रहें । * उसके पश्चात् अपने पितृ पक्ष, मातृ पक्ष, स्त्री पक्ष [स्त्रियों के लिये पति पक्ष] के तथा अन्य सम्बन्धियों व इष्ट मित्रों के पितरों की आत्मा की शान्ति के लिये १५-२० मिनट तक हार्दिक प्रार्थना करने का साधन अवश्य करते रहा करें ।

५— तीर्थों में भ्रमण करते तथा परिक्रमा आदि करते हुए निरन्तर मंत्र जाप [मन और जिह्वा] द्वारा करने का साधन भाव व प्रेम सहित करते रहना चाहिये ।

६— समय-समय पर कीर्तन, इत्यादि जब-जब, जिस-जिस समय तथा जिस-जिस स्थान पर हो वहां अपने स्वरूप की स्थिति [अपने इष्ट-देव के ध्यान] में भाव व प्रेम सहित प्रत्येक नर-नारी को पूर्ण सहयोग करना चाहिये ।

७— आपस में एक दूसरे की त्रुटि देखना तथा कानाफूसी, चुगली अथवा निन्दा इत्यादि करना प्रत्येक दशा में पाप है । ऐसे ही दूषित पापों और कर्मों का प्रायश्चित करने के लिये तीर्थ स्थान का विधान रखा गया ।

८— तीर्थयात्रा के दिनों में खाने-पीने में विशेष रुचि न रखकर श्रीभगवान के नाम और उनके कमल स्वरूपी चरणों की रज में स्वाद लेने का साधन करना उचित है। इन दिनों में केवल एक ही समय भोजन किया करें। विशेष क्षुधा की हालत में प्राप्त कलेवा द्वारा क्षुधा निवारण की जा सकती है।

नोट- चित्रकूट यात्रा ८-१२-४९ से प्रारम्भ होगी और २३-१२-४९ को समाप्त होगी।

• विशेष- इस यात्रा में तीर्थ स्थलों को दिव्य शक्तियां प्रदान करने के लिये श्रीश्री चच्चा जी सा० ने श्रीश्री सद्गुरुदेव से प्रार्थना, आग्रह, एवं अनुरोध किया था तथा श्रीश्री सद्गुरुदेव के स्वरूप में स्थित होकर उनको सादर भाव व प्रेम सहित दिव्य शक्तियों का भण्डार भेंट किया था और उनके द्वारा अन्य तीर्थ यात्रियों को दिये गये आशीर्वाद तथा शक्तियों की क्षतिपूर्ति एवं भरपाई की थी। यह उनका अनुपम कार्यक्रम था।

६.५ शरीर रक्षा आवश्यक है।

ॐ भवानी शंकर सत्संग आश्रम

घोसीपुरा, उरई

६.५.१ प्रिय ··· — जी १०.८.५१

ईश्वर आपकी सहायता करें।

शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का साधन पूजा का विशेष अंग है। अतः उसका साधन भी ठीक-ठाक रखिये।

शु० चि० : भवानी शंकर

ॐ झांसी ७.७.४१

६.५.२ प्रिय··· ··· ···परमात्मा गुरुदेव सदैव आपकी रक्षा करें। **गृहस्थ आश्रम की सेवा के हेतु शरीर की रक्षा आवश्यकीय है।** शुद्ध तथा स्वस्थ शरीर ही से आप यथा योग्य इस आश्रम में रहते हुए

सेवा करने का लाभ प्राप्त कर सकते है ··· ··· ··· अपने शरीर **की सेवा उसी तरह से करना चाहिये जिस तरह से एक भक्त पुरुष अपने इष्टदेव के शरीर की सेवा करता है। इसको ईश्वरीय पूजा का एक अंग समझिये।**

जब मैं तुम्हारे प्रफुल्लित शरीर को देखता हूं,मुझे शान्तिमय प्रसन्नता प्राप्त होती है। लेकिन जब कभी उसमें उदासपन या मलिनता के आवरण दिखलाई पड़ते हैं, तो चित्त को खेद होता है। अतः अपने चित्त को प्रसन्न रखने तथा स्वास्थ्य ठीकठाक रखने का साधन करते रहिये। इसके लिये हल्की सी व्यायाम या आसान जो सुविधा पूर्वक आप कर सकते हों, उसको करना शुरू कर दीजिये।— ··· ··· **मानसिक तथा शारीरिक ब्रह्मचर्य पर कमजोरी में ज्यादा आक्रमण पड़ता है। आपने स्वयं देखा होगा कि कमजोर को सब दबाते हैं।** गुरु महाराज की कृपा से जैसे-जैसे स्वास्थ्य बनाने की रुचि आपकी बढ़ती जावेगी, वैसे ही वैसे इन आक्रमणों का वेग कम होता जावेगा।

शु० चि० : भवानी शंकर

६.५.३

ॐ उरई १६-९-६८

प्रिय ··· ··· ··· जी, ईश्वर कृपा करें।

आपके दोनों पत्र एक साथ मिले। आपके पैर की चोट तथा उसके कारण अन्य कष्ट मालूम होकर चिन्ता है। **ईश्वर कृपा से अब लाभ होगा।** फिर भी यदि कुछ कष्ट का अनुभव हो रहा हो तो छुट्टी लेकर चले आइये। जैसा जो कुछ हो, अपनी हालत से शीघ्र सूचित कीजिये। **सावधानी के साथ शरीर रक्षा करते रहिये।** ईश्वर आपकी सहायता करें।

शु० चि० : भवानी शंकर

६.५.४ हृदय मन्दिर की रक्षा आवश्यक

प्रिय ··· ·· ·· ईश्वर कृपा करें । ५१/२, चन्द्रनगर उरई
४-४-७०

पत्र मिला । **ईमानदारी के साथ परिश्रम करने का फल अंतःकरण को स्वतः ही प्राप्त होता रहता है।** अफसरों द्वारा ईमानदारी का मूल्य नहीं आंका जा सकता है । अतः ईश्वर से प्रार्थना करते रहिये कि आप सद्मार्ग को दृढ़ता के साथ पकड़े रहें । **यदि समयानुकूल कोई चीज अनुकूल अथवा प्रतिकूल सम्मुख आवे तो उस समय साधना करते रहना चाहिये कि वह हृदय मन्दिर में, जो श्री भगवान का है, प्रवेश न करने पावे ।** ईश्वर आपकी रक्षा करें ।

शु० चि० : भवानी शंकर

६.६ चिन्ता न करना

६.६.१ जो कुछ हो गया उस पर संतोष करना

ॐ

भवानी शंकर सत्संग आश्रम
घोसीपुरा, उरई ७.८.५२

प्रिय ··· ··· ·· ईश्वर कृपा करें ।

· मेरे पत्र पहुंचने के पहले ही मकान का रहननामा हो चुका था. इसलिये आपको किसी प्रकार का ख्याल नहीं करना चाहिये । जो कुछ हो गया, ईश्वर उसी में अपनी कृपा व दया करेंगे। **सांसारिक मामलों में आवश्यकता से अधिक चिन्ता न करना चाहिये। ईश्वर का भरोसा रखिये । उसकी कृपा व दया से भला होगा ।**

शुभ चिन्तक
भवानी शंकर

६.६.२ दुःख-सुख हर चीज का वेग तीन दिन

झांसी सत्संग १५.८.४६

> **मन से दुखों का चिन्तन न करना ही दुःख निवारण की अचूक दवा है ।** *
>
> श्रीश्री चच्चा जी सा०

हर चीज का वेग तीन दिन से ज्यादा नहीं चलता है । यह हो सकता है कि किसी चीज का वेग तीन मिनट या तीन घण्टे या तीन घड़ी हो और ज्यादा से ज्यादा तीन दिन हो सकता है । लिहाजा यह तीन दिन बड़े जतन के साथ काटना चाहिये ··· ··· ··· और भगवान् से प्रार्थना करना चाहिये कि महाराज इसके बर्दाश्त करने की ताकत आप देवें । अगर लोग इसका ख्याल बनाये रखें तो एक बहुत बड़ा सहारा हो जायेगा और वह चीज काबिल बर्दाश्त हो जावेगी ।

---

* अगर तुम तकलीफ के बारे में सोचते ही रहोगे तो वह बढ़ती चली जायेगी । अगर तुम उस पर एकाग्रचित्त हुए तो वह फूल उठेगी । उसे लगेगा कि उसका स्वागत किया जा रहा है । लेकिन अगर तुम उस पर कोई ध्यान न दो तो उसे तुम्हारे अन्दर कोई रस न रह जायेगा और वह दूर चली जायेगी ।

सबसे अच्छा उपचार यह है कि अपने बारे में, अपने विकारों और अपनी कठिनाइयों के बारे में सोचना बन्द कर दो।

आओ, हम केवल उस महान कार्य के बारे में सोचें, उस आदर्श के बारे में जिसे श्री अरविन्द ने हमें चरितार्थ करने के लिये दिया है ।

श्री मां, अग्निशिखा : दिस० ८९ पृ० ३

६.७ अन्य परामर्श

६.७.१ विवाह के लिये परामर्श

ॐ

भवानी शंकर
सत्संग आश्रम, पोसीपुरा उरई

प्रिय ... ... - ईश्वर कृपा करें।
९.२.५६

— ... ...की शादी के बाबत कुल बातें लड़की वालों की मालूम होकर मेरी सम्मति ऐसी जगह करने की नहीं है। सदाचार और सभ्यता बिना सब बातें फीकी होती हैं। और भी लोग मेरे पास आते रहते हैं, सब बातें अनुकूल होने पर ही शादी होगी।

शु० चि० : भवानी शंकर

६.७.२ महिला के पढ़ाने के लिये निर्देश

एक साधक की मासिक डायरी' ४८ पर श्रीश्री गुरुदेव का किसी लड़की या स्त्री के पढ़ाने के सम्बन्ध में नोट कि कोई और व्यक्ति वहाँ मौजूद रहना चाहिये।

[१] जब उनसे आपकी स्त्री पढ़े तब आप मौजूद रहें।

[२] जब उनकी लड़की आपसे पढ़े तो उस लड़की के पिता वहाँ मौजूद रहें।

नं० १ व २ को मंत्र रूप समझते हुए उनका पालन करने में यथार्थ फल प्राप्त होगा

टीप- विवाह के लिये कुल वंश परम्परा का अवलोकन करना प्राचीन काल से होता आ रहा है। उसका अभीष्ट यही है कि अच्छी कुल परम्परा में सदाचार और सभ्यता मिलेगी। विवाह सम्बन्ध के निर्णय में इसका ध्यान रखना चाहिये न कि दहेज का, जिसकी आज प्रमुखता हो रही है।

७.० परिशिष्ट

७.१ श्री श्री चच्चा जी साहब के पत्र

क– जिज्ञासु के नाम पत्र

ख– सौभाग्यवती के नाम पत्र

ग- श्री श्री चच्चा जी साहब के हस्तलेख में तीन पत्र

७.२ श्री श्री चच्चा जी साहब की जन्मपत्री

७.३ श्री श्री चच्चा साहब के प्रिय गीत भजन आदि

७.४ अन्य संदर्भ

च- एक शिष्य एक गुरु

छ- श्री गुरु ध्यान साधना।

ज- गीता रामायण पाठ का एक आधुनिक संदर्भ

७.५ चित्रावली

इति श्री शङ्कर संदेशम्

□

७.१ परिशिष्ट

श्री श्री चच्चाजी साहब का पत्र: जिज्ञासु के नाम

(परम पिता परमात्मा श्री श्री सद्गुरुदेव श्रीश्री चच्चाजी साहब, (उरई) के किसी जिज्ञासु के लिये लिखे गये पत्र की प्रति जिसमें गुरु के प्रति शिष्य के भाव एवं प्रीति प्रतीति का उल्लेख किया गया है। संत मत में यह शिष्य का भाव मूल बीज बिन्दु है तथा इसके आधार पर ही आध्यात्मिक उन्नति संभव होती है. विशेष बात यह है कि यह भाव शिष्य का आंतरिक अपना भाव होता है। बाहर क्रिया रूप में कोई अपेक्षा नहीं की जाती जैसे कि किसी समय गुरुडम के तौर तरीकों में की जाती थी तथा जिसके कारण गुरुपरंपरा आलोचना का विषय बनी थी। यहां तो बाहरी व्यवहार में सामान्य सम्मान अपेक्षित होता है जो अपने बुजुर्गों के प्रति करते हैं। अंतर में पूजा और आराधना के भाव रहते हैं।)

ॐ गुरवे नमः

जिन्हें है इश्क सादिक, वे कहाँ फरियाद करते हैं।
लबों पर मुहर खामोशी दिलों में याद करते हैं।

प्रिय सुहृद, जय श्री गुरुदेव

आपका १९ अक्टूबर सन् १९३८ का लिखा प्रेमपत्र मिला। यह मालूम करके कि आपको [मेरा पत्र] पसंद आया व आपको ईश्वर की दया से सब तरह का दुनियावी आनन्द प्राप्त है, खुशी हुई। मेरे बारे में जो आपने ऊंचे विचार बांध रखे हैं, यह आपकी मुहब्बत ही के कारण हो सकता है, बरना मैं जैसा हूं, उसको में ही खूब जानता हूं, मेरा ख्याल तो यह है :-

तेरे बन्दे हम हैं खुदा जानता है।
खुदा जाने कि तू मुझे क्या मानता है।

भाईसाहब, यह तो प्रेम का मार्ग है। इसमें बड़े छोटे का कोई सवाल नहीं जो हमारे प्रेमी [हमारे गुरु महराज] का प्रेमी है, उसका क्या दर्जा है, उसको बयान करने की ताकत नहीं है। तुलसीदास जी ने खूब कहा है—

मोरे मन प्रभु अस बिसवासा, राम ते अधिक राम कर दासा।
तुलसी जाके मुखन ते धोखेहुं निकसत राम
ताके पग की पानहीं, मेरे तनको चाम।

मेरे ख्याल में यह भी कम है। सुंदरदास जी कहते हैं—

संतन ही ते पाइये, राम मिलन को घाट।
सहजे ही खुलजात हैं, सुंदर हृदय कपाट।

—००—

बासुदेवस्य ये भक्ताः ......स्तद्गत मानसाः
दासस्य दासो ऽहं भवे जन्मनि जन्मनि।

जो भगवदभक्त हैं, उन भागवतों के दासों का दास, मैं जन्मान्तरों मेंहोता रहूं, ऐसा न मानने की कोई बजह समझ में नहीं आती क्योंकि इन लोगों ने जो कुछ भी कहा है, वह अपने सच्चे हृदय से कहा है और ऐसा ही अनुभव किया होगा। ये सब सच्चे सन्त रहे हैं और दुनियां के मान की प्रतिष्ठा सेदूर रहे हैं और खासकर हम लोगों को तो शक करने की कोई गुंजाइश ही नहीं क्योंकि ऐसा ही विचार और व्यवहार श्रीमान लाला जी ग़ालबन इसी भाव से हम लोगों के साथ किया करते हैं।

मैं अपने आप को इस काबिल नहीं पाता कि आप जैसे विद्वान पुरुष को समझाने बुझाने की कोशिश करूं, लेकिन यह भी उचित नहीं मालूम पड़ता कि आपने जो सेवा मुझसे लेना पसंद की है, उससे इनकार करूं। इसलिये श्री गुरुदेव का स्मरण करके जो कुछ भी इस तुच्छ बुद्धि में उनकी दया व कृपा से आ रहा है, वह अपने टूटे-फूटे अलफ़ाज में बयान करता हूं. भूलचूक क्षमा करिये।

Who can give a law to lover
A greater law is love unto itself.

मुमकिन है कि आप जो भी शंकायें लिखते हैं वे कवि के इस कथन के अनुसार हों :-

How wise they are
that are but fools in love.

प्रेम की जड़ प्रीति—प्रतीति ही है। अगर बुनियाद में यह मसाला प्रीति-प्रतीति नहीं लगा है तो डगमग डगमग मची ही रहेगी। प्रीति-प्रतीति के लिये इन बातों की जरूरत आमतौर पर है—

१-जिस रास्ते पर हम चलना चाहते हैं, वह साफ, सीधा और बेखटका है।

२- जो रास्ते का साथी पथप्रदर्शक हमने चुना है, वह सच्चा, निस्वार्थी, सदाचारी, प्रेमी और रास्ते के ऊबड़-खाबड़ से खूब वाकिफकार [तजर्बेकार] है। उसके पास लाइसेन्स और सर्टीफिकेट है।

३-यात्रा आरंभ करने से पहले यात्री को यह भी समझ लेने की जरूरत है कि यह यात्रा आवश्यक और कल्याणकारी है।

४-यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यात्रा आरंभ करने के पहले यात्री का धन, बल, समय को निरख लेना बहुत जरूरी होता है।

मतलब इसका यह है कि यात्रा आवश्यक हो और कल्याणकारी भी हो और सुगम और लाभदायक भी हो परन्तु यात्री के पास उतना समय और बल नहीं है या पाकेट में उतना दाम नहीं है तो यात्रा करना भूल ही होगी और सिवाय पछतावा व रंज व अफसोस के और कुछ हाथ नहीं लगेगा। परिश्रम विफल जायेगा। इसलिये चतुर पुरुष इन सब बातों पर विचार करके किसी पंथ पर कदम रखते हैं या किसी काम को आरंभ करते हैं क्योंकि शूरवीर वही है जो पीछे कदम न हटावे और पीठ न दिखावे। जो रास्ता हमने ग्रहण किया वह सन्त मत है जिसको फारसी में सूफी और अंग्रेजी में सेण्ट कहते हैं। इसको निर्विवाद दुनियां में महान आत्माओं ने सच्चा, सीधा सुगम रास्ता माना है और इस पर चलने वाली महान आत्मायें सारे विश्व में हर समय पैदा होकर इसकी सुगमता व सरलता का सबूत देती रहती हैं। हमारे हिन्दू धर्म में इनकी कमी नहीं है। वेद पुराण इनके गुणगान करने में असमर्थता प्रकट करते हैं। गीता और रामायण में जो इनकी प्रशंसा की गई है वह उसके पढ़ने वालों पर जाहिर है।

पारसाल श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार ने अपने कल्याण अखबार का संत अंक निकाल कर जो उपकार किया, उसका धन्यवाद कैसे किया जाय। मैं आपको सलाह दूंगा कि ४ रु० ३ आ. बजरिये मनीआर्डर कल्याण प्रेस गोरखपुर भेजकर इस साल की पूरी फाइल मँगा लीजिये और इसमें हनुमानप्रसाद पोद्दार का लेख [पुनः क्षमा प्रार्थना] सफा ८३३ को कई बार खूब पढ़िये। संत अंक को आद्योपान्त पढ़ जाइये और थोड़े दिनों तक अपनी पाठ्य पुस्तक रखिये। ईश्वर चाहेगा तो आपकी सब शंकायें दूर हो जावेंगी। इस बारे में कुछ संत वाणी और कुछ मजमून भेज रहा हूं, इनसे भी आपको कुछ संतोष मिलेगा।

संत ही सुखधाम हैं, अत्यन्त ही निष्काम हैं।
श्री राम भक्ति ललाम हैं, अथवा स्वयं श्री राम हैं।
साधू की महिमा बरनौ कौन प्राणी
नानक साधू की महिमा प्रभुहि माहि समानी।

पहुंचा हुआ फकीर अनन्त के साथ अपने स्वधर्म का अनुभव करता है। उसका वैश्वानर शरीर विराट का विश्व है। जाग्रत अवस्था में उसे मालूम पड़ता है कि सारे संसार की हलचल उसके भीतर हो रही है, कुछ भी उसके बाहर नहीं और वह सपूर्ण सत्ताओं की समिष्टि है। संत का तैजस्य प्राणमय शरीर हिरण्यगर्भ विश्व का आधार है। स्वप्न अवस्था में संत समझता है कि सारा विश्व उसी के ऊपर विश्राम कर रहा है। उसका प्राज्ञ मानसिक स्वयं प्रज्ञ ईश्वर है जो सपूर्ण सृष्टि को उत्पन्न करके उसका नियमन करता है। संत की सुषुप्ति प्रलयावस्था है जो भूत और भावी सर्ग शृंखला को अपनी अटूट प्रज्ञा से जोड़ रही है। संत अपनी तुरीय अवस्था के सहज अनुभव में आनन्दमय ब्रह्म है। यहाँ अन्नमय, प्राणमय, मनोमय विज्ञानमय शरीर तथा उसके समकक्ष विराट हिरण्यगर्भ और ईश्वर की चेतना विलीन हो जाती है। यहां कर्ता और कर्म, दृष्टा और दृश्य का

भाव टूट-सा जाता है और स्वयं अपने-आप में रमण करना होता है। यह अतिरेकी आनन्द की अवस्था है जहां संसार के सब क्लेश छूट जाते हैं।

संत का जीवन बुद्धि, ज्ञान और अनुभव से सचालित है जो बुद्धिहीन और दुर्बल मन वाला है, उसकी इन्द्रियां वश में न रहकर दुर्विनीत घोड़े के समान उसे ले भागती हैं, किन्तु जो मनस्वी और बुद्धिमान हैं उनकी इन्द्रियां वश में रहती हैं। जो दुर्बुद्ध विवेकहीन, कलुषित आचरणवाला है, वह सनातन दिव्य अवस्था को नहीं प्राप्त कर सकता। बार-बार जन्म-मरण के बन्धन में आता है, जो बुद्धिमान, विवेकी सदाचारी है, वही उस पद को प्राप्त करता है, जहां से फिर लौटना नहीं पड़ता। ऐसे संतों का जीवन विश्व की स्वार्थहीन सेवा करने के लिये ही होता है, धन्य उनके भाग्य जिनको ऐसे संतों के दर्शन मिल जायें और उनके चरणो में बैठकर उनके सत उपदेश से अपने जीवन को सफल बनाने का सुअवसर प्राप्त हो। लेकिन मुश्किल यह है कि ऐसे संतों के सग लाभ उठाना उन इने-गिने लोगों के भाग्य में होता है जो सब अपनी आशाओं व वासनाओं को एकदम त्याग कर चातक की भांति ताक लगाये रहते हैं। (आशा और वासनायें मन की मलिनता होती है)

मुकुर मलिन अरु नयन बिहीना, राम रूप देखहिं किम दीना।

इसीलिये कहा जाता है कि उनकी निरख-परख में ज्यादा समय न जाया कर उनके परम आनन्द को पान करने में ही चातक की भांति चित्त को लगाये रहें। इसके यह मानी नहीं है कि बलाइण्ड फेथ, अधविश्वास लावें बल्कि मतलब यह है कि अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार जो कुछ भी मुमकिन हो देख-भाल करलें और जब किसी पर विश्वास आजावे और उसके संग से आनन्द प्राप्त हो और भटकते हुये मन को शान्ति और ठहराव मिलने लगे तब फिर बिला पशोपेश के अपने को उनके अर्पण करदे और आत्मिक जगत के कामों के लिये अपना तनमन और बुद्धि उनके हवाले करदे। जो उपदेश और आज्ञा मिले, उनका प्रेम और प्रतीति के साथ पालन करता चले और नतीजे के लिये आशायें बांधना

छोड़ दे। बीच-बीच में यदि संशय और भ्रमनायें पैदा करता रहेगा तो बिलावजह की मुसीबत और यात्रा के सुखमय आनन्द से वंचित रहेगा। संत को कोई पहचान नहीं सकता। उनकी बाहरी क्रियायें ऐसी अद्भुत और जाहरी बेजोड़ और बेतुकी-सी बाज वक्त मालूम होती हैं कि जिन्हें देखकर संशयात्मा घबड़ा जाती है, लेकिन उनका राज (भेद) न खुद समझ सकता है और न वह समझाना चाहते हैं। यह क्रियायें कभी निरखपरख के लिये, कभी उच्चाटन के लिये और कभी और किसी कारण से होती हैं। इनमें वही पूरा उतरता है जो दिल का सच्चा और इरादे का पक्का होता है।

आपने हवाई जहाज पर पहलेपहल सफर आरंभ किया है। कप्तान, हवाई जहाज बगैरह सबकी जाँचपड़ताल करली है और किराया देकर उसमें बैठ गये हैं। जहाज उड़ा और आसमान पर पहुँचा, वहां से देखा तबियत बहुत खुश हुई। नीचे की बस्ती की इमारत बगैरह सब एक साथ दिखलाई देने लगे। अब वह और ऊँचा गया तब कुछ नजर नहीं आता, जी घबड़ाया। साथी यात्री भी थे, उनसे घबड़ाकर पूछते हैं। कुछ आश्वासन देते हैं, कुछ अपने ही ख्यालात के उलझन के कारण खामोश हैं, कुछ हंसते है, कुछ चिढ़ाते हैं, और कुछ मजाक बनाते हैं। आप घबड़ाकर कप्तान के पास जाते हैं। वह इत्मीनान दिलाता है। अगर आपको उसके वचनों पर श्रद्धा और विश्वास है, तभी आपको तस्कीन या शान्ति मिलेगी वरना "संशयात्मा विनश्यति" वाली बात होगी। अभी कप्तान की बात से आपको कुछ विश्वास हो ही रहा था कि उसने, हवाई तूफान के खतरे के ख्याल से, जो उसको दूरबीन के जरिये मालूम हो गया है, लेकिन आप नहीं देख सकते हैं, जहाज को उंचानीचा करना व तेज करना शुरूकिया। अब आपकी घबराहट और बढ़ी। अगर सहनशक्ति नहीं है तो रोना और चिल्लाना भी शुरू हो सकता है। कप्तान की बात पर आपको विश्ववास नहीं। साथी सभी कहते हैं, उनकी बात आप सुनते नहीं। परिणाम क्या होगा ? या तो आप घबड़ाकर जहाज से कूद पड़ें और प्राण देदें या रोवें घबड़ाते रहें और खानापीना छोड़ दें। अपने साथी और कप्तान की नाक

में दम कर दें। अब अगर कप्तान आपकी वजह से जहाज उतारना चाहे और दूसरे मुसाफिरों की राह रोकनी भी करना चाहे तब भी तो जबतक कोई अड्डा या स्टेशन जहाज उतारने का न आवे, तबतक इन्तजार ही करेगा। अगर वहीं जंगल में उतार दे तो क्या दुर्दशा होगी। इसलिये प्रीति और प्रतीति लाजिमी है। जब हमने श्री गुरुदेव के चरणों में शीश दे दिया और उनके हवाई जहाज पर बैठ गये, तो इनका यकीन कामिल रखना चाहिये कि हमको वह जहां हमको पहुंचना है, जरूर पहुंचा देगें और सकुशल पहुंचा देगें। इसलिए सब शंकाओं को छोड़कर आकाश मण्डल की स्वच्छ वायु का सेवन और यात्रा का आनन्द लूटते हुये क्यों न चलें। जहाज कभी ऊंचा जायगा, कभी नीचा, कभी हिलेगा कभी तिरछा जायगा, कभी टेढ़ा, हम क्यों घबड़ावें ? हमारा कर्तव्य इसके सिवाय कुछ नहीं है कि हम जहाज के कानून को सच्चे दिल से मानें और कप्तान पर विश्वास रखें और मुहब्बत के साथ उससे पेश आवें। हम को अपना रास्ता सुखदायक बनाना है, तो प्रीति-प्रतीति लाजिमी है। प्रीति क्या है ? (लायल्टी एण्ड आबीडिएन्स) गुरु को सब दोषों और कमजोरियों से परे जब तक हम नहीं मानते, हमको विश्वास आ ही नहीं सकता। हम तब तक ठीक नहीं देख सकते जब तक हमारी दिव्य दृष्टि के ऊपर जाला और फिल्म लगा हुआ है और गुरु रूपी डाक्टर उसको साफ नहीं कर देता। हमको डाक्टर की आज्ञाओं का ज्यों का त्यों पालन करना ही होगा वरना आपरेशन की तकलीफ उठाने पर भी आंख में रोशनी न आवे, यह बहुत मुमकिन है। इसलिये प्रीति और प्रतीति का सहारा लिये बिना काम नहीं बन सकता है। हर एक हरकत और काम की वजह जानने या पहले समझने और तब कोई काम करने को तैयार होता हो तो ऐसे मरीज की ईश्वर ही रक्षा करे, तो भले ही पार हो।

मैं लखनऊ की नुमायश में गया। वहां पर खेल हो रहे थे। एक झूला था उसमें घोड़ा, हाथी, रथ, कुर्सी, आराम कुर्सी वगैरह कई तरह की सवारियां थीं। तमाशाई देख रहे थे। तमाशा करने वाला बाजा बजा रहा था, से कहता था कि इन पर बैठो। शौकीन लोग जिनके पास पैसा

था, खुद या अपने लड़कों को इन पर बिठा रहे थे। यह भी अख्तियार था कि जो सवारी पसंद करो उसपर बैठ जाओ। कई तरह के झूले थे, कुछ में हवाई जहाज लगे थे, कुछ में और। बैठने वाले दौड़कर-दौड़कर बैठ रहे थे। जब सब सवारी पूरी होगई, घंटी बजी, होशियार हो जाओ, चक्कर शुरू हुआ। कुछ लोग हंसते चक्कर लगा रहे थे, कुछ लोग बेखोफी से आपस में मजाक कर रहे थे। उधर कुछ लोग शौक से घोड़ों पर बैठ गये थे, लेकिन जब घोड़े अधर चलने लगे तो डर के मारे रोने लगे। एक लड़का ऐसा भी था कि उसके एक पैर का जूता निकल गया था। उसको इतना ज्ञान और सब्र नहीं था कि समझता कि तमाशा खत्म होने पर मिल जावेगा। वह उस जूते की तलाश में परेशान होकर चिल्लाता था और रोता था तथा तमाशा बन्द कराना चाहता था कि मुझको उतार दो, लेकिन तमाशा करनेवाला नहीं सुनता था और न सुन ही सकता था। वह तमाशा बन्द भी नहीं कर सकता था और चक्कर को रोकना भी चाहे तो जबतक खत्म न हो जावे, कैसे बन्द हो सकता था। दूसरे तमाशाई नाखुश हो जाते।

सो अल्प समझ में यह आया कि यही दुनियां का हाल है। हमको अख्तयार है कि झूला झूलें या न झूलें, फिर चाहे जिस सवारी पर बैठने का अख्तयार है। लेकिन बैठने के बाद तमाशा वक्त पर ही खत्म होगा। यह भी अपने अख्तयार में है कि तमाशे का लुत्फ उठावें, चाहे रोकर, चाहे परेशान होकर या अपना तमाशा दूसरों को दिखाकर। गुरु यहां मिस्ल तमाशावाले के समझा जा सकता है। अगर उसके वचनों में प्रीति-प्रतीति न हो तो कुछ नहीं हो सकता। इसलिये प्रीति प्रतीति बहुत जरूरी है।

गुरु पर प्रीति और प्रतीति की पहचान यह है कि वह सर्वगुणसंपन्न और सर्व समर्थ प्रतीत हो। अगर कोई बात ऐसी मालूम हो जो खराब असर करने लायक मालूम हो तो यह समझना चाहिये कि हमको इस बात

की शिक्षा दी जा रही है कि ऐसा न करना चाहिये। इसीतरह पर गुरु संग में जिन लोगों के व्यवहार और बिचार पसंद न आवे, उनसे भी यही सबक लेना चाहिये और भगवान से प्रार्थना करनी चाहिये कि हम में यह बातें कभी पैदा न हों।

लैलारा व चश्म मजनू बायदीद

लैला को मजनू की दृष्टि से देखना चाहिये। इसी तरह अपने गुरु को भी पूरी भक्ति की दृष्टि से देखना चाहिये। भक्त को गुरु की हर एक अदा, चालढाल, बोलचाल, उठक बैठक व्यवहार बर्ताव में एक अजब सुहावनापन और खूब सूरती नजर आनी चाहिये जो कहने सुनने में नहीं आती। जो पग-पग पर और बात-बात पर अपनी बुद्धि से जांचपड़ताल और तौलनाप करता है और भावताव करके सौदा करता है, वह बनिया है, भक्त श्रेणी में नहीं आता है। प्रेमी का तो यह हाल होता है–

सौदे के लिये बरसरे बाजार, हम हाथ उसके बिके,
जिसके खरीददार हुये।

हमारे और प्रभु के बीच जो चीज रुकावट डालनेवाली है, जो हमको उस विश्वपति से जुदा कर रही है, वह क्या है, "मैं पन" या "अहंकार" जिस चीज में 'मैंपन' लगा और हम उसके हो गये और हम उससे बंध गये, तो कुल से दूर हो गये। उसमें भी सबसे कठिन चीज धर्म या मजहब है जिससे छुटकारा पाना बड़े-बड़े ज्ञानी और पंडितों को भी मुश्किल हो जाता है–

जोश में मजहब के इंसा भी कमीना हो गया।
तंगदिली से उन सब का तारीक सीना होगया॥
इस तास्सुब के इलज़म ने खो दिया ईमान को।
एक टुकड़े के लिये तरसा दिया इन्सान को॥

मजहब की असली तारीफ यह है कि जिससे इन्सान अपनी रुहानी (आत्मिक) जिस्मानी (शारीरिक) तरक्की कर सके और ईश्वर प्राप्ति का रास्ता मालूम कर सके। धर्म या मजहब इन्सान को दुनियां में अपने कर्तव्य, धर्म (ड्यूटी) करने के लिये तैयार करता है और आत्मा को शान्ति हासिल

कराता है। दुनिया और दुनियावी जीवन में घृणा पैदा होने के बजाय उसमें दिल लगाने का भाव पैदा करके मजहब इन्सान से मुहब्बत करना सिखाता है, और अपने में इन्द्रियजन्य सुखों की वासना से छुड़ाता है, पापों से घृणा पैदा कराता है और अपने में ईश्वरीय गुण पैदा करने का तरीका बताता है।

लिखना पढ़ना, कहना सुनना यह भी एक तकरीह ही है। दरअसल जबतक गुरुकृपा से भीतर सफाई होकर ज्ञान, दृष्टि नहीं खुलती, तबतक भैंस के आगे बीन बजाना ही है; क्यों कि अगर उपनिषद् और शास्त्र पढ़ने से यह सब कुछ हो जाता तो दुनिया इस वक्त और तरह की होती। अगर थोड़ा बहुत धक्का लगता रहे तो मुमकिन है इससे गुरु चरणों में प्रीति-प्रतीति बढ़े। अगर ऐसा हो तो सब स्वार्थ है वरना सब बेकार। जिस चश्मा (बुद्धि) से हम देखना चाहते हैं, वह खुद ही नाकिस है। फिर आगे सब कार्यवाही गलत होनी ही चाहिये। जाने क्या-क्या लिख गया। इसके पढ़ने में आपको जो तकलीफ व समय खराब हो, उसके लिये माफी चाहता हूँ।

॥ श्री गुरुदेव की जय ॥

बंदा
भवानीशंकर

—भोजन का परिणाम ईश्वर प्राप्ति है। सात्विक भोजन से सात्विक बुद्धि बनती है। सात्विक बुद्धि से विवेक उत्पन्न होता है, जिससे ब्रह्म अथवा श्री भगवान की प्राप्ति की जा सकती है। विवेकी बुद्धि ही धर्म है।

(श्री श्री चच्चा जी सा०)

७.१ (ख) श्री श्री चच्चा जी साहब का पत्र
सौभाग्यकांक्षिणी के नाम

ॐ

जय श्री गुरुदेव

प्रिय सौभाग्यवती,

सुख रहो।

आप मुझको जानती नहीं हैं लेकिन फिर भी मैं आपको बेटी लिख रहा हूं और समझता हूं। इसके लिये आपसे क्षमा प्रार्थना करता हूं।

बड़ों का धर्म है कि लड़कियों के लिये यथासमय उनके धर्मों से यथाविधि अवगत कराते रहें और उन्हें धर्म में लगाते रहें। खासकर ऐसे वक्त में जब कि जीवन में सबसे बड़ा परिवर्तन हुआ हो। लड़की के लिये उसकी शादी उसके जीवन का एक बड़ा परिवर्तन है। वह घर, वह गांव, माता-पिता भाईबन्धु, सखी-सहेलियां जिन्हें वहअपना समझती थी, जिनकेप्यार-दुलार से शरीर अबतक पला था, जो उसके हर जायज अरमान को पूरा करने के लिये दिलोजान से तैयार रहा करते थे, एक तरफ छोड़कर ऐसी जगह जाना पड़ रहा है, जहां उसका कोई परिचित नहीं है। इसके पहले उसे सब प्यार की दृष्टि से देखते थे। अब वह गुलाम होकर देखी जाती है। वह देखती है कि उसकी सास उसके मुकाबले में **अपनी बेटी को अधिक प्यार करती और चाहती है**। उसके हर एक बोलचाल, उठन-बैठन, खान-पान सबकी अरखपरख चारों तरफ से हो रही है और वह मानों इस सारी फौज का मुकाबला करने के लिए लड़ाई के मैदान में आई है। उसके पास क्या सामान है, किस बल पर लड़ाई लड़नी है, **यह है उसका सतीत्व और सदाचार।**

—सतीत्व की प्रशंसा रामायण में अनुसुइया जी ने सीता जी से की है। चार तरह की नारियां बतलाई हैं।

उत्तम के अस बस मनमाहीं, सपनेहु आन पुरुष जग नाहीं।
मध्यम परिपति देखइ कैसे, माता-पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म विचार समझ कुल रहई, सो निकृष्ट तिय श्रुति अस कहई।
बिन अवसर भय से रहजोई, जानहु अधम नारि जग सोई ॥

स्त्री के लिये पतिव्रत ही सब धर्मों का मूल है। जो इसको ठीक-ठीक तरह से निबाहती हैं, बिना योग, तप व धर्म के ही इस संसार से बड़ी ही आसानी से पार हो जाती हैं।

सहज अपावनि नारि, पति सेवत शुभ गति लहई।
जसु गावत श्रुति चारि, अजहुं तुलसिका हरहिं प्रिय ॥

यहां आपके लिये यह उपदेश लिखना इस वास्ते जरूरी मालूम पड़ा कि आपने नई जिन्दगी में कदम रखा है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आप अपना जीवन सीता और सावित्री की तरह बनाने की कोशिश करें। इसलिये मैंने यह समझा कि ये चन्द बातें आपको लिखूं जिससे आपके सदाचार और नया जीवन बनाने में आपको मदद मिले और वह दिन आये कि कहने का मौका मिले इस आशीर्वाद का जो अनुसुइया जी ने सीता जी को दिया है—

सुन सीता तब नाम सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं।
तोहि प्राणप्रिय राम, कहेऊ कथा संसार हित ॥

ऊपर लिखे का यह मतलब है कि पतिव्रत धर्म की कितनी महिमा है और स्त्रियों के लिये कितना कल्याणकारी है और कितनी सुगमता से यह दुनियां उससे बनती है और परलोक भी बनता है, यह समझ में आ जाना चाहिये।

अपने पूर्व कर्मों के अनुसार हमको जो वर और घर मिला है, उससे सन्तुष्ट रहना और ईश्वर को धन्यवाद देना, सबसे पहली बात होनी चाहिये, क्योंकि यह अब बदली नहीं जा सकती। ईश्वर दयालु और न्यायकारी है। उसने अपनी दया व कृपा से हमको जिन हालतों पर पहुंचाया है व जिन मनुष्यों से मिलाया है वह हमारे कर्मों के फल को

कम से कम सूली को कांटा करके दिया है, और हमारे अच्छे कर्मों का ज़्यादा से ज़्यादा नतीजा है । अब दो ही बातें हो सकती है। एक तो यह कि जो आदमी या जो घर हमको मिला है, हमारी रूचि के अनुसार हो तब तो हम खुश और संतुष्ट होंगी। दूसरी बात यह हो सकती है कि यह सब बातें हमारी तबियत के खिलाफ हों या कुछ खिलाफ और कुछ माफिक । तब हमको उन लोगों से नफरत व नाराजगी होगी। ऐसी हालत में हम खुश और राजी रह सकें, उसी की तरकीब विचारना और करना है । पहली बात तो यह कि जिस घर में हम आये हैं जो वर और संबंधी हमको मिले हैं उनसे छुटकारा पाने की कोई तरकीब नहीं है, सिवाय इसके कि अपनी जान पर खेला जाय ? जिसका परिणाम महा दुखदाई और भयंकर होगा और न मालूम कितने जन्मों तक भोगना पड़े क्योंकि गलती से लोग यह समझते हैं कि यह शरीर हमारा है । दरअसल यह शरीर उस मालिक का है और उसने हमको मांगे दिया है । इसलिये किसी की कीमती चीज़ लावें ओर उसे बरबाद करदें, कितनी बेजा बात है । किसी भले आदमी का ऐसा ख्याल सपने में भी नहीं हो सकता और न होना चाहिये। अब दूसरी बात यह रही कि हमको ऐसी हालत में ही रहकर जिन्दगी काटना है। यह दो प्रकार की होगी एक तो प्यार और मुहब्बत की, और दूसरी घृणा और नफरत की। पहली के लिये यह आवश्यक है कि हम अपने आपको पाक व साफ बनावें और यह तभी मुमकिन है जब हम अपने मन को सब तरफ से मोड़कर अपने पतिदेव के कमलरूपी चरणों में लगादें और उनको प्रसन्न और खुश रखने की हमेशा कोशिश करते रहें । और जितने भी उनके सगे सम्बन्धी, मेलमुलाकाती हैं उनकी सेवा, प्रसन्नता के साथ इस ख्याल से करें कि यह सब पतिदेव ही की सेवा और प्रसन्नता के काम हैं। सास को हम इस ख्याल से मां कहते हैं कि वह हमारे सर्वस्व प्राणनाथ की मां हैं। उन्होंने अपना दूध पिलाकर और पालनपोषण करके उनको इतना बड़ा किया है और उनकी दया व कृपा से उनका शरीर इस तन्दुरुस्त हालत में

हमको मिला है। इस प्रकार हमारी सास का हमारे ऊपर बड़ा उपकार है । इसका हमेशा ध्यान रखना जरूरी है। अगर कभी किसी कारण वश वह नाखुश हो जाती हैं, गुस्सा करती हैं या कभी जिस ढंग और तरीके से हम रहना चाहते हैं, उसे नापसंद करती हैं, तो इसकी वजह से हमको नाखुश न होना चाहिये। बल्कि उस बड़े उपकार की बात का ख्याल करके, इन तुच्छ बातों को टालते रहना चाहिये। अब इसी तरह हर एक सम्बन्धी के साथ अपना शुद्ध विचार रखना चाहिये और इस तरह की कोशिश करते रहना चाहिये कि हमेशा सेवा करने का भाव हमारे अन्दर पैदा हो और इस तरह की कोशिश करते रहना चाहिये कि अपना जीवन ही इस तरह का शुद्ध, पवित्र और मुहब्बत से भरा हुआ हो, कि हमारी तरफ किसी को बुरे व नफरत भरे विचार से देखने की हिम्मत ही न पड़े और हमारी सेवा और प्यार का **जोर इस कदर हो कि हमारे पास रहने वाले, इर्दगिर्द के रहने वाले सब इसी से ऐसे प्रभावित हो जांय कि उनका जीवन भी पाक शुद्ध व प्यारा बनने लगे।** हमारा घर स्वर्गधाम बनजाय। सब लोग एक दूसरे का भला चाहने वाले बन जांय। यह ताकत बेटी आप में हैं। अपने आपको कमजोर न समझों। एक पतिव्रता सब कुछ कर सकती है। इसकी मिसाल भारत वर्ष में बहुत ज़्यादा तादाद में मौजूद है। भारत की नारियों ने जो अद्भुत काम अपने चरित्रबल से किये हैं, इतिहास के पढ़ने वालों से छिपे नहीं हैं। बेटी तू मेरी प्यारी बेटी तू सीता सावित्री पार्वती अनुसूइया आदि की सन्तान हो। आप में वे सब ताकतें मौजूद हैं, जो आपके पूर्वजों में थीं। सिर्फ फर्क इतना है कि वह आपके मन मन्दिर की गहरी कोठरी में बन्द पड़ी हैं और अज्ञान का ताला पड़ा है । इस पत्र को बार-बार पढ़ने से ज्ञान का पर्दा खुल जायगा। बहुत मुमकिन है कि ईश्वर की दया व कृपा से और आपके सतीत्व के तपबल से अज्ञान का पर्दा हटकर इन शक्तियों का विकास होने लगे । इस तरह से जब आपको अनुभव होने लगे तो दिनोदिन बढ़ाकर अपने में जिस हद तक चाहो इन सब गुणों को बढ़ा सकती हो और

कामयाब हो सकती हो । सिर्फ ईश्वर पर भरोसा, गुरुजनों की बात पर विश्वास और हिम्मत से काम करने की जरूरत है। फिर दुनियाँ में ऐसी कोई बात नहीं जिसको हिन्दू नारी न कर सकती हो । मजमून कुछ लम्बा होता जा रहा है, इसलिये मुख्तसिर में थोड़ी-सी बातें लिखते हैं जिससे जीवन में विकास करने की शक्ति आपको प्राप्त हो सके। अगर इनमें किसी बात को समझना चाहो तो कृपा करके लिखना। ईश्वर व गुरु कृपा से जो कुछ भी सेवा हम कर सकते हैं, करेंगे और सदा करते रहेंगे। इससे ज्यादा खुशी का और कोई मौका नहीं हो सकता कि भारतमाता की एक सुपुत्री पूर्व विख्यात नारियों की तरह बनने के लिये कोशिश करे और हम किसी तरह उसकी सहायता कर सकें।

१— हमेशा यह समझना चाहिये कि ईश्वर भला है और दयालु, कृपालु व न्यायकारी है व हम उसकी प्यारी बेटी हैं।

२— हम जिन हालात में जिन व्यक्तियों के साथ रखे गये हैं, वह सिर्फ हमारी ही भलाई और कल्याण के लिये, हमारे जीवन के विकास के लिये, ईश्वर ने दया व कृपा करके किया है । मतलब यह है कि हमारा परिवार एक मदरसा है और हमें विद्यार्थी की तरह ईश्वर ने भेजा है

३— इसमें हमारा इम्तहान होगा और हमारा कुव्यवहार व सुव्यवहार ही पास फेल करेगा और हमारी हारजीत का भी फैसला होगा।

४— ईश्वर हमारे कर्मों को ही देखेगा और उसीका ही फल देगा।

५— हम भले ईश्वर की सतान हैं, हमें भला होना चाहिये।

६— हम दुनियां में मेल मुहब्बत फैलाने आये हैं, नफरत या घृणा नहीं। हमारा काम जोड़ना है तोड़ना नहीं।

लेकिन यह सब बातें कमजोर नहीं कर सकती । इन कामों के करने के लिये बड़ी शक्ति और मजबूत दिमाग की जरूरत है । इसलिये सबसे पहले इन बातों को करते रहना चाहिये—

१— अपने शरीर को पुष्ट बनाना चाहिये । जो कुछ ईश्वर ने हमको खाने-पीने की सामग्री दी है, उसको प्रसन्नचित्त से ईश्वर का प्रसाद

समझकर उसी की याद में बनाना और उसी की याद में खाना चाहिये। (०)

२— अपने शरीर की काफी सफाई, हिफाजत और निगरानी रखनी चाहिये, जो स्त्री अपने शरीर को साफ, तन्दुरुस्त, शुद्ध व पवित्र नहीं रख सकती, वह दीन और दुनिया में कभी काम करने लायक नहीं हो सकती। न पति उससे खुश रहेगा न ईश्वर खुश होगा और न दुनियां ही का कोई काम कर सकेगी।

३— अपने मन को हमेशा खुश व प्रसन्न रखना चाहिये। मन खुश कैसे रहेगा, जब उसमें अपने प्रियतम का हर समय वास होगा और प्रियतम की छबि मन में बनाये रखने की आदत पड़ जायेगी। * इसको धीरे-धीरे करना चाहिये—

प्रीतम छबि नयन बसी पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहमनि लखि, आपु पथिक फिर जाय।

---

(०) भोजन बनाने से पहले भगवान् का ध्यान करना चाहिये और सकल्प करना चाहिये कि हे प्रभु हम आपका महाप्रसाद बनाने जा रहे हैं। आपका ध्यान बना रहे और यह महाप्रसाद हमारे परिवार को आपकी अनन्य भक्ति प्राप्त करने का साधन बने। मनमें पवित्र विचार आते रहें। 'रामनाम' या ॐ का जाप चलता रहे या मानस, गीता का पाठ चलता रहे। इसके लिये मानस एवं गीता के अंश कंठस्थ कर लेने चाहिये। यदि किसी प्रकार मनमें कुविचार, क्रोध या तनाव पैदा हो तो तुरन्त भोजन बन्द करके बाहर आ जाना चाहिये तथा हाथ मुँह धोकर स्वस्थ होकर पुनः भोजन बनाना चाहिये। अस्वस्थ मनसे बना भोजन विष हो जाता है।

* इस स्थिति में प्रियतम के मन की बात अपने मन में आने लगती है। 'प्रिय हिय की सिय जाननहारी', स्थिति बन जाती है। फिर औरों के मन की बात भी स्पष्ट होने लगती है और तदनुकूल बिना कहे सेवा करने से घर स्वर्ग बन जाता है।

जिसने अपने मनमन्दिर में अपने भगवान् इष्टदेव को विराजमान कर लिया है उसका कर्तव्य ही हो जाता है कि वहां पर सुगन्धित और सुन्दर-सुन्दर पकवान व फूल आदि (विचार) ले जाय और उससे पूजा करे। वह गुस्सा, नफरत, अड़न, कुड़न वगैरह बुरे-बुरे विचार, दुर्गन्धित ख्यालात को वहां कैसे प्रवेश करने देगा। क्या कोई पुजारिन ठाकुर जी पर प्याजलहसन और गन्दी चीजें चढ़ाना पसन्द करेगी ? मेरे ख्याल में अगर राक्षसी न होगी तो हरगिज नहीं करेगी । यह बुरे विचार, गुस्सा वगैरह जो गन्दी चीजें हैं, इन पर हर भली सती को निगरानी रखना चाहिये कि ऐसी खराब चीजें मन मन्दिर में प्रवेश न करें। (इनका सीधा प्रभाव पति पर पड़ता है और पति की आयु क्षीण होती है) जिसकी ऐसी धारणा बन जाय, क्या उससे उम्मीद की जाय कि कभी ऐसी बुरी बातें मन में आने देगी और हर हाल में प्रसन्न और खुश रहने का प्रयत्न न करेगी।

बस, जो कुछ लिखा उसको पढ़ना, विचार करना, समझना और पसन्द आवे तो अपना जीवन उसके अनुसार बनाने की कोशिश करना।

एक ही दिन में सब बातें नहीं आ सकती। लेकिन थोड़ा-थोड़ा भी परिवर्तन होने लगे तो बहुत है। बूंद-बूंद से ही इतना बड़ा समुद्र भरता है। धीरे-धीरे काम करने से सब बन जाता है। ईश्वर का भरोसा लेकर काम शुरू कर देना चाहिये। जब मन भूल कर जाय तो उसके लिये मन में ग्लानि पैदा करना चाहिये, और ईश्वर से प्रार्थना करना चाहिये। इसी तरह से निरखपरख कर ईश्वर का भरोसा लेकर चलें। ईश्वर आपका कल्याण करे, यही इस तुच्छ दास की प्रार्थना है।

आपका दास,

भवानीशंकर

भवानीशंकर सत्संग आश्रम, चन्द्रनगर उरई

टीप:— हमारे मन में अपने आप से बातें होती रहती हैं। यदि हम अपने प्रियतम से या इष्टदेव से इन बातों को करने लगें तो उनके मन की बातें हमें ज्ञात होने लगेंगी। यह अभ्यास करना चाहिये।

पाती आधा मिलन है

श्री श्री चच्चाजी सा० के हस्तलेख में ३ पत्र

श्री श्री गुरुदेव के अपने हाथ के लिखे पत्र सुखद एवं उल्लासजनक हैं। उनकी प्रयोग की हुई अन्य वस्तुओं की भांति ये पत्र प्रेमीजनों के लिए प्रिय, प्रेरक और पूजा की वस्तु हैं। उनके पावन कर-कमलों से स्पर्श की हुई वस्तु उनके आशीर्वाद और प्रसाद रूप होकर हमारे साधन, शंका समाधान, समस्या के निदान और उनके पवित्र प्रेम के अनुदान में कितना योग देती है और हमारे आत्मिक, मानसिक और शारीरिक साद-प्रसाद के लिये कैसा वरदान सिद्ध होती है, यह अनुभव सभी प्रेमीजनो को श्री श्री गुरुदेव के पत्र प्राप्त कर हुए हैं। ये पत्र भी यही रूप लें, ऐसी उनकी दया व कृपा हो।

टीप: व्याकरणाचार्यों से क्षमा याचना सहित यदि पत्र की व्याख्या **'पतित का त्राण करने वाले'** मान लें तो, प्रस्तुत प्रसंग की अनुकूल विवेचना भी हो जायेगी।

७-१-ग-१ श्री श्री चच्चाजी सा० के हस्तलेख में हिन्दी में लिखा पत्र

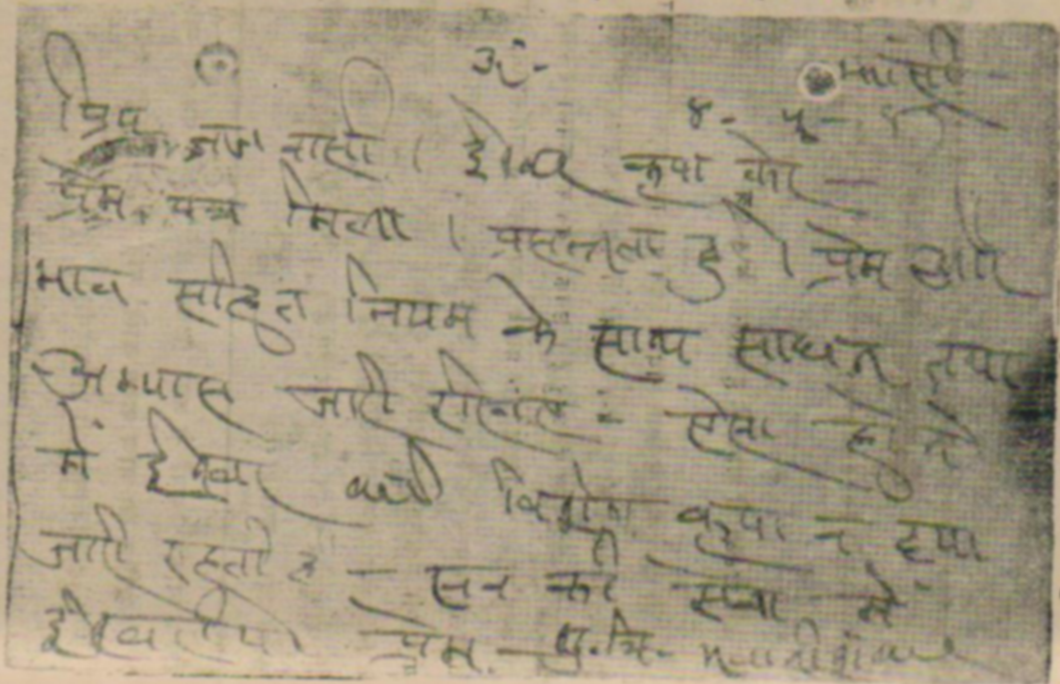

७-१-ग-२ श्री श्री चच्चाजी सा० के हस्तलेख में हिन्दी में लिखा दूसरा पत्र

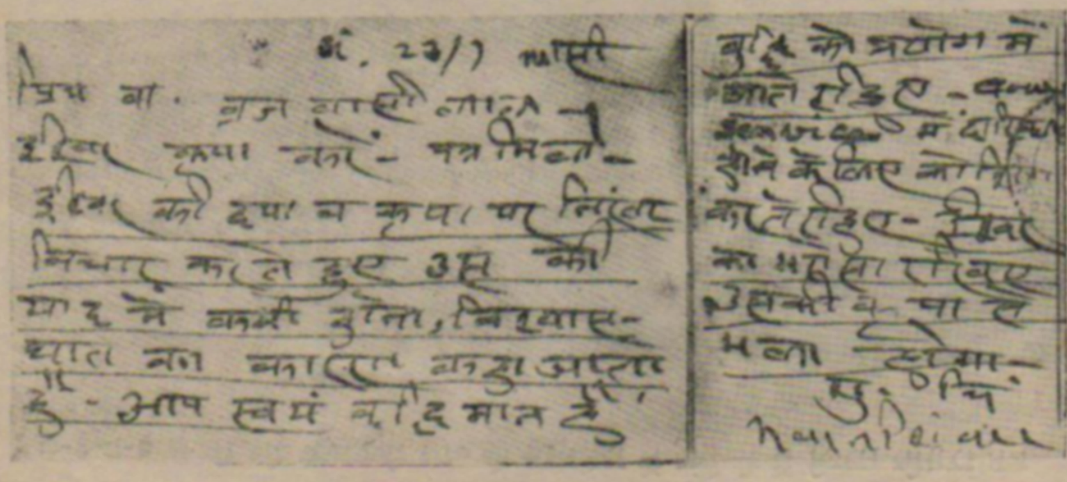

७-१-ग-३ श्री श्री चच्चाजी सा० के हस्तलेख में अंग्रेजी में लिखा तीसरा पत्र

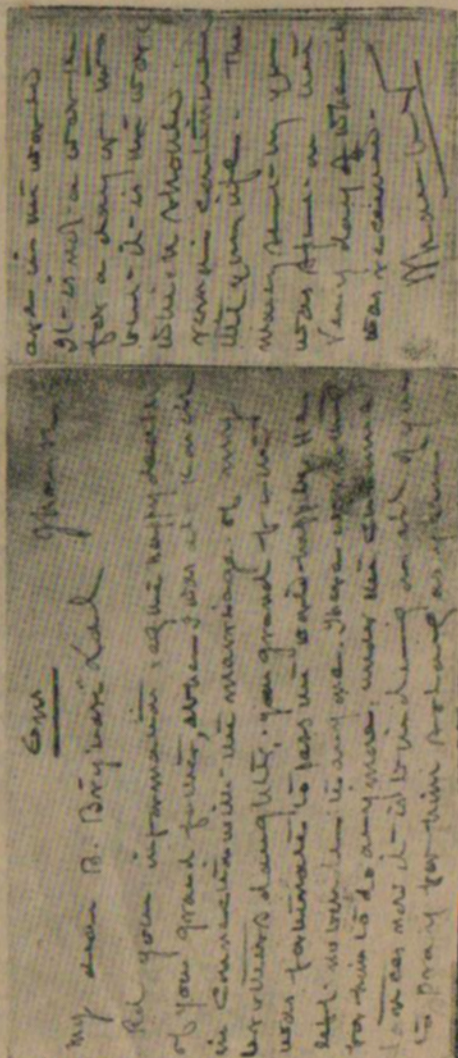

७.२ श्री श्री चच्चाजी सा० (श्री श्री महात्मा भवानीशंकरजी) की जन्मकुण्डली †

श्री शुभ संवत् १९४८ शाके १८१३ कार्तिकमासे शुभे शुक्ले पक्षे पञ्चम्याम् भृगुवासरे १८/०१ मूल नक्षत्रे ११/०१ तदुपरि पूर्वाषाढ़ाभे शुल योगे ७/०२ तदुपरि धृतियोगे तात्कालिके बालवकरणे एवम् पञ्चाङ्कशुद्धौ तत्र श्रीमार्त्तण्डमण्डलोदयाज्जन्मेष्टम् ३४/१५ श्रीसूर्यः ६/२१ लग्नम् २/४ मिथुनलग्नोदये श्रीमद्भगवद्विष्णुचरणानुरागिणां श्रीचित्रगुप्तवंशकुलभूषणानाम् श्रीमतां रामदयालजी श्रीवास्तव गृहे पुत्रो जातः। स देवद्विजप्रसादात् चिरायुर्भूयात् ।

जन्म—६ नवम्बर १८९१ ई० शुक्रवार को रात्रि ८ बजकर १२ मिनट पर जन्म स्थान—जालौन (उ०प्र०)।

† १—श्री श्री चच्चाजी सा० के भतीजे श्री कामेश्वरदयाल श्रीवास्तव एडवोकेट उरई से साभार प्राप्त।

२—इस जन्मपत्र का ज्योतिष शास्त्रीय अध्ययन व परीक्षण ख्यातिनाम पण्डित एवं लोकप्रिय जनसेवक श्रद्धेय श्री बालमुकुन्द जी शास्त्री के सुपुत्र ज्योतिर्विद् पण्डित रवीन्द्र त्रिपाठी ने किया है तथा सही पाया है। उनके हम हृदय से आभारी हैं।

७.३ श्री श्री चच्चाजी सा० के प्रिय गीत भजन आदि

अपने गुरुदेव के प्रिय गीत भजन, भोजन आदि की जानकारी, इन वस्तुओं के अपने सामने आने पर उनकी याद दिला देती है। यह सहज साधन का सुन्दर साधन है।

श्री श्री चच्चाजी सा० को मैंने एकबार कड़ुये चिरायते के टुकड़े सुपाड़ी के टुकड़ों की भांति खाते देखा था। पूछने पर उन्होंने कहा, सुना है, कड़ुआ चिरायता बहुत कड़ुआ होता है, देख रहा हूं कि कितना कड़ुआ होता है।

वास्तविकता यह है कि वह महापुरुष रुचि-अरुचि, प्रिय-अप्रिय इन सबसे ऊपर उठ चुके थे। उनकी प्रियता एवं रुचिता का अभीष्ट मात्र इतना था कि उनके भक्त उनकी तथाकथित प्रिय एवं रुचि कर वस्तु को प्रस्तुत कर स्वयं प्रसन्न हों, संतुष्ट हों तथा अपना प्रेम जाग्रत कर सकें। भाव के भूखे भगवान की रुचिता व प्रियता भक्त के भाव में ही निहित होती है।

७.३.१ प्रिय गीत भजन

> प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह पहले वर्णाश्रम धर्म के अनुसार काम करे, उसके पश्चात् श्री भगवान् की उपासना करे।
>
> —श्री श्री चच्चाजी सा०

घर का दिया जलाकर मंदिर में तुम जलाना

घर का दिया जलाकर मन्दिर में तुम जुलाना

(१) क्या बदल गया है, दुनिया का कारखाना।
हर चीज है नुमाइश, सौदा है इक जमाना ॥
पूजा नुमाइशी है, सेवा नुमाइशी है।
ईश्वर के साथ छल है, इस छल का क्या ठिकाना ॥
घर में हो घुप अंधेरा, मन्दिर में रोशनी हो।
ऐ मेरे दोस्त यारो, ऐसा गजब न ढाना ॥ घर का दिया० ॥

(२) घर है तुम्हारा तीरथ, सब तीर्थों से बढ़कर।
दुनियां का कोई तीरथ, इसके नहीं बराबर ॥
प्रयाग और काशी, गंगा हैं याकि जमुना।
सब हैं उसी के अन्दर, कोई नहीं है बाहर ॥
मेरी सुनो अजीजो कहता हूं बात सच्ची।
गर यात्रा है करनी, कीजै यहीं से उठकर ॥ घर का दिया० ॥

(३) यह धर्म की है भूमि, यां ध्यान का मजा है।
यहां जल है ऐसा निर्मल, अस्नान का मजा है ॥
तुम यहां पढ़ो पढ़ाओ, तुम यां सुनो सुनाओ।
यहां शास्त्र का है इस्जां, और ज्ञान का मजा है ॥
क्यों तीर्थों में तुम हो, यों मारे-मारे फिरते।
घर कर्म की जगह है, यहां दान का मजा है ॥ घर का दिया० ॥

(४) सब देवियां है इस्जां, सब देवता हैं इस्जां।
जितने ऋषि मुनि हैं इनके मकां हैं इस्जां ॥
दर्शन जहां में जैसे ऐसे कहीं नहीं हैं।
है इष्टदेव इस्जां, कुल देवियां हैं इस्जां।
मिलता है आदमी -यहां, अधिकारियों से हरदम ॥
गर दान देना चाहो, देश और क्षमा है इस्जां ॥ घर का दिया.

(५) बूढ़े पिता को ईश्वर, समझा करो तुम अपना।
वह शिव है और विष्णु, बस एक वह है ब्रह्मा॥
वह राम की मूरत, और कृष्णजी की सूरत।
तुम जान और दिल से, करना उसी की सेवा॥
सब देवताओं से वह, है बढ़कर मर्तबे में।
मन्दिर में जाओ पीछे, पहिले हो उसकी पूजा॥ घर का दिया०॥

(६) बूढ़ी तुम्हारी माता, सब देवियों की देवी।
बस दुरस्त ही समझना, सीता है राजरानी॥
बाहर से आओ घर में, तो पाँव उसके पूजो।
जब जाओ घर से बाहर, तो लो दुआयें उसकी॥
पूजा में सबसे बढ़कर, माता का पूजना है।
जिसने कि उसको पूजा, देवी उसी ने पूजी॥घर का दिया.॥

(७) हैं विश्व देव घर में बूढ़े बुजुर्ग सारे।
वह जान और दिलसे, तुमको रहे पियारे॥
घर में ऋषि बहुत हैं, घर में मुनि बहुत हैं।
वह रिश्तेदार हैं और, भाई बहिन तुम्हारे॥
दर्शन करो तो उनके, सेवा करो तो उनकी।
एहसान उनके किसने सर से भला उतारे॥ घर का दिया०॥

(८) घर है तुम्हारा मन्दिर, है उसमें लक्ष्मी भी।
आओ तुम्हे बता दूं, पत्नी है वह तुम्हारी॥
ऐसा काम न करना, जिससे कि वह हो नाखुश।
इज्जत से उसको रखना, वह है महान देवी॥
बातें करो तो मीठी, बोलो तो उससे हंसकर।
वह घर की लक्ष्मी की,पूजा बहुत है अच्छी॥ घर कादिया॥

[९] घर की जो लड़कियां है, वह देवियां हैं सारी।
और देवियां भी कैसी, जान और दिल से प्यारी॥
उनको चढ़ावे लाकर, ए दोस्तो चढ़ाओ।

कपड़े चढ़ाओ अच्छे, गहने चढ़ाओ भारी।
घर की जो देवियां है, जब तक की वह नाखुश॥
बाहर की देवियां कब, खुश हो सकें तुम्हारी॥ घर का दिया०॥

[१०] लड़के हैं जितने घर में वह सब बिहारीजी हैं।
सब में अवध बिहारी, मूरत कृष्ण की है।
नाज उनके तुम उठाओ, उनको सदा मनाओ॥
वह खुश अगर हैं तुमसे, खुश देवता सभी हैं।
मेले इन्हें दिखाओ, जलसा में साथ लाओ॥
यह ब्रज और अवध से आवाजें आ रही हैं॥घर का दिया.॥

[११] तीरथ तुम्हारा घर है, और सब गरीब भाई।
तीरथ के है निवासी, कुछ कीजिए भलाई॥
दान उनको खूब देना, उनकी दुआयें लेना।
हो खर्च दान में जो, अच्छी है वह कमाई॥
जब ध्यान देके मैंने, ऐ दोस्तों सुना है।
बस यह सलाह दिलकश, है गोशजा में आई॥ घर का दिया॥

[१२] एहसान नौकरों पर,और दोस्तों पर करना।
दम महर और वफ़ा का ऌ लो निहार भरना॥
यह सब भी ऐ अजीजो, तीरथ के है निवासी।
इनको भी पूजना तुम तीरथ से जब गुजरना॥
इनके भी हक है तुम पर, तुम दो इन्हें बराबर।
पण्डे तुम्हें डरायें, तो भूलकर न डरना॥ घर का दिया०॥

[१३[समझो न उसको घर तुम,तीरथ है याकि मदिर।
है वास देवियों का, और देवताओं का घर॥
अधिकारी और निवासी मिलते यहां बहुत हैं।
इस यात्रा से कोई, है यात्रा न बढ़कर।
दर्शन के भी मजे हैं और दान के भी इस्जा।
यह कौल 'महर'का है,तुम नक्श करलो दिलपर॥ घर का दिया.

—सन्त महर

[“सदाचार पत्रिका से संकलित एवं उद्धृत”]

श्री गुरु वन्दना

भगवान तुम्हारी जय होवे, गुरुदेव तुम्हारी जय होवे ।
हो तुम्ही एक आश्रय दाता, तुम्ही रक्षक बंधु पिता माता ॥
तुम बिन राह कौन पाता, तुमसे ही जीव अभय हो जाता ।
तुम परम तत्व के ज्ञाता हो, दुर्गति में सुगति विधाता हो ॥
तुम दिव्य प्रकृति निर्माता हो, कुसमय तुमसे सुखमय होवे ।
दुखियों के सुखकारक तुम हो, अधमों के उद्धारक तुम हो ॥
भवसागर के तारक तुम हो, तुम से सौभाग्य उदय होवे ।
पशु में मानवता लाते तुम, मानव को देव बनाते तुम ॥
वह योग विधान सिखाते तुम, जिनसे पापों का क्षय होवे ।
कल्याण शरण में आते ही दुख हारी दर्शन पाते ही ॥
पथदर्शक तुम्हे बनाते ही आनन्द लाभ अतिशय होवे ।
धृति सुकृति सुमति मिलती तुमसे, कीरति शुभगति मिलती तुमसे॥
तप त्याग विरति मिलती तुमसे, अति सुदंर सदय हृदय होवे ।
मैं पन सब तुम में खो जावे, अन्तर का मल सब धो जावे ॥
जीवन अमृत मय हो जावे, चेतना का तुम्हीं में लय हो जावे ॥
ऐसा अब दे शो ज्ञान प्रभो कुछ रह नजाय अभिमान प्रभो ॥
बस रहे तुम्हारा ध्यान प्रभो यह पथिक प्रेम तुममय होवे ॥

माला

मैं प्रभु को माला पहनाऊं ।
पुलक–पुलक निज रोम–रोम को, फूला फूल बनाऊं ॥
श्रद्धा की शुचि पंखुड़िया हों, प्रेम भक्ति की लाली ।
स्वांस सुरभि हो राम नाम की मधुपावलि मतवाली ॥
स्मृतियों की पावन डोरी हो, आसू के हों मोती ।
मेरा तन मन सब सोता हो, जगती भी हो सोती ॥
निर्जन में एकान्त विपिन में, माला सुभग बनाऊं ।
मेरे प्रभु मेरे सन्मुख हों मैं माला बन जाऊं ॥

७.३.२ श्री श्री चच्चा जी सा० की दिनचर्या प्रियता

७.३.२.१ प्रिय उच्चार

हे गुरुदेव तुम्हारी जय होवे
श्रीराम सीताराम जयराम जयजयराम
रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम

७.३,२.२ प्रिय दोहे चौपाई

- मन्त्र महामनि विषय बिआल के ।
मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥
- सीम कि चांपि सकइ कोउ तासू ।
बड़ रखबार रमापति जासू ॥
- उमा जे रामचरनरत, बिगत काम मद क्रोध ।
निज प्रभुमय देखहिं जगत, केहि सन करहिं बिरोध ॥
- जड़ चेतन जग जीव जित सकल राममय जानि ।
बदउं सबके पदकमल, सदा जोरि जुग पानि ॥
- अब प्रभु कृपा करहु एहि भाँती सब तजि भजन करउं दिन राती ।
- बंदऊं गुरु पद कंज कृपा सिधुनर रूपहरि ।
महा मोह तम पुंज जासु बचन रविकर निकर
- मोर दास कहाइ नर आसा, करइ तौ कहहु कहा बिसवासा ।

७.३.२.३ सत्संग के प्रारम्भ में पाठ्य ग्रंथ-(अनुक्रम में पठनीय)

गीता, विनयपत्रिका, रामायण, पल्टूदास की वाणी, गांधीजी की आत्मकथा

सत्संग सामाप्ति पर कीर्तन [जालौन के महन्तजी, नारायणदास जी द्वारा]

हे कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे

हे नाथ नारायण वासुदेव

गोविन्द मेरी यह प्रार्थना है,

भूलूं न मैं नाम कभी तुम्हारा, गोविन्द दामोदर माधवेति। हे कृष्ण

निष्काम होकर दिन रात गाऊँ हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥

देहान्तकाले तुम सामने हो, गोविन्द दामोदर माधवेति

मुरली बजाते मन को चुराते,

गाता यही नाम तन नाथ त्यागूं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ॥

७.३.२.४ प्रिय पत्रिकायें–

National Herlad, Amrit Bazar Petrika

कल्याण, अखण्ड ज्योति, सावन

७.३.२.५ प्रिय भोजन- शुद्ध, सात्विक, मसाले कम (केवल हल्दी नमक)

दाल–छिलके वाली हरी मूंग की

सब्जी– हरी सब्जी–पालक मैंथी, बथुआ (बथुआ का रायता)

आलू टमाटर, बेसन की कढ़ी

चटनी–अदरक की चटनी

[अदरक-।-कालानमक-।-धनिया/पोदीना]

– टमाटर की चटनी

[उबले टमाटर छीलकर पीसकर, अदरक, नमक, चीनी डालकर]

[अदरक का अधिक प्रयोग था]

दलिया–भुनेहुये गेहूं का दलिया

रोटी–२ चपाती [गेहूं की]

पक्के खाने में– पूड़ी [बेसन का आटा मिला] खीर व

खिरनी [चावल भूनकर पीसकर दूध में] व शकरकंद की खीर

नमकीन– उर्द की दाल की कचौड़ी, पापड़

तली हुई कचरिया [छोटी फूटों को सुखाकर बनाई जाने वाली]

मिठाई– बताश फैनी, बूंदी के लड्डू, खुरी [खुरमी]

नाश्ता– दो बादाम घिसकर दूध में गरमकर नशास्ता, संतरा या मौसमी का रस–गर्मियों में

सायं– १ गिलास दूध व १ चम्मच च्यवनप्राश

७.३.२.६

प्रिय रंग– हरा, गेरुआ

प्रिय पोशाक– पजामा, टोपी, बंद गले का लम्बा कोट,

धोती कुरता सदरी ,पम्प शू

७.३.२.७

दिनचर्या– प्रातः ५ बजे उठना, स्नान करना, घूमने जाना, नाश्ता,

पूजा सत्संग प्रातः ७ बजे गरमी में, ८ बजे जाड़ों में

प्रातः ९ बजे खाना

१२ बजे से १ बजे तक आराम, २ बजे से मिलना, ५½ सायं भोजन

पत्रों का अविलम्ब उत्तर लिखना, लिखवाना

६ बजे पूजा

शयन– रात्रि ९ बजे, दूध व च्यवनप्राश सोते समय

–दवाइयां–लवण भास्कर चूर्ण, बसंतकुसमाकर, स्पोलैक्स

*कनकनाड़ी की बायोकैमिक दवायें

अरहर की दाल मिलाकर दलिया, दवा के तौर पर जुकाम में ।

टीप · ७.३,२ की सूचनायें डा० कृष्ण जी से प्राप्त हुई है।

* फादरमूलर होम्यो पूअर डिसपेन्सरी, कनकनाड़ी, मंगलूर(दक्षिण भारत)

(च) एक शिष्य एक गुरु (†)

जिस प्रकार एक स्त्री के लिए एक पुरुष-एक विशेष पुरुष पति होता है, उसी प्रकार एक शिष्य का एक विशेष गुरु होता है। जैसे पति प्राप्ति के लिए संस्कार माने जाते हैं, उसी प्रकार गुरु के लिए भी संस्कार होते हैं। जिस शिष्य का जिस विशेष गुरु से कल्याण होना होता है जिसके संस्कार होते हैं, उसी के पास वह अन्ततोगत्वा पहुँच जाता है। श्री श्री चच्चा जी सा० ने कहा है-

स्त्री और शिष्य का धर्म एकसा है। जैसे स्त्री अपने पतिव्रत धर्म से ही ईश्वर को पा सकती है, उसी प्रकार सेवक भी अपने सेवा धर्म से ईश्वर अर्थात् अपने स्वामी को पा सकता है। (नरहरि उपदेश: वासना और संस्कार)

इसलिए ईश्वर से यही प्रार्थना करनी चाहिये कि मुझे मेरे गुरु तक पहुचावें, उनके दर्शन करावें, उनके श्रीचरणों में सच्चा प्रेम देवें।

हिन्दू शास्त्रों में दीक्षा व विवाह के लिए प्रयुक्त मंत्रों की शब्दावली एक-सी है। गुरुदीक्षा में बृहस्पति का उल्लेख होता है तथा विवाह में प्रजापति का। दीक्षा मन्त्र- ॐ मम् व्रते ते हृदयम् दधामि मम् चित्तमनु-चित्तम् ते अस्तु मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्टवा नियुक्तमह्यम्

पाणिग्रहणमंत्र- ॐ मम व्रते हृदयम् दधामि चित्तमनुचित्तम् ते अस्तु, मम् वाचमेकमना जुषुस्व प्रजापतिष्टवा नियुक्तमह्यम्।

—मेरे व्रतों को तुम्हारा हृदय धारण करे। मेरे चित्त के अनुकूल तुम्हारा चित्त सदा रहे। मेरी वाणी को तुम एकाग्रचित्त होकर सुना करो क्योंकि आचार्य बृहस्पति ने/प्रजापति ब्रह्मा ने, तुमको मेरे लिए नियुक्त किया है।

† कृपया गुरु खोज २.१.१ का सदर्भ लें और उसके साथ इसको पढ़ें।

(तसव्वुर शेख)

श्री गुरु ध्यान-साधना

श्री गुरुदेव के मुखारविन्द का ध्यान करना और अपने ऊपर धारण करना एक उत्तम साधन माना जाता है। श्री श्री चच्चा जी सा० ने ज्ञानेश्वरी के इस प्रसंग को विशेपरूप सेअपनाया है और गुरुसेवा, गुरुपूजा, सगुण गुरुसेवा, निर्गुण गुरुसेवा शीर्षकों के अन्तर्गत अपनी पुस्तक 'गृहस्थ धर्म और सदाचार' में विस्तार से दिया है। उसके कुछ अंश यहां अवलोकनार्थ प्रस्तुत हैं—

"...ज्ञान के चबूतरे पर आत्मानन्द के मन्दिर में अपने गुरुदेव की मूर्ति स्थापित करके वह ध्यान रूपी अमृत की धार चढ़ाता है............ कभी-कभी वह ऐसा अनुभव करता है कि मैं एक ऐसे पंछी का बच्चा हूँ जिसके चोंच और पंख अभीतक अच्छी तरह नहीं खुले हैं और मेरी माता मेरे गुरुदेव हैं। मैं उनकी चोंच से चारा लेता हूँ। कभी-कभी वह कल्पना करता है कि गुरुदेव नौका हैं और मैं उन्हीं के आश्रय पड़ा हूँ। तात्पर्य यह कि जिसप्रकार ज्वार भाटे पर समुद्र में बराबर लहरें उठा करती हैं उसीप्रकार ध्यान की परम्परा भी बराबर चलती रहती है। सारांश यह है कि इसप्रकार वह निरन्तर अपने ध्यान में गुरुदेव की पूजा का अनुभव करता है।... उनके वस्त्र, अलंकार, चन्दन आदि मैं ही बनूंगा, मैं ही उनका रसोइया बनकर अन्न महानैवेद्य लगाऊंगा और मैं ही अपनी आत्मा से उनकी आरती उतारूंगा। मैं ही उनका बिस्तर बिछाउंगा और मैं ही उनके पैर दबाउंगा ".

टीप : १—तसव्वुरशेख के सम्बन्ध में अपने बुजुर्गों के विचार इस प्रकार हैं- मुर्शिद और गुरु की मिसाली शक्ल, उनकी हरकात, सकनात (रहनी-सहनी) इखलाक और आदतों की तरफ दिल में नजर रखना, याददास्त कायम रखना, उसका ध्यान बांधना जायज है।

चित्त को एकाग्र करने के लिये यह अमल ऐसा पुर तासीर है कि जादू की तरह अपना करिश्मा दिखाता है, बल्कि और रास्तों से यह रास्ता करीब है और काम सहल कर देता है ।

२—गाजियाबाद भण्डारा १५-१०-८८ में इसीप्रकार के उपदेश थे- हर समय अपने आपको श्री गुरुदेव के समीप, सम्मुख ख्याल करते हुये, उनकी कोई सेवा करने, उनसे बातें करने, उनके पलंग के पास बैठे होने आदि का ख्याल करते हुये उनकी हुजूरी में रहे। कोई अन्य विचार आवे तो उनके समक्ष रखकर जल्द से जल्द तय करदे और उससे मुक्त हो जावे तथा पुनः हुजूरी में आजाय।

३—श्रीश्री चच्चा जी सा० से एक सूत्र मिला- 'गुरुदेव को गुरुदेव **की आँखों से देखना चाहिये'**। अपनी आँखें की सीमायें हैं ससीम हैं। वे गुरुदेव के असीम स्वरूप के दर्शन कैसे कर सकती है। कृष्ण भगवान ने ऐसी ही परिस्थिति में अर्जुन से कहा 'दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्' । गुरुदेव के स्वरूप में अवस्थित होकर ही गुरुदेव के दर्शन कर सकते हैं। अपने रूप में रहकर अपने मायामोह में ही लिप्त रहेंगे और परमार्थ के स्थान में स्वार्थ की ही याचना कर सकेंगे । गुरुध्यान साधना इस दृष्टि से साधना का प्रारम्भ भी है, अन्त तो है ही। हर समय हुजूरी में रहना ही साधना है। श्वास-प्रश्वास पर किसी शब्द 'ॐ' 'राम' का अभ्यास करना इस संदर्भ में सहायक होता है ।

४-'ज्ञानसिन्धु' में इसीप्रकार का विवरण दिया गया है ।

'ज्ञानसिन्धु' में पराशिव और कार्तिकेय के बीच संवाद है। यह अध्याय इसप्रकार शुरू होता है (ज्ञानसिन्धु कन्नड़ की साधन सम्बन्धी सुप्रसिद्ध कृति है। इसके रचयिता श्री चिदानन्द अवधूत हुये हैं। यह संदर्भ "चितशक्ति विलास" गुरुदेव सिद्धपीठ, गणेशपुरी (महाराष्ट्र) सं० १९८३ पृ० ५३-५५ में है।)

"अथ श्री गुरुध्यानम्- परशिव उवाचः हे परम गुरुभक्त शिरोमणि कार्तिकेय, श्री गुरुध्यान महान है। सिद्धजनों की परम गोपनीय साधना है। गुरुध्यान योग और मोक्ष दोनों का दाता है। इतना ही नहीं, ध्यान करने वाला ध्यान करते-करते अन्त में परतर आनन्दमय, परतेजस्वरूप परमगुरु ही बन जाता है। हे कार्तिकेय, गुरु एक आकार रूप में दीखने पर भी आदि अन्त रहित है । उनकी अलक्ष गति है। गुरु तत्व आदि तत्व है, जो परमानन्द होकर रहता है, जो स्पन्द का मूल कारण परम निःस्पन्द है, जहां वृत्ति की समाप्ति है, आवागमन की गति जहाँ गतिहीन बन जाती है, स्थावर जंगमात्मक जगत को जहां आश्रय मिलता है, जो ओंकार का लक्ष्य है, सिद्ध पुरुषों का जहां निवास है, हे गुरुभक्त प्रिय षडानन, सगुणनिर्गुण का विवाद जहां निर्विवाद होकर मिट जाताहै । जिस स्थान पर एक गुरु बिना और कोई नहीं जासकता है और जाने से फिर आना नहीं होता है। जो देवों के देवता हैं, ऐसे सभी के आश्रय, सभी की गति, सर्वान्तरात्मा श्री गुरुदेव हैं। वे समय-समय में मानव रूप में बाहर और गुरुरूप में अन्दर रहकर शिष्यों को अनुग्रह-निग्रह से अपना रूप और अपनी गति देते हैं। ऐसी चिन्मय गुरुमूर्ति का ध्यान परम फलदायक है।

श्री गुरु ही सोऽहम् रूप हैं। ये चराचर है, पिण्ड ब्रह्माण्ड रूप है। वे ही मानव आकार लेकर अपनी प्रजा को अपनी संतान को, अपने आत्मियों, अपने प्यारे भक्तजनों को शक्ति प्रदान करने हेतु गुरु रूप में आते हैं। वे गुरु सिद्धमार्ग के प्रवर्तक होते हैं। उनकी गतिमति, रीतिनीति बड़ी विलक्षण होती है । वे गुरुजन न पुरुष होते हैं न नारी। वे गुरु-गुरु ही हैं।

ऐसे श्री गुरु का अपने अंगप्रत्यंग में उन्हीं की भावना करके ध्यान करो। हे गुरुभक्त, यह महापूजा है। शांत होकर चित्त विकारों को हटाकर चित्त को निरालंब बनाओ। चित्त के चिन्तनस्वरूप सब दोष निकाल दो। श्री गुरु के सामने बैठो। प्रथम सर्वदेवमय, सर्वमंत्रमय, सर्वसन्तमय

सर्व ऋषिमुनिरूपधारी उन परमगुरु को नमस्कार करो। सब दिशाओं में उनको नमस्कार करो। कहो- "हे गुरुदेव! आप सर्वमय हैं। आप ही विश्वरूप हैं। आप जिस-जिस रूप में जैसे-जैसे हैं वैसे-वैसे मेरे आपको अनन्त प्रणाम हैं। ऐसे मन ही मन प्रणाम करके, हे षडानन तुम्हारे अनन्त आगे-पीछे, ऊपर–नीचे, सर्व दिशा में गुरु तत्व ही है, ऐसा जानकर गुरु का ध्यान करो। तदनन्तर अपना शरीर गुरुमय बनाओ। याद रखो जैसे वस्त्र में तन्तु ओतप्रोत है, तन्तु-तन्तु में वस्त्र है, वैसे **ही तुम में गुरु और गुरु में तुम हो।** इस दृष्टि से दोनों को एक रूप देखो। मृत्तिका से मटका भिन्न नहीं होता, वैसे ही तुमसे तुम्हारा गुरु भिन्न नहीं है। ऐसा जानकर पूर्ण शान्ति से आसनस्थ होकर अपने सिर को हाथ से स्पर्श करके वहाँ श्री गुरु के सिर का भाव करो। फिर कपाल में, दोनों आंखों में, दोनों कानों से, नाक, जिह्वा, गले और दोनों स्कन्धों में अपने हाथ से स्पर्श करते हुये ऐसी भावना करो कि ये सब गुरु के हैं। इनमें गुरु हैं। ऐसे ही छाती, हृदय, पेट, पीठ, कमर, जंघा घुटने, पिंडली, पाद, इन सभी अंगों को स्पर्श करते-करते गुरु के हैं, गुरु के हैं, इनमें गुरु हैं, ऐसी धारणा करो। अन्त में पांव की अँगुलियों को भी गुरु की हैं, इस भाव से स्पर्श करो। साथ ही ऊपर से नीचे आते हुये मन में 'गुरु ॐ' 'गुरु ॐ' 'गुरु ॐ' ऐसे जपते रहो। सब छोटे-बड़े अंगों को स्पर्श करते हुये 'गुरु ॐ' का ही उच्चारण करो। हे गुरु प्रिय कार्तिकेय तदनन्तर नीचे पांव की अँगुलियों से लेकर ऊपर तक उसी विधि से प्रत्येक अँग का स्पर्श करते हुये 'गुरु ॐ' का जाप करते जाओ। अन्त में सिर को गुरुॐ' कहते हुये स्पर्श कर स्वय ही गुरु, स्वयं ही मंत्र, स्वय ही सब कुछ, गुरु में तुम, तुम में गुरु, ऐसी भावना धारण कर ध्यान करो। नित्यप्रति इसी विधि से ध्यान करो। 'मुझ में गुरु' 'गुरु में मैं' ऐसा समझने में अणुमात्र भी संदेह मत करो। ध्यान करते हुये "गुरु ॐ" जपते-जपते अपने आपको भूल जाओ।

तदन्नतर परमेश्वर कहते हैं "हे स्वामी कार्तिकेय, तुम स्नान करते समय भी अपने अंगप्रत्यंगों में गुरुमूर्ति का निवास जानकर स्नान करो। भोजन के समय हृदयस्थ श्री गुरुदेव ही मेरे भोजन का भोग लेते हैं, ऐसा समझ कर श्री गुरु–अर्पित भोजन करो, तथा अपने सभी कर्म मंगलमय श्री गुरु को अर्पित करके गुरु दाता, गुरु भोक्ता, गुरु भजता, गुरु ही सर्व यज्ञ, इसतरह सर्व गुरु रूप होकर 'गुरु ॐ' 'गुरु ॐ' 'गुरु ॐ' जपते रहो। यही महागुरुपूजा है। पुनः परशिव बोले हे षडमुख! गुरुभजन से शिष्य तुरन्त गुरुरूप बनता है। जो जिसका भजन, ध्यान, पूजन करता है, वह उसी के अनुरूप बनता है। गुरुध्यान, गुरु पूजा गुरुमन्त्र स्मरण, रोम-रोम में गुरुधारणा –ऐसी सगुणोपासना शिष्य के हृदय को तुरन्त पलट देती है।

स्वामी मुक्तानन्द के इस विषय से सम्बन्धित अन्य अनुसंगी प्रसंग भी उल्लेखनीय हैं।

ध्यान क्या है "निर्विषयं मनः" मन का मनरहित, चिन्तन रहित प्रज्ञा स्फूर्ति रहित, मन का अमन बनना ही ध्यान है।

ध्यानपूर्व पूजन ध्यान के लिये बैठने का विशेष क्रम था, चारों दिशाओं को गुरुरूप और पराशक्ति रूप समझकर नमस्कार करता। जिस आसन पर बैठता उसको शक्तिपीठ और गुरुपीठ समझकर बैठता। ऐसे ही अपने आसनसे जब उठता तो स्पर्श करके नमस्कार करता।

ध्यान से पूर्व आह्वान सभी समर्थ सिद्ध गुरु महानुभावो का **आह्वान** जिन्होंने श्री गुरुचरणोपासना द्वारा गुरुप्रसाद रूप शिवपद प्राप्त किया है, ऐसे जो पहले हो गये हैं, आगे जो होंगें वे सब सिद्धजन मेरा रक्षण करें, मुझे शक्ति प्रदान करें।

गुरु चित्रको जड़ भावना से नहीं देखना चाहिये। जैसे उन परम पुरुष के सान्निध्य में भय मर्यादा, व पवित्र भाव रहता था, वैसे ही कमरे में जहां उनका फोटो लगा हो, मर्यादा रखना। कभी फोटो के सामने पैर फैलाकर न बैठना।

गुरु प्रेम के लिये अपने से प्रेम करना अपने को मलिन, दु:खमय, आनन्द रहित, अपवित्र जैसे पाठ पढ़ाकर मत सताओ। अपने मन को

प्रेम से परिपूर्ण बनाकर आत्मा की ओर उन्मुख करो । हृदय में जब-जब वासनारहित प्रेमका उदय होता है,तब तब मन में अपूर्व शान्ति की अनुभूति होती है। प्रथम तुम अपने से प्रेम करो, फिर अड़ोस-पड़ोस से, तदनन्तर सारे जगत से । यही भक्ति है। इसी में सारे साधन अपने आप आजाते हैं।

गुरु अभिमन्त्रण (ध्यानपूर्व महापूजा) -हे गुरुदेव तू मेरे पूर्व, तू मेरे पश्चिम, त मेरे उत्तर और दक्षिण में है। सद्गुरु तू मेरे ऊपर और तू मेरे नीचे है। हे प्यारे श्री गुरुदेव तू मेरी आंख में, तू मेरे कान में, तू मेरी नाक में, तू मेरे मुख मे है। हे कृपादाता सद्गुरुदेव तू कण्ठ में, तू बाहु मे, तू छाती में, तू पीठ में, पेट में, हे गुरु पिता तू मेरी जाँघ में, तू मेरे पांव में, तू मेरे चरणों में। हे बाबा तू मुझमें मैं तुझ में। और तेरे-मेरे में रूप आकार का जो भेद है, उसमें भी तू ही है।

गुरु कृपा व्यर्थ नहीं जाती- किसी को साधना की अनुभूति जल्दी हो जाती है किसी को देर से । अनुभव न मिलने पर भी साधक को अपनी साधना का पूर्ण प्रेम से अनुष्ठान करते रहना चाहिये। गुरु कृपा कभी व्यर्थ नहीं जाती। अतएव एक आशा, एक विश्वास एक बल गुरु का लेकर रहो। सहज ही पूर्ण बनोगे।

आपको खुलने में एक क्षण- आप संकोच न करें कि आपको कुछ प्राप्ति नहीं हुई । आपको खुलने में एक क्षण ही लगेगा। आपमें पूर्ण भक्ति पूर्ण श्रद्धा, दृढ़ आस्तिक्य बुद्धि, सर्व समर्पण भाव होते ही कृपा में देर नही लगेगी। चिन्ता न करो, कि मेरे साधन का क्या होगा,क्या फल मिलेगा? सिंह का बच्चा सिंह होता हैं। आप सिद्ध सद्गुरु के मानस पुत्र है। आप सिद्ध होंगें ।

दुः संगति से बचें- तुम्हारा अन्तर विकसित किया शक्ति गुरु ही है, इसलिए दुःसग से बचने का दृढ़ व्रत लो। दूध का समुद्र ही क्यों न हो, उसको खट्टे रस की एक बूंद ही बिगाड़ देगी।

सर्वसिद्धि का मूल गुरु प्रसन्नता- हृदय से गुरु का सम्मान करो, हृदय से उनकी पूजा करो, हृदय से उनसे प्रेम करो, सर्व सिद्धयां आकर तुम्हारे पास पानी भरने लगेंगीं। गुरु तब संतुष्ट होता है जब शिष्य पूर्णत्व प्राप्त करता है, जब शिष्य उनमें मिलकर गुरु ही बन जाता है। उनसे केवल प्रेम करो, उनसे मोक्ष तक की मांग न करो, पूर्ण निष्काम बनो, तभी वह अमृतमय प्रेम प्राप्त होगा।

७.४ अन्य संदर्भ

(सत्यकथा पत्रिका से साभार सदभित)

(ज) गीता और रामायण पाठ का, एक आधुनिक संदर्भ

'सत्यकथा' और 'सच्ची कहानियां' जैसी पत्र पत्रिकायें ही आज गीता-रामायण बन गई हैं। निम्नलिखित सदर्भ को हम देखें और गीता रामायण के पाठ के महत्व को हृदयंगम करें।

संदर्भ : सत्यकथा पत्रिका : अंक : अप्रैल १९८१ पृ० ११६ से १३१ तथा १८६ से १८८।

कहानी : कमला का उद्धार : लेखक : श्री जनार्दन मिश्र

-बुरहानपुर (म० प्र०) के राजपुरा डोलियावाड़ा के श्री एम०एल० श्रीवास्तव की अपने जीवन की सत्य कथा।

-१९३५ में श्रीवास्तव का विवाह बड़नगर निवासी लाला धनपतराम की सुपुत्री सुश्री कमला देवी से हुआ। श्रीमती कमलादेवी का साथ ३-४ वर्ष रहा। उनका देहावसन हो गया। माता पिता के बहुत आग्रह करने पर १९४० में दूसरा विवाह कस्बाताल (जावरा स्टेट) की सुश्री शान्ति देवी से हुआ। श्रीशान्ति देवी से एक पुत्र हुआ। जब वह लड़का ५-६ माह का था, तब से हर रात को १२ बजे श्रीमती शान्तिदेवी अचानक बेहोश हो जाती और प्रातः अपने आप होश में आजाती। पता चला कि उनकी पहली पत्नी कमलादेवी की प्रेतात्मा आती है और वह छोड़ना नहीं चाहती।

श्री श्रीवास्तव जी ने सयाने और जादूटोना करने वालों की शरण ली किन्तु कोई लाभ न हुआ, उल्टा प्रेतात्मा का प्रकोप और कष्ट बढ़ा। श्रीमती कमलादेवी की प्रेतात्मा श्रीवास्तव से प्रेम करती थी। इसकारण आती थी। श्री श्रीवास्तव को भी लगा कि ताबीज और गण्डों का प्रयोग करके उसे कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिये। उन्होंने प्रयोग के तौर पर गीता रामायण का पाठ श्रीमती शान्तीदेवी को सुनाना प्रारम्भ किया। प्रेतात्मा पाठ सुनने आने लगी किन्तु रामायण के पाठ के समय वह गायब हो जाती। श्री श्रीवास्तव जी ने इसका कारण पूछा कि रामायण क्यों नहीं सुनतीं। उत्तर मिला- 'उस समय तो यहां हनुमान जी स्वयं विराजते हैं। भला मैं कैसे आ सकती हूं।'

•• कुछ दिनों पश्चात् रामायण सुनने भी आने लगी। "अब तो तुम रामायण भी सुनने लगी हो। क्या तुम्हें अब हनुमान जी का भय नहीं लगता?" "नहीं गीता सुनने से मेरी आत्मा स्वच्छ एवं निर्मल हो चुकी है। अब तो मैं हनुमान जी के समीप ही बैठकर रामायण सुना करती हूं। मुझे अब किसी का भय नही लगता।" ··· •• पाठ के अन्तिम दिन का दृश्य विशेष रूप से विस्मयकारी था। उसका वर्णन इसप्रकार दिया गया है–

अगले दिन गीता का १८ वां अध्याय पढ़ा जाने वाला था। कमला की आत्मा उस दिन विदा होने वाली थी, यह बात सब को ज्ञात हो चुकी थी। उस दिन सुबह श्रीवास्तव जी के घर भारी भीड़ लगने लगी थी ••• · रामायण का पाठसमाप्त करके श्रीवास्तवजी ने गीता का पाठ आरभ किया। सभी की दृष्टि शान्ती देवी पर टिकी हुई थी, जिनके शरीर पर नित्य की भांति उस समय कमला की आत्मा का अधिकार था। शान्तीदेवी एकटक छत की ओर निहारने लगीं। जब श्रीवास्तव जी ने १८ वें अध्याय का अन्तिम श्लोक पढ़ा, तो वह एकदम चीख उठीं, "वह देखो! आकाश से विमान उतर रहा है लो, वह आगया। मैं जा रही हूं।" इस प्रकार वह प्रेत योनि से मुक्त हो गई।

ॐ नमः शंकराय ॐ नमः शंकराय ॐ नमः शंकराय ॐ नमः शंकराय

ॐ नमः शंकराय

चित्रावली

ॐ नमः शंकराय

ॐ नमः शंकराय ॐ नमः शंकराय ॐ नमः शंकराय ॐ नमः शंकराय

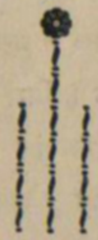

अपने इष्टदेव के चित्र उनकी विभिन्न चेतन स्वरूप छबियों को प्रतिबिम्बित करते हैं। मनभावनी किसी एक छबि में रमने या उस छबि को अपने ऊपर धारण करने एवं उतारने की दिव्य स्थिति में इष्टदेव का ज्ञान, शक्ति एवं शुभ सहज ही साधक के अंग-प्रत्यंग एवं समस्त कोषाणुओं में उतरने और उनको ओत-प्रोत करने लगता है।

इसप्रकार छबि साधना या चित्र-आराधना की जा सकती है। ईश्वर कृपा करें, यह सहज साधना सुलभ हो।

श्री शङ्कर अष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥
निराकारमोंकार मूलं तुरीयं । गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं । गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरं ॥
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगंगा । लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं । प्रियं शंकर सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचंड प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं । अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं । भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी । प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं । भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं । प्रसीद प्रभो सर्व भूताधिवासं ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां । नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं । प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

(७.१०७ छंद)

प्रभुदर्शन

जो सच्चे सुख की चाहना रखता है उसे दीन, अनाथ
दुखित और पीड़ित प्राणियों की निःस्वार्थ सेवा
करते हुए उनके हृदय मन्दिर में
अपने इष्टदेव श्री भगवान् के
दर्शन करते रहना
चाहिए ।

[श्री श्री बच्चाजी सा०]

[अवसर पाकर भी जो मनुष्य निर्धन, रोगी, अनाथ और दुखी प्राणी की यथाशक्ति सहायता नहीं करता है वह उन्हीं की गति को पाता है]

[श्री श्री बच्चाजी सा०]

सर्वे

भवन्तु

सुखिनः

सर्वे

सन्तु

निरामयः

सर्वे

भद्राणि

पश्यन्तु

मा कश्चिद्

दुख

भाग्भवेत्

सब का भला हो !

प्रथम (झाँकी का) चित्र (१९३९-४०)

सेवा पंजिका चित्र

मंगलमय कल्यानमय, अभिमत फल दातार (१.२०३)

योगाभ्यास छवि

शरद शोभा

कस न दीन पर द्रवहु उमावर। दारुन बिपति हरन करुणाकर।
(वि० प० ७)

अखण्ड समाधि

संकर सहज सरूपु सम्हारा ।
लागि समाधि अखंड अपारा ।

खुले नेत्रों अभ्यास

(सदर्भ- ३-३-१)

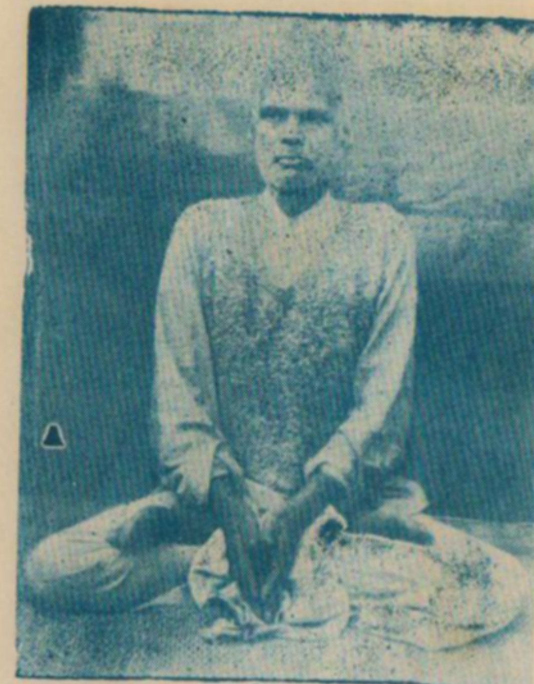

आँख न मूँदों, कान न रूधों,
तनिक कष्ट नहि धारों ।
खुले नैन पहिचानों प्रियतम,
हँसि-हँसि रूप निहारों ।

चरण कमल वंदन

चरण कमल बंदऊँ गुरु राई ।

इ ति
श्री शङ्कर संदेशम्

पदाम्बुज भक्ति याचना

प्रसीद मे
नमामि ते
पदाम्बुज भक्ति
देहि मे

शंकर दीनदयाल अब,
मोहि पर होउ कृपाल ।

तव माया बस जीव जड़ संतत फिरइ भुलान ।
तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु कृपासिंधु भगवान ।।

□
सहयोग रूप भेंट १०/-

मुद्रक : श्री शक्ति प्रिन्टर्स, उरई